भूमिका

भारत जन ज्ञान विज्ञान जत्था की तैयारी के सिलसिले में मध्य प्रदेश विज्ञान सभा द्वारा **राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद्** के सहयोग से एक राष्ट्रीय विज्ञान नाटक लेखन कार्यशाला का आयोजन 25 मई से 31 मई, 1992 के बीच किया गया जिसमें पर्यावरण, स्वास्थ्य, साक्षरता, उपयुक्त प्रौद्योगिकी, अंधविश्वास विरोध तथा वैज्ञानिक सोच पर नाटकों के आरंभिक ड्राफ्ट रखे गए। **भारत** जन ज्ञान विज्ञान जत्था की राष्ट्रीय आयोजन परिषद् ने इन में से कुछ महत्वपूर्ण और सामयिक नाटकों का मुद्रण यह सोच कर किया है कि देश भर में चल रहे जत्थों से पूर्व और बाद में विभिन्न कार्यशालाओं और नुक्कड़ नाटक ग्रुपों में कार्यरत कलाकारों और कार्यकर्ताओं को मदद मिल सके। नाटकों में क्षेत्र, भाषा व स्थानीय ज़रूरतों व परिस्थितियों के अनुसार तब्दीलियां की जा सकती हैं। यह मानकर चला जाना चाहिए कि अधिकांश नाटक प्रारंभिक अवस्था में हैं और इन्हें और अधिक दिलचस्प व अर्थपूर्ण बनाया जा सकता है। कुछ विज्ञान गीतों को भी इस पुस्तक में शामिल किया गया है।

मध्य प्रदेश विज्ञान सभा इन नाटकों को संजोकर रखने के लिए बधाई की पात्र है।

राष्ट्रीय आयोजन परिषद्
भारत जन ज्ञान विज्ञान जत्था

विषय सूची

मैं नदी आंसू भरी	1
पानी रे पानी तेरा रंग कैसा	8
शंकर को गुस्सा क्यों आता है	12
शोर	17
करे मच्छर कहाये भूत	23
तुम खूनी हो/रक्तदान	29
चलो खाना खायें	35
खत	39
एक हाथ खीरा, नौ हाथ बीज	42
चितावर	47
तुम भी तो कर सकते हो	54
पहेलियां	61
एक प्रश्न	66
सीखो दोस्तो सीखो	67
घर की तलाश	69
विसर्जन	78
लड़की पढ़कर क्या करेगी ?	83
कथा ये मंगलपुर की	89
यक्ष प्रश्न	96
मुक्ति का मार्ग	102
बिरादरी बाहर	112
फंस गया बुधिया चक्कर में	119
कविताएं व गीत	129

मैं नदी आंसू भरी

[थाली बजाते, घंटी और शंखध्वनि मुंह से करते कोरस का नाचते-गाते प्रवेश।]

रहिमन पानी राखिये
बिन पानी सब सून
पानी गए न ऊबरे
मोती मानुष चून

(दोहे के बाद तालबद्ध मंथर गति से, नदी का प्रवेश। लहराती, थिरकती नदी के फैले हुए हाथों में 4-6 हल्के नीले फीते लटके हुए हैं। नदी के स्थल मध्य में आते ही कोरस के कलाकार उसके आसपास अलग-अलग स्थानों पर नहाते, तैरते, सूर्य नमस्कार करते हैं।)

कलाकार

एक : *(कांपते हुए)* हर हर गंगे, गंगे, गंगे

दो : जय नर्मदे, जय नर्मदे, जय नर्मदे

तीन, चार,

पांच : जय सरसती माता मैया जय सरसती माता
तुममें नित ही नहावत, तुमको निसि दिन ध्यावत

(कोरस के नहाकर निकलने के साथ ही पेड़ झूमता हुआ आता है।)

पेड़ : *(झूमते हुए)* नदी मैया, पांय लागी।

नदी : जुग-जुग जियो। कैसा है रे वृक्षराज ?

पेड़ : बस सब आपकी कृपा है। आपके लाड़ दुलार से देखो कैसा हट्टा-कट्टा, हरा-भरा हो गया हूं।

नदी : जीता रह वृक्षराज। तेरा वंश बढ़े। फले-फूले और लोगों को छांह दे, फल दे, फूल दे, शुद्ध हवा दे।

(एक चिड़िया उड़कर वृक्ष के आस-पास फुदकती है, जल पीती है।)

चिड़िया : ओ नदी माई, पांय लागी।

नदी : जुग-जुग जी बिटिया *(हंसते हुए)* चिड़िया रानी बड़ी सयानी
भर-भर दोना पीती पानी

चिड़िया : नदी भैया, आप में जल, जल से धरती, धरती से पेड़, पेड़ से पवन, पवन से पर्यावरण।

नदी : और तू कहां, ये बता।

चिड़िया : *(हंसते हुए)* मैं पेड़ दादा के कंधे पर *(गाती है)*

पेड़ उढ़ौना, पेड़ बिछौना
पेड़ ही पर सो जाना
सुबह से उठके पानी पीना
मीठे-मीठे फल खाना
इधर फुदकना उधर फुदकना
फर्र-फर्र कर उड़ जाना
चूं चूं चूं चूं, चीं चीं चीं चीं
कुछ मीठे बोल सुनाना

नदी : *(हंसते हुए)* वाह। अच्छा बातूनी, जा। काम पड़े हैं ढेरों।

(संगीत। नदी थिरकती बढ़ती है। पेड़ झूमते हुए और चिड़िया उड़ते हुए नाट्य स्थल से बाहर।)

नदी का गीत : चली नदी बह चली
गांव-गांव और शहर-शहर से
चली नदी बह चली
चली नदी बह चली
कलकल-छलछल राग सुनाती
जीवन जल सब को पहुंचाती
चली नदी बह चली

(कोरस मद्धिम हमिंग करता है। जो नदी के स्वागत में

जारी रहेगी। कोरस नदी के बहाव को रेखांकित करता चलता है।)

नदी : मैं नदी। मुझे अपने गंगा कहा, कहा नर्मदा, यमुना कहा। मैं सरस्वती कहलाई, मैं महानदी कहलाई। मुझे पुकारा गोदावरी।

कोरस : कोरस (लयात्मक)---गोदावरी

नदी : मुझे पुकारा कावेरी

कोरस : . . . .कावेरी
नदी मुझे बुलाया---कृष्णा

कोरस : *(लयात्मक)* कृष्णा। हो कृष्णा। *(कोरस की हमिंग)*

नदी : मुझे नाम दिया तुम सबने क्षिप्रा, सतलुज और सोन। मुझे कभी देते थे सम्मान। आज जय कहकर करते हैं अपमान। आज मैं नदी आंसू भरी। मैं कहती अपनी कथा, सुनो ये मेरी व्यथा। मैं थी पावन, तुमने किया अपावन। मैं नदी, आंसू भरी। मैं पवित्र थी, तुमने किया है कलुषित। कैसी-कैसी विपदाओं से मेरा पाला पड़ता, मेरे भीतर नगर गांव का कूड़ा-करकट पड़ता। मैं नदी आंसू भरी।

कोरस : आया नगर, नदी भागे किधर कचरे के ढेर बैठा शहर।

(नाले का प्रवेश भिगड़ैल सांड की तरह, सिर के सामने दोनों हाथों से सूपा पकड़े हुए हैं। नदी बचाव करने की कोशिश करती है सांड आक्रमणकारी मुद्रा में।)

नाला : मैं हूं मोती नाला
मैं हूं आफत का परकाला
मैं हूं नगर-निगम का साला
भैंसा जैसा काला
मैं हूं काले दिल वाला
अरे भई सुनियो लाला, और तू भी सुन रे बाला
मैं आला मोती नाला, मैं हूं मोती नाला।
भरा हुआ है मुझमें मलवा, वा वा वा वा वाह
गांव-शहर में मेरा जलवा

बदबू लिए नदी में जाऊं
नदियों को मैं तिल–तिल खाऊं
मच्छर, मक्खी कूड़ा करकट
कभी रुकूं कभी दौड़ू सरपट
तुम सबने ही मुझको पाला
मैं हूं मोती नाला

(गीत के दौरान नदी को परेशान करता है। कचरा फेंकने का अभिनय, नदी बचने का प्रयास करती है नाला नदी के अलग–अलग हाथों में काले फीते बांधकर जाता है।)

नदी : ऐसे लाखों–करोड़ो नालों ने मेरा जीना हराम कर दिया है। नालियां भी कम नहीं। ये नहीं, कि कहीं और जाएं, मुझमें न समाएं। ओह। डायन का नाम लिया और और वो इधर ही दौड़ी आई।

(नाली का प्रवेश, दो काली स्टिक लिये हैं।)

नाली : मैं हूं नार नवेली नाली
मैं हूं नाले की घर वाली
सभी ने गंदगी डाली
नदी मुझे, [illegible] साली
मैं हू नार नवेली नाली

(नाली तरह–तरह से नदी के कपड़े खींचती है, कभी बाल। नदी हारकर आगे बढ़ती है। नाली का प्रस्थान। नदी का स्थल मध्य में आना। अलग अलग छोर से कोरस आता है। बैलों को नहलाता एक व्यक्ति, कपड़े धोती एक औरत, थूकता, नाक साफ करता व्यक्ति, ट्रक धोता आदमी, मुंडन करवाता, बाल नदी में फेंकता आदमी)

नदी : हे नाथ, मेरी रक्षा करो । पेड़ कट गए, जल सूख रहा है, बारिश कम हो रही है, आबादी बढ़ती जा रही है। काई, जल कुंभी ने मुझे घेर रखा है। *(कोरस से)* आप सब तो मेरी पूजा करते हैं,

हर–हर गंगे, जय नर्मदे कहते हैं।

कोरस : कहते हैं भैया।

नदी : फिर मुझे दूषित क्यों करते हैं?

एक : मैंने तो केवल जानवरों को नहलाया।

दो : मैंने तो इत्तूसा कचरा फेंका था।

तीन : मैंने तो सिर्फ अपने ट्रक को नहलाया।

चार : *(औरत)* मैंने तो बस कपड़े धो डाले।

पांच : मैंने तो सिर्फ मुंडन कराया। कुछ विसर्जित किए बाल, इत्ते से बाल, फिर क्यों ये बवाल।

नदी : आप सभी पढ़े–लिखे हैं ?

कोरस : हां हम पढ़े–लिखें हैं।

नदी : पढ़े–लिखे होकर भी मेरे साथ अनाचार कर रहे हैं। मेरा क्या है जब तक मुझमें जल है, बहूंगी। पर कहे देती हूं जब मैं मर जाऊंगी, तुम भी मरोगे। न नहाने का पानी होगा, न धोने का, न पीने का। एक दिन प्यासे रहकर देखो, क्या हाल होता है। मैं सूख रही हूं। मैं नदी आंसू भरी। ओ पिता, देखो, सभी देखो, वो आया जल्लाद। कारखाने से निकला प्रदूषित कारखनिया।

(कारखनिया घोड़े की तरह भागता, चिंदियों की झालर घुमाता आता है।)

कारखनिया: मैं कारखाने की बदबू और रसायन लिये बेकाम भागता कारखनिया और ये मेरी दुश्मन नदी रानी। ओ नदी रानी, अब मर जाएगी तेरी नानी। कारखाने ने मुझे भेजा है बदबूदार और विषैले पानी के रूप में। मैंने गांव के गांव उजाड़ दिये।

मेरे दोस्त कारखानों ने फ्लोराइड

खूब अधिक मात्रा में नदियों में बहा दिया जिससे दो करोड़ से ज़्यादा लोग बीमार हो गए। हमने चर्म रोग फैलाया। हम ज़हर घोल रहे हैं जल में।

नदी : *(भयभीत होकर)*––देखो, मैं तुम्हारी मददगार हूं। कपड़े की मिलें, चमड़ा उद्योग, दवा की फैक्टरियां जैसे बड़े -बड़े कारखाने मेरे

सहयोग से चल रहे हैं। मुझे दूषित न करो। मुझे चुपचाप यहां से बह जाने दो।

कारखनिया : नदी रानी, तुम बहोगी, मैं भी तुम्हारे संग बहूंगा। मैं तुझमें समाहित होकर मनुष्य जाति को रौंद दूंगा।

नदी : लोगो बचाओ। रक्षा करो। रक्षा करो।

(कारखनिया नदी को दौड़ाता, तंग करता है फिर जाता है)

व्यक्ति एक : कलजुग है कलजुग। अब तो अपनी ही रक्षा कर लो यही बहुत है।

दो : अपन तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता। अपन तो नहातेई नईं।

तीन : *(आश्चर्य से)*--कभी नहीं नहाते ?

दो : नई, नदी में। नदी में नहातेई नई। अपन तो नल वाले हैं। नदी से अपन का क्या वास्ता।

चार : हमने तो हैंड पम्प लगवा लिया हूं। हमारे पड़ोसी ने 100 फुट गहरा खुदवाया तो हमने सोची कि जे तो हैं मूरख। जैसेइ हमने ऐसी सोची, हमने हैंड पंप वाले से कह दिया कि 200 फुट खोद देना। हैंड पंप वाला भी खुश कि हमने कितनी अच्छी सोची। एकदम ठंडा पानी धरती से डायरेक्ट आता है। नदी का काम ही नहीं।

नदी : अरे मेरे पुत्रों, गहराई से सोचा। जल कम हो रहा है। नदी का हो या धरती का। पर्याप्त वर्षा नहीं हो रही है। जंगल कटते जा रहे हैं। 60 से 70 प्रतिशत बीमारियां सिर्फ प्रदूषित पानी से हो रही हैं। अब भी हाथ पर हाथ धरे बैठे रहोगे ?

व्यक्ति एक : ये तो हमारी सरकार को समझना चाहिये।

दो : अपन तो जे जानते हैं कि भगवान ने नदी बनाई, भगवान ने बहाई; इसमें क्या करें माई।

तीन : सफाई हो सकती है बशर्ते कि प्रशासन इसमें रूचि ले।

चार : हमने तो सोची है कि हर घर में हैंड पंप खुद जाए, तो नदी–अदी, पानी–वानी, की झंझट ही दूर हो जाए। कैसी सोची हमने ?

नदी : यही तो गड़बड़ है। आदमी इस बारे में सोचता ही नहीं, जो सोचता है तो करता नहीं। सभी काम सरकार के भरोसे नहीं हो सकते। 70% पीने का पानी प्रदूषित है हिन्दुस्तान में।

तीन : जैसे नदी माई की बात गंभीर है। हमें कुछ करना चाहिये, वरना हमें और हमारी अगली पीढ़ियों को नुकसान हो सकता है।

एक : देखो भाई, एक अकेले से कुछ न होगा, मिलजुलकर ही कुछ हो सकता है।

तीन : *(चौथे से)* आपने कुछ सोची ?

चार : हमने सोची है कि हैंड पंप तो लग ही गया है, अब नदी की सफाई के बारे में भी कुछ सोचूं।

एक : अब सोचना क्या ? अब करना है।

नदी : सभी की ज़िम्मेदारी है कि जल को दूषित होने से बचाएं। क्या आप आज संकल्प लेते हैं।

कोरस : हम संकल्प लेते हैं।

नदी : तो आइये मेरे साथ।

पानी रे पानी तेरा रंग कैसा

[रिकार्ड बजता है]

गंदा जल : सामूहिक डिस्को करते हुये।

स्वच्छ जल : अरे कितनी बदबू है चारों तरफ कैसी गंदगी है छिः कैसा गंदा और घिनौना रूप, रंग लिये हुए हैं यह। दूर हटो छिः छिः

गंदा जल : हूं तो मैं तुम्हारा भाई ही। मुझमें और तुममें क्या अंतर है ? तुम्हारा रूप उज्जवल है, तो तुम सातवें आसमान पर चढ़े हो और मेरा गंदा काला रूप ? क्या मैंने बनाया है ? इसका दोषी तो समाज है। और फिर क्या मैं तुम्हारे जैसा घमंड में फूलकर अकेले ही घूमता फिरता हूं मेरे साथ मेरा पूरा कुटम्ब है। और तुम–तुम तो अकेले हो कोई साथ तक नहीं।

स्वच्छ जल : अच्छा तो तुम सकुटुम्ब घूमते हो। देखूं तो जरा. . . .

गंदा जल : हां, हां क्यों नहीं ! यह है हैजा के कीटाणु सदा मेरे साथ रहते हैं, मैं इनके साथ किसी भी व्यक्ति को दो दिन में धराशायी कर सकता हूं।

स्वच्छ जल : यह तो बड़ा भयानक एवं शक्तिशाली है।

गंदा जल : इतना ही नहीं इनसे मिलो, यह है अतिसार के कीटाणु, मनुष्य को हम दोनों बिल्कुल बेदम कर देते हैं।

स्वच्छ जल : अच्छा, और. . . . . .

गंदा जल : ये हैं पेचिश के कीटाणु, मनुष्य के पेट में मरोड़ पैदा कर उसकी ऐसी हालत बना देते हैं कि मजा आ जाता है हां–हां अट्टाहास करता है।

स्वच्छ जल : बस। बस करो मानव नाश के सिवाय तुम्हारे पास क्या है ? जल तो जीवन है और तुम जीवन देने के बदले जीवन ले लेते हो, धिक्कार है तुम्हें तुम जैसा पानी कौन होगा।

गंदा जल : पापी मैं ! तुम्हें शर्म नहीं आती, एक तो इतना घमंड और ऊपर से मुझे पापी कह रहे हो, बड़े धर्मात्मा बने घूमते हो।

स्वच्छ जल : ऐ, ज्यादा बढ़ चढ़ कर मत बोलो, चलो मानसून दादा से फैसला करवा लेते हैं पता चल जायेगा कौन पापी है, कौन धर्मात्मा।

गंदा जल : हां हां चलो, आज दूध का दूध और पानी का पानी हो जाये।

(मानसून के पास जाते हैं और अपना–अपना पक्ष रखते हुए)

गंदा जल : महोदय, यह मुझे पापी कहता है। अपनी उज्ज्वलता का ढिंढोरा पीट रहा है।

स्वच्छ जल : महोदय, यह गंदा जल लोगों को जीवन देने के बदले लोगों के जीवन को हर रहा है यह पापी है। पापी।

मानसून : शांत–शांत। इसमें गंदे पानी का कोई दोष नहीं है।

स्वच्छ जल : इतना करने पर भी यह दोष मुक्त हैं ?

मानसून : हां, आधुनिक औद्योगिक क्रांति के कारण एवं मानव की स्वार्थता के कारण मेरे मार्ग में अनेक बाधाये आती हैं, जिससे मैं पर्याप्त एवं शुद्ध रूप से धरती तक नहीं पहुंच पाता। जल अशुद्ध होता है और जल के अभाव में गंदगी जाती है। अनेक विषैली गैसों एवं धूल के कणों के कारण जल अशुद्ध होकर ही पृथ्वी पर आता है।

शुद्ध जल : न न, मैं ऐसा नहीं मानता, क्या यह घिनौना रूप केवल इस मानसून के अशुद्ध पानी से ही हो सकता है ?

गंदा जल : *(आंसू बहाता हुआ)* हां भई, आप ठीक कहते हैं मैं भी आप––जैसा उज्जवल होना चाहता हूं, परन्तु यह समाज मुझे इस रूप में नहीं रहने देता। जीवनदान देकर मैं भी परोपकार करना चाहता हूं। परन्तु मनुष्य समाज मुझे मनुष्यघाती बना देता है।

शुद्ध जल : *(आंसू पोंछते हुए)* मैं समझा नहीं।

गंदा जल क्या समझना है। बड़े बड़े कारखानों से निकला गंदा पानी का नाला मेरे उज्जवल रूप को विषैला और कुरूप बनाते हुए क्या आपने नहीं देखा ?

स्वच्छ जल : छिः छिः, वह नाला जिसमें कारखाने के रसायन बहाये जाते हैं, कितने घातक व जहरीले होते हैं।

गंदा जल : हां भई, मेरा दुर्भाग्य यहीं पर नहीं रूकता वातावरण की अशुद्धता, शवों का जल में बहाना, जानवरों व मनुष्यों के नित्य प्रयोग से मेरा यह रूप देखने व उपयोग करने योग्य नहीं रहा। शहर का जल नालों द्वारा मुझ में गिराया जाता है *(सिर थामकर नीचे बैठ जाता है, फिर धीरे–धीरे बेहोश हो जाता है)*

स्वच्छ जल : अरे अरे, ये तो बेहोश हो गया। हाय। मैं क्या करूं। ठीक है मैं डाक्टर को बताने जाता हूं।. . . डा. साहब डा. साहब, जल्दी चलिये मेरा भाई अपने मैले स्वरूप पर पश्चाताप में अनर्गल प्रलाप करता हुआ बेहोश हो गया है, मुझे बड़ी चिंता हो रही है।

डॉ. साहब : घबराइये नहीं चलता हूं। *(सामान उठाकर, चलकर, गंदे जल को देखता है)* ओह। इसे महा भयानक बीमारी हो गई है, इस रोग का नाम है जल प्रदूषण. . . .

स्वच्छ जल : डॉ. साहब कुछ कीजिए इस रोग से इसे बचा लीजिये, बचा लीजिये।

डॉ. साहब : यह इतना आसान नहीं है रोग लगते समय पता नहीं लगता परन्तु स्वच्छ होने में समय लगता है। इस रोग के निदान के लिये नदियों के जल को स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी समाज की है। कारखाने के गंदे नालों को उसके बेकार के विषैले रसायन को नदियों में न बहाया जाये। नदियों के आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखा जाये, नदियों में शवों को न बहाया जाये, खेतों के बांधों को नदियों में न खोला जाये, वनों को न काटा जाये, इन उपायों से जल प्रदूषण रोग दूर किया जा सकता है।

स्वच्छ जल : बस करो, बस करो। मेरा भाई अभी मर रहा है और आप यह भाषण झाड़े जा रहे हैं, कोई ऐसा उपाय बताइये ताकि इसका तुरंत इलाज हो सके और इसे बचा लिया जाये।

डॉ. साहब : हां, फिलहाल अशुद्ध जल को मशीन द्वारा फिल्टर करके अथवा चार घड़ों के माध्यम से फिटकरी के प्रयोग से, लाल दवा के

प्रयोग से शुद्ध कर इसे पीने योग्य एवं कीटाणु रहित किया जा सकता है।

स्वच्छ जल : ओफ्फो। डॉ. साहब ऐसा सरल उपाय बतायें जिससे इसे तुरन्त राहत मिल सके।

डॉ. साहब : पानी को उबाल कर शुद्ध किया जा सकता है। *(डॉ. साहब दवाई की चिट् स्वच्छ जल को पकड़ाकर, सामान उठा कर चले जाते हैं)*

(ट्यूनिंग बजती है)

स्वच्छ जल : ब्लीचिंग पाउडर की शीशी उठाकर नापकर पाउडर डालता है फिर लाल दवा की शीशी उठाकर लाल दवा डालता है तत्पश्चात् मशीन द्वारा फिल्टर करने का अभिनय करता है। *(गुनगुनाता जाता है पानी उबालने का अभिनय करता है)*

क्रमशः कीटाणु चीख–चीख कर भागते हैं धीरे–धीरे काला रंग हटता जाता है और सफेद रंग आता जाता है। गंदा जल होश में आकर उठ खड़ा होता है। दोनों जल हास्य प्रकट करते हैं, स्वच्छ जल के हाथों में हाथ डालकर डिस्को करते हैं। ट्यूनिंग तेज हो जाती है, डिस्को करते–करते वे सब वापस अंदर चले जाते हैं।

शंकर को गुस्सा क्यों आता है ?

(शंकर के गुणों के बारे में एक नाटिका)

(शंकर एक अच्छा, पढ़ा–लिखा, बुद्धिमान व्यक्ति है, गांव में रहता है, उसके गांव के सभी लोगों से अच्छे संबंध हैं, वे उसे पसंद करते हैं उससे प्यार करते हैं वह गांव के लोगों को अक्सर पर्यावरण की सुरक्षा के तरीके बताता है, पर वे उसके सुझावों पर ध्यान नहीं देते। गांव के लोगों के इस व्यवहार पर उसे बहुत दुख होता है। एक दिन वह गुस्सा हो जाता है, और घर के कोने में पड़ी भोंथरी कुल्हाड़ी लेकर गांव के बाहर की ओर निकल पड़ता है और गांव के बाहर के एक पेड़ के पास पहुंचता है और पेड़ पर चढ़ कर डाल के एक सिरे पर बैठ जाता है। वह उसी डाल को काटने लगता है उसी समय कुंदन नाम का अधेड़ व्यक्ति अपनी गर्भवती पत्नी और कई बच्चों के साथ बैलगाड़ी पर आता है वह शंकर को आश्चर्य से देखता है और उससे बात करने लगता है।)

कुंदन : शंकर ये तुम क्या कर रहे हो ?

शंकर : क्या तुम्हें नहीं दिख रहा मैं डाल काट रहा हूं।

कुंदन : हां वो तो साफ दिख रहा है तुम मूर्खों की तरह जिस डाल पर बैठे हो उसे ही काट रहे हो क्या तुम जानते हो कि हाल के पूरी तरह कट जाने से क्या होगा ?

शंकर : *(मुस्कुराते हुए)* हां तुमने ठीक ही समझा है पर तुम भी तो यही कर रहे हो।

कुंदन : मैंने क्या किया है ? मैं तो शहर से आ रहा हूं।

शंकर : तुम शहर क्यों गये थे ?

कुंदन : तुम्हारी मामी की तबियत खराब है वह बीमार पड़ गई थी, उसे दिखाने डॉक्टर के पास गया था।

शंकर : बाप रे। इतने बच्चों के रहते एक और बच्चा ? तुम्हें ये तो चिंता है कि डाल कटने से मैं नीचे गिर जाऊंगा, पर तुम तो बच्चे पैदा कर–कर के पूरे संसार की डाल काट रहे हो ? इतने बड़े परिवार को कैसे चलाओगे ?

कुंदन : हां ये तो मैं भी महसूस करता हूं। लेकिन मैं करूं क्या ?

शंकर : करना क्या है ? ऑपरेशन करा लो।

कुंदन : अभी तक मैं हिचक रहा था लेकिन अब गंभीर समस्या हो गई है मैं कल ही ऑपरेशन के लिये अस्पताल जाऊंगा।

(परिवार के साथ गांव की तरफ जाता है)

(शंकर फिर पेड़ की डाल काटने लगता है इस बीच एक और व्यक्ति जिसका नाम रामसिंह है शहर से गांव की तरफ बैलगाड़ी से आता है जिसमें खाद और कीटनाशक दवाईयां भरी हुई हैं)

रामसिंह : कौन शंकर। ये क्या हो रहा है ?

शंकर : डाल काट रहा हूं तुम्हें दिखता नहीं क्या ?

रामसिंह : उसी डाल को काट रहे हो, जिस पर बैठे हो ? जानते हो जब ये टूटेगी तो क्या होगा ?

शंकर : हां–हां मैं जानता हूं मैं और तुम एक ही काम कर रहे हैं।

रामसिंह : *(सोचते हुये, स्वगत)* मैं, मैं क्या कर रहा हूं ?

शंकर : इस बैलगाड़ी में क्या ले जा रहे हो ?

रामसिंह : खाद और कीटनाशक

शंकर : क्यों ? किसलिये ?

रामसिंह : समझ नहीं आता क्या ? खेतों में डालने के लिये ।

शंकर : हां तुम भी दूसरों का अंधा–नुकरण कर रहे हो ? तुम्हारी दो एकड़ जमीन के लिये इतनी सारी खाद ?

रामसिंह : जितनी अधिक खाद डालूंगा उतनी अधिक फसल मिलेगी। जितनी अधिक दवा डालूंगा उतनी अधिक सुरक्षा मिलेगी।

शंकर : यहीं तो गलती कर रहे हो थोड़ी बहुत खाद और दवाई तो डाली जानी चाहिये लेकिन जानते हो कि बेहिसाब खाद डालने से क्या होगा ? क्या तुमने जमीन की जांच करवाई थी ?

रामसिंह : क्या होगा ? जांच तो मैंने नहीं करवाई।

शंकर : तो ठीक है मक्खी मारने के लिये तलवार का प्रयोग करो, देखना कहीं तुम्हारी नाक ही न कट जावे।

रामसिंह : तुम क्या कह रहे हो मुझे समझ नहीं आ रहा, मुझे क्या करना चाहिये ?

शंकर : ज्यादा से ज्यादा कंपोस्ट का प्रयोग करो, घर के गोबर की खाद का प्रयोग करो। इन दोनों के बीच उचित अवधि का गेप रखें, जैविक खाद का प्रयोग भी कर सकते हो, तभी तुम्हें अच्छी फसल मिलेगी

रामसिंह : सच है। क्या कभी ऐसा हुआ है कि मैंने तुम्हारी अच्छी सलाह नहीं मानी है मैं ऐसा ही करुंगा और जरूरत से ज्यादा खाद को दूसरे लोगों में बांट दूंगा।

शंकर : तो तुम्हें समझ आ गया कि तुम भी जड़े काट रहे थे।

रामसिंह : हां भई हां।

(गांव की ओर जाता है)

(शंकर फिर डाल काटने लगता है। इसी बीच दो मोटर साईकिल सवार गांव से वहां आते हैं और पेड़ के नीचे रुक जाते हैं लक्षमण गाड़ी चला रहा है और मोहन पीछे बैठा है)

लक्षमण/मोहनः *(दोनों एक साथ)* क्यों रे शंकर क्या कर रहा है ?

शंकर : क्या तुम्हे नहीं दिख रहा डाल काट रहा हूं हां–हां, बिल्कुल साफ–साफ दिख रहा है तुम्हारी बुद्धिमानी दिख रही है अगर डाल कट गई तो नीचे आ पड़ोगे और कमर टूट जावेगी। *(मुस्कुराते हुये)* मुझे पता है, लेकिन तुम कहां जा रहे हों ? मोटर साईकिल दिलवाने ले जा रहा हूं शहर में वो किश्तों में मिल रही है। मैंने भी ऐसे ही खरीदी थी !

शंकर : क्या गांव में मोटर साईकिल की जरूरत है ?

मोहन : क्यों नहीं ? हमें रोज इधर–उधर जाना पड़ता है और कभी–कभी शहर भी जाना पड़ता है। अगर मोटर साईकिल होगी तो कितना समय बचेगा ?

शंकर : बात तो ठीक लगती है ? लेकिन हमारा गांव है कितना बड़ा? क्या तुम साईकिल से काम नहीं चला सकते ? और शहर कितनी

बार जाते हो, बस से भी जा सकते हो।

मोहन : मोटर साइकिल चलाने में मजा भी तो आता है।

शंकर : तो उधार ले के मजे उड़ा रहे हो ? जब वापस करना पड़ेगा, तो और मजा आयेगा, जैसा गांव के और लोग उड़ा रहे हैं।

मोहन : तो इसमें गलत क्या है ?

शंकर : उधार लोगे, ब्याज दोगे, रोज पेट्रोल इतना लोगे तो क्या पैसा खर्च नहीं होगा ? और फिर गांव की सड़कों पर मोटर साइकिल चलाना मुश्किल भी है। पर्यावरण प्रदूषित करोगे वो अलग।

मोहन : यार बात तो तुम्हारी ठीक लगती है, गांव में तो साइकिल से काम चल जायेगा, पर शहर कैसे जायेंगे।

शंकर : बस से उसमें 60 लोग इकट्ठे जा सकते हैं अगर 60 लोग मोटर साइकिल खरीदेंगे तो 60 गुना पैसा खर्च होगा और 60 गुना प्रदूषण भी होगा।

मोहन : मेरा आधा जीवन बसों के इंतजार में ही गुज़र जायेगा इसी से बचने के लिए मैं मोटर साइकिल खरीद रहा हूं।

शंकर : अगर बसें समय पर नहीं आ रहीं तो उन्हें समय पर चलवाओ अगर घर में बहुत चूहे हो जायेंगे तो घर में आग लगा दोगे क्या ?

मोहन : तुम ठीक कहते हो। मैं मोटर साइकिल खरीदने के पूरे नुकसान नहीं समझता था, चलो लक्ष्मण वापस चलें।

लक्ष्मण : *(मुड़ते हुए)* जैसा तुम ठीक समझो मुझे लगता है कि मुझसे गलती हो गयी है।

(गांव की ओर जाते हैं)

(गांव में पहले से गये पात्र और अन्य मंच पर आते हैं और पर्यावरण को बचाने का गीत गाते हैं)

(शंकर फिर डाल काटता है)

(मुलायम सिंह शहर से आता है और आकर रुक जाता है उसकी मोटर साइकिल पर प्लास्टिक का सामान लदा है)

मुलायम सिंह : क्यों शंकर, क्या हो रहा है ?

शंकर : दिखता नहीं क्या ? डाल काट रहा हूं।

मुलायम सिंह : तुम्हारी अक्ल पर लानत है। जानते हो डाल कट जाने से

बजायें तो क्या करें ?

अभिनेता–6 : अबे, कोई लपेटे में आ जायेगा तो क्या तेरा बाप बचायेगा।

अभिनेता–7 : हट सामने से मरेगा साले।

अभिनेता–1 : कम से कम स्कूलों और हस्पतालों को तो बक्शो। मैं नहीं जाने दूंगा।

(सभी तरफ से हार्न की आवाजें आती हैं तभी ट्रेफिक पुलिस सीटी बजाता है)

ट्रेफिक पुलिसः अरे पागल हो गया है ट्रेफिक जाम कर रखा है।

(फिर गाड़ियों की आवाजें जाती हैं तभी फिर ट्रेफिक पुलिस सीटी बजाता है)

ट्रेफिक पुलिस : अरे हटाओ साले को।

(कुछ आदमी अभिनेता एक को हटाते हैं और उसके ऊपर से गाड़ियां निकलने लगती हैं।)

(ट्रेफिक मैन की सीटी बजती है और दृश्य रुक जाता है तभी सूत्रधार दर्शकों से)

सूत्रधार : आपने देखा, जिस तरह से हमारे जीवन में मधुर ध्वनि ने कर्कश रूप धारण कर लिया है। ये बिना साइलेंसर की गाड़ियां, ये तेज आवाज वाले हार्न, ये भाग–दौड़ हमें बहरा कर देंगी, पागल कर देगीं।

(दृश्य परिवर्तन)

दूसरा दृश्य

(बारात सड़क पर जा रही है)

(एक पुरुष से)

महिला–2 : बंद करो। बंद करो। सड़क पर इतना शोर क्यूं मचा रहे हो।

अभिनेता–2 : सड़क पर शोर नहीं मचायें तो क्या तेरे घर में मचायें।

अभिनेता–1 : एक महिला जो सत्र कर रही है उससे आप लोग इस तरह

से पेश आ रहे हैं, आपको बात करने की तमीज नहीं है?

अभिनेता–3 : अबे ओ तमीजदार की औलाद। हमें तमीज सिखाने चला है। दिखता नहीं बारात जा रही है। धूमधड़ाका नहीं होगा तो क्या होगा।

महिला–2 : लेकिन भाई साहब, आपके शोर–शराबे ने तो लोगों का जीना हराम कर दिया है।

अभिनेता–9 : सड़क पर नाचना, गाना, बजाना तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है ?

महिला–2 : लेकिन, किसी दूसरे को बहरा और पागल बना देने का अधिकार आपको नहीं।

अभिनेता–1 : आप अपने अधिकार का प्रयोग निश्चित सीमा में करें।

अभिनेता–10 : साले हमें सीमा बताता है, तेरी तो . . . .लो शुरू करो।

(लोग फिर नाचने गाने लगते हैं। दृश्य रुकता है फिर सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार : देखा आपने। हमारी यह परंपरा चली आ रही है कि विवाह के वक्त काफी शोर–शराबा हो। हां इस शोर–शराबे से कुछ लोग तो खुश होते हैं किंतु दूसरी ओर कुछ लोगों को मानसिक तथा शारीरिक रूप से कष्ट का सामना करना पड़ता है। आपके इस शोर से लोग अंधे, बहरे व पागल भी हो सकते हैं। क्या इस शोर को धीमा करके खुशियां नहीं मनाई जा सकती है?

(पुनः लोग नाचने लगते हैं, इसी बीच साइरन की आवाज आती है व दृश्य परिवर्तन होता है)।

तीसरा दृश्य

(कारखाना जिसमें कई आवाजें)

(दृश्य में एक बड़ी मशीन, ठठेरा घन पीटने वाला तथा अन्य मजदूर दिखाये गये हैं)

अभिनेता–1 : बंद करो, बंद करो, यह हाहाकार क्यूं मचा रखा है।

अभिनेता–3 : भैया काम करेंगे तो हल्ला तो होगा ही। लोहे पर घन मारेंगे तो आवाजा तो आयेगी ही।

अभिनेता–1 : तो ऐसी जगह पर क्यूं नहीं चले जाते, जहां बस्ती न हो ।

अभिनेता–3 : यह काम तो हमारे बाप, दादा के जमाने से यही हो रहा है। यह हमारा पुस्तैनी धन्धा है इसे छोड़ कर हम क्यों जायें।

अभिनेता–1 : हल्ला–हल्ला–हल्ला।

(कान पर हाथ रखकर चिल्लाता हुआ अभिनेता के पास जाता है)

क्यूं शोर मचा रहा है।

अभिनेता–9 : हल्ला नहीं करेंगे तो खायेंगे क्या।

अभिनेता–1 : बिना हल्ले के भी तो काम किया जा सकता है

महिला–1 : क्या जंगल में जाकर काम करें ? हमारे बाल बच्चे भूखों मर जाएगें।

अभिनेता–2 : जाओ यहां से।

अभिनेता–1 : *(मशीन के पास जाकर मजदूरों से)* क्या हल्ला मचा रखा है।

मजदूर–1 : क्या ?

अभिनेता–1 : हल्ला–हल्ला ?

मजदूर–2 : गल्ला ?

अभिनेता–1 : गल्ला नहीं हल्ला–हल्ला

मजदूर–2 : भल्ला साहब तो पंजाब गये हैं।

अभिनेता–1 : भल्ला नहीं। हल्ला। शोर–शोर–शोर

मजदूर–1 : मशीन चलेगी, तो शोर तो होगा ही।

अभिनेता–1 : शहर में भी कारखाना डालकर इसे नरक बना रहे हो।

मजदूर–1 : अरे भैया, हम तो मजदूर हैं। तुम्हें जो कुछ कहना है मालिक से कहो।

मजदूर–2 : अगर इसकी आवाज से इतने परेशान हो तो हिमालय की चोटी पर जाकर बैठ जाओ।

चलो भैया काम करो।

(दृश्य रुकता है सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार : यहां भी आपने सुना और देखा आपके शहर के बीचोंबीच में चौबीसों घंटे चलने वाले कारखानों की आवाजें किस तरह इंसानों को पीड़ित कर रही हैं।क्या इसका निदान नहीं है ?

(दृश्य परिवर्तन होता है तथा भजन मंडली का दृश्य बनता है)

चौथा दृश्य

(भजन)

(कुछ लोग बैठे गा रहे हैं।)

गोविन्द बोलो हरी गोपाल बोलो,
राधा रमन, हरि, गोपाल बोलो।

अभिनेता–1 : रोको–रोको। भाई साहब, मेरी मां की तबियत खराब है और मेरे बच्चे की कल परीक्षा है, रात के बारह बज रहे हैं अब तो ये भौंगले बंद कर दीजिए।

गायक–1 : अरे भगवान का नाम लेना बंद कर दें, अधर्मी ?

अभिनेता–1 : नहीं मैं केवल भौंगले बंद कर देने को कह रहा हूं।

अभिनेता–3 : क्यों–क्यों भौंगले बंद। जैसे तेरे बच्चे की परीक्षा जरूरी है ऐसे ही जागरण भी जरूरी है।

अभिनेता–1 : क्यों, क्या बिना भौंगले के तुम्हारा भगवान नहीं सुनेगा। ऐसा कौन से ग्रन्थ में लिखा है कि जागरण में माइक लगाना जरूरी है।

गायक–2 शास्त्रों में लिखा है जो भजन करता है उसे तो मोक्ष मिलता है पर उसकी आवाज जो दूर–दूर तक सुनता है वो भी मोक्ष की प्राप्त होता है।

अभिनेता–1 : तुम नहीं मानोगे । मैं अभी रिपोर्ट करता हूं।

गायक–3 : अबे जा कर दे रिपोर्ट हमारे पास कलेक्टर की परमीशन है चलो भैया शुरू करो।

(दृश्य रुकता है सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार : देख रहे हैं आज यह सब हमारे चारों तरफ हो रहा है धार्मिक शोर, राजनैतिक शोर, सामाजिक शोर, क्या हम सब एक जुट होकर इसका सामना नहीं कर सकते हैं ?

(दृश्य जल्दी–जल्दी बदलते हैं अभिनेता गाते हुए बाहर जाते हैं।)

"करे मच्छर कहाये भूत"

(शाम का समय सभी लोग गांव के चौपाल पर बैठ कर लोकनृत्य का आनंद उठा रहे थे कि अचानक एक लड़का हांफते हुए आया और चिल्लाकर कहने लगा)

लड़का : पिता जी जल्दी घर चलिए, संतू पता नहीं क्या बड़बड़ाए जा रहा है ?

पिता : अच्छा गोटिया मैं चलता हूं, पता नहीं क्या हो गया है. . .।

गोटिया : अच्छा गनपत कुछ बात हो तो मुझे बताना कल दीनानाथ के लड़के के साथ भी यही हुआ था। पता नहीं हमारे गांव में कौन सी विपत्ती आने वाली है। लगता है देवी प्रकोप है, आज कल लोग पूजा अर्चना भी नहीं करते, और न ही बलि चढ़ाते हैं ऐसे में भला कौन किसको बचा सकता है। सबकी मति भ्रष्ट हो गयी है।

एक यंदक : *(जोर देकर)* अच्छा परदेशी भईया अब जाइए ऐसे समय में देर नहीं करनी चाहिए। गोटिया अब हम लोग भी घर चलते हैं बहुत रात हो गयी है। *(घर में खाट के पास मां बैठकर रो रही थी और लड़का हाथ और पैर छटपटा रहा था)*

पिता : *(हांफते हुए)* क्या हुआ मेरे बेटे को ? *(खाट के पास पहुंचकर उसे देखते हुए)* लगता है किसी ने मेरे बेटे पर टोना जादू किया है।

(चिल्लाकर घर के बाहर कहने लगती है)

. . . अरे सुनो जिसने भी इस पर जादू टोना किया है अच्छा नहीं किया मैं दूसरे गांव का बैगा बुलाकर उसकी आंखें न फोड़वा दूं तो मेरा नाम भी परदेशी नहीं ? *(लड़के के पास आकर)*

रघुवीर जरा नमक, मिरची, और बाल तो लाना नजर उतार दूं फिर बैगा को लेने जाऊंगा।

लड़का : अच्छा पिता जी अभी लाता हूं।

(लड़का सामान लेकर आता है, पिताजी अपना काम करते हैं तभी एक आदमी आता है)

आदमी : क्या बात है परदेशी भईया।

परदेशी : पता नहीं भईया किसी ने मेरे लड़के पर जादू टोना कर दिया है।

आदमी : तब तो बैगा को बुलाकर झाड़ फूंक करवानी ही पड़ेगी।

मां : अब क्या होगा ? हमारे चार बच्चे थे दो तो पहले ही खत्म हो गये अब दो बचे हैं वह भी भगवान को पसंद नहीं। हाय रे मेरे करम इससे तो अच्छा था मुझे ही मार डालता क्या इसी सब को देखने के लिए जिन्दा बची हूं।

परदेशी : रो मत सन्तु की मां जल्दी ही हमारा लड़का ठीक हो जाएगा।

(दूसरे दिन परदेशी गोटिया के पास जाता है)

परदेशी : गोटिया जय राम।

गोटिया : जय राम परदेशी, तेरा लड़का कैसा है ?

परदेशी : ठीक नहीं है गोटिया, उसके हाथ पैर कांपते हैं और जाने क्या क्या बोलता रहता है।

गोटिया : तब तो भईया बैगा को बुलाना ही होगा, नहीं तो बड़ा अनर्थ हो जाएगा।

परदेशी : आप ही कुछ कीजिए गोटिया, मेरा तो माथा ही काम नहीं कर रहा है।

गोटिया : अच्छा सुन, पास के गांव जाकर वहां के बैगा को बुलाके ले आ, बड़ा अच्छा बैगा है जल्दी ही ठीक कर देगा।

परदेशी : अच्छा गोटिया में अभी जाता हूं और उसे लेकर आता हूं।

(तभी एक और आदमी आकर)

आदमी : गोटिया मेरे लड़के को बचा लो, वह भी परदेशी के लड़के जैसा कर रहा है।

मोटिया : घबरा मत, परदेशी बैगा लेने जा रहा है, सब ठीक हो जाएगा। अच्छा परदेशी, उससे मेरा नाम लेना जल्दी आ जाएगा, अब जा।

(स्वास्थ्य विभाग वाले सफाई के बारे में जानकारी दे रहे हैं. . .)

भाईयों आसपास पानी जमा हो जाता है, ज्यादा कचरा हो जाता है तो मच्छरों को मौका मिलता है और मच्छर बहुत अधिक संख्या में बढ़ जाते हैं इस कारण घर को और आसपास को साफ रखना चाहिए। पानी को एक जगह अधिक दिन तक इकट्ठा नहीं होने देना चाहिए। इसी मच्छर से मलेरिया जैसी भयंकर बीमारी होती है इससे आदमी मर भी सकता है। हमारे आदमी घर घर जाकर जांच करेंगें और दवाईयां भी देंगे जिससे आप जल्द ही ठीक हो सकते हैं। अच्छा हम लोग चलते हैं कल आकर आप लोगों की जांच करेंगें, इस बात की जानकारी आप लोग सभी को दे देंगे।

(प्रस्थान)

(परदेशी बैगा लेकर आता है)

परदेशी : देखिये बैगा जी अब मेरे लड़के की जिन्दगी आपके हाथ में है।

बैगा : घबराओं नहीं, अब मैं आ गया हूं, तेरा बेटा जल्दी ही चंगा हो जाएगा। जा जल्दी से नींबू, चंदन ले आ तब तक मैं दिया जलाता हूं। हां और सुन एक मुर्गी प्रेत को शांत करने लिए और एक बोतल दारू लेते आना।

(परदेशी जाता है, बैगा अपना मंत्र पढ़ना शुरू करता है और बड़बड़ाने लगता है और परदेशी की पत्नी से कहता है)

बैगा : सन्तु की मां क्या सन्तु पुराने मंदिर के पास खेलने गया था?

मां : हां बैगा जी वह तो हमेशा ही अपने साथियों के साथ वहां खेलने जाता है।

बैगा : तब तो इसे प्रेत के मुखिया ने पकड़ रखा है, हूं. . .अगड़म बगड़म डोल मजीरा. . .जल्दी बता कहां से आयी है।

(पसीने से लथपथ लड़का कराह रहा था तभी परदेशी का प्रवेश)

बैगा : ले आया सामान ?

परदेशी : ले आया हुजूर।

(बैगा दारू पिता है फिर चाकू से नीबू काटता है तो नीबू का रंग लाल हो जाता है उसे निचोड़ते हुए)

बैगा : देखा परेत तेरे बेटे का खून चूस रही है देख देख नीबू कैसे लाल हो गया परदेशी अब तेरा लड़का ठीक हो जाएगा, लेकिन खर्चा करना पड़ेगा।

परदेशी : जैसा भी जो भी हो सब करने के लिए तैयार हूं मैं।

बैगा : हूं तो सुन आठ मीटर लाल कपड़ा, एक बोरा धोया चावल, एक धोती लगेगा, देगा न ?

परदेशी : दूंगा बैगा जरूर दूंगा।

बैगा : तो देख मेरा कमाल . . . ।

(तभी एक आदमी का प्रवेश)

आदमी : परदेशी भईया जरा सुनना, वो स्वास्थ्य विभाग वाले आएं हैं जरा उन्हें भी तो दिखा दे अपने लड़के को *(आदमी की बात सुनकर बैगा)*

बैगा : क्या खाक ठीक करेंगे वे लोग इस प्रेत को, अरे ये प्रेत नहीं प्रेत का मुखिया है, और इसे मेरे सिवाय कोई ठीक नहीं कर सकता।

(आदमी जाता है बैगा अपना काम जारी रखता है कुछ समय पश्चात वह आदमी डॉक्टर को लेकर आ जाता है)

आदमी : यह रहा डॉक्टर साहब वह लड़का।

डॉक्टर : *(बैगा से)* जरा आप हटिए मुझे चैक करने दीजिए।

बैगा : अरे तुम कौन होते हो इसे ठीक करने वाले मेरे सिवाय इसे

कोई ठीक नहीं कर सकता।

डॉक्टर : देखिए मुझे जबरदस्ती करने पर मत उतारिए।

परदेशी : बैगा जी एक बार इनको भी मौका देते हैं।

(बैगा हूं करके हट जाता है)

डॉक्टर : *(लड़के का हाथ छूकर)* अरे. . .इसे तो बहुत बुखार है ? क्या इसे कंपकंपी लग रही थी और पसीना निकल रहा था?

मां : हां डॉक्टर साहब।

डाक्टर : तब तो इसे मलेरिया हो गया है, मैं इसे एक सुई लगाता हूं बुखार जल्द ही ठीक हो जायेगा।

बैगा : अरे देख लो डॉक्टर बाबू जितना देखना है देख लो, आखिर ठीक मुझे ही करना पड़ेगा।

(लेकिन बुखार शांत हो जाता है लड़का धीरे से आंख खोलने लगता है और पानी मांगता है)

डॉक्टर : इसे पानी उबाल कर दजिएगा, अच्छा ये कुछ गोलियां है इसे खिला देंगे। मैं फिर कल आकर देख जाऊंगा, और हां आप इन चक्करों में मत पड़िए जो भी लोग इस तरह की बीमारी से पीड़ित है उन्हें अस्पताल भेज दीजिए। नहीं तो बीमार व्यक्ति को कुछ भी हो सकता है, यह सब सफाई के अभाव के कारण होता है।

और बैगा जी क्या यह खून है ? आपकी प्रेत इस बच्चे का खून चूस रही थी, आप लोगों को बुद्धू बना रहे हैं, परदेशी जी यह खून नहीं है यह बैगा चाकू में चूना लगाकर जब नींबू को काटता है तो नीबू का रंग लाल हो जाता है, और यह बैगा उसे खून कहकर बुद्धू बनाता है, लूटता है और गांव के आप जैसे भोले भाले लोग इन चक्करों में पढ़कर अपनी बची खुची पूंजी गवां बैठते हैं और यह बैगा ठगते ही जाता है।

बैगा : (डर के मारे बड़बड़ा कर) मैं देख लूंगा तुम सब को देख लूंगा, तुम्हारा सर्वनाश बहुत समीप है। मेरी बेईज्जती करने वाला आज तक कोई नहीं बचा।

परदेशी : अच्छा हुआ डॉक्टर साहब आप ठीक मौक पर आ गये नहीं तो मेरा लड़का मेरे हाथ से निकल जाता और मैं इसे जादू टोना कहते रह जाता और यह बैगा मुझे ठगता रहता।

डॉक्टर : यह सब अंधविश्वास है इन पर यकीन नहीं करना चाहिए।

मां : करनी करे मच्छर, नाम होय भूत।

. . . अच्छा डॉक्टर साहब हमें बहुत देर बाद आप लोगों की बात समझ में आई, मैं जाकर गांव के लोगों से कहूंगी की वे इन बातों पर विश्वास न करके अस्पताल में ही अपना इलाज करवायें

(सभी लोग अपनी करनी पर पछताते हुए डॉक्टर को विश्वास दिलाते हैं कि आज के बाद वे अंधविश्वास पर यकीन नहीं करेंगे।

तुम खूनी हो/रक्तदान

(अचानक जोरदार चीख के साथ नाटक की शुरुआत कई मजदूर एक साथ हल्ला करते हैं)

कई अलग अलग आवाजें–

– दौड़ो दौड़ो भाई
– रामू का पैर कट गया
– अरे डॉक्टर को बुलाओ
– रामू का पैर मशीन में चला गया
– गाड़ी लाओ
– पानी लाओ
– क्या हुआ
– खून निकल रहा है
– जल्दी करो उठावो
– ले चलो जल्दी हास्पीटल।

(सभी मिलकर रामू को कन्धे पर उठाकर हास्पीटल ले जाते हैं हास्पीटल का दृश्य। एक डॉक्टर एवं नर्स का प्रवेश)

मजदूर–1 : डॉक्टर साहब जल्दी कीजिए
मजदूर–2 : इसका पैर कट गया है।
मजदूर–3 : बहुत खून निकला है।
मजदूर–4 : डॉक्टर साहब जल्दी कीजिए इसे बचा लीजिए।
डॉक्टर : (मरीज को देखते हुए) नर्स जल्दी करो इसे ऑपरेशन थियेटर में ले चलो।

नर्स : यस सर।

(रामू को एक बैड पर लिटा दिया जाता है सभी मजदूर बाहर खड़े रहते हैं। डॉक्टर मरीज को देखता है पुनः नर्स से)

डॉक्टर : सिस्टर बहुत खून बह गया अभी इसे खून चढ़ाना होगा। जल्दी करो इसका ब्लड ग्रुप चेक करो।

नर्स : *(चेक करने के बाद)* सर ब्लड ग्रुप तो बी+ है परन्तु हास्पीटल में इस ग्रुप का खून नहीं है।

डॉक्टर : अच्छा ऐसा करो तुम इनके साथियों से पता करो कोई खून देगा।

नर्स : *(बाहर उनके साथियों से)* सुनिये आपके मरीज का बहुत खून बह गया है उसे अभी खून चढ़ाना होगा। उसका खून बी + है। आप लोग यहां एक पंक्ति में बैठ जाइये। मैं आप सबका खून जांच करूंगी। जिसका खून भी बी + होगा उससे खून लेकर मरीज को चढ़ाउगी। घबराइये मत बैठ जाइये मैं अभी सामान लेकर आती हूं।

(कहकर एक तरफ चली जाती है)

(सभी मजदूर घबराये से आपस में बात कर रहे हैं)

– ये अब क्या होगा।
– कौन खून देगा ?
– ये मगरू तुम दोगे ?
– क्यूं में क्यूं दूं ? तुम्ही क्यूं नहीं दे देते
– ये हरी तुम दे दो ।
– नहीं नहीं भाई मैं ऐसे ही बहुत कमजोर हूं
– मैं ? नहीं नहीं भाई मेरे बाल बच्चे हैं
– नहीं नहीं मुझे मरना नहीं है
– खून देने से आदमी बीमार पड़ जाता है
– तो क्या किया जाये।

– ये सुनो ऐसा करते हैं जब नर्स खून जांच करे तो कह देना कि मेरा ग्रुप दूसरा है अलग अलग ग्रुप का नाम ले लेना।

(नर्स आती है सब लोगों से बात करती है परन्तु कोई भी अपना खून जांच करवाने के लिए तैयार नहीं होता है सभी झूठ बोलते हैं कि मेरा ग्रुप दूसरा है नर्स हार थक कर डॉक्टर को रिपोर्ट करती है।)

डॉक्टर : सिस्टर, ऐसा करो उन्हें बोल दो की जल्दी से ब्लड बैंक से खून ले आयें। अन्यथा मरीज के बचने की कोई उम्मीद नहीं है ?

(सिस्टर आकर इन लोगों को बताती है सभी उदास ब्लड बैंक में जाते हैं)

मजदूर–1 : डॉक्टर साहब जल्दी से बोतल में बी + खून दे दीजिए।

डॉक्टर : ठीक है बैड पर लेटो।

मजदूर–2 : लेकिन मैं कह रहा हूं एक बोतल बी + खून दीजिए ?

डॉक्टर : हां भाई सुन लिया कह तो रहा हूं कि बेड पर लेटो।

(वह दूसरे मजदूरों को देखता है।)

मजदूर : अपने साथियों से लगता है सालों बहरा है। *(डॉक्टर से)* एक बोतल खून चाहिए बी +

डॉक्टर : ये हल्ला क्यूं करता है।

मजदूर–2 : इसलिए कि मैं खून मांग रहा हूं और आप कहते हैं बेड पर लेटो क्या मजाक है ?

डॉक्टर : अरे भाई यहां खून के बदले ही खून दिया जाता है तुम हमें खून दो मैं भी तुम्हें खून दूंगा।

मजदूर–1 : मगर मेरा खून बी + नहीं है।

डॉक्टर : कोई बात नहीं यहां तुम कोई भी ग्रुप का खून दो बदले में उतना ही खून तुम जिस ग्रुप का चाहोगे मिलेगा।

मजदूर : मगर हम लोग खून नहीं दे सकते

– हम लोगों को मरना नहीं है।

– हम लोग लावारिस नहीं है।

– हम लोगों का अपना हंसता खेलता परिवार

– आप मुझे पैसे से खून दीजिए।

डॉक्टर : मगर यहां पैसे से खून नहीं मिलेगा।

मजदूर : क्यूं नहीं मिलेगा ?

डॉक्टर : क्यूंकि यहां का यही नियम है

मजदूर : चलो डाक्टर से बता दे कि खून नहीं मिल रहा है ।

– ये सुनिये सर हमारा दोस्त. का बहुत खून बह गया है उसे किसी तरह बचा लीजिए।

– आप कृपा कर के एक बोतल खून दे दीजिए।

– नहीं मिलेगा। यहां खून के बदले खून मिलेगा।

(सभी लोग लौट जाते हैं)

डॉक्टर : *(स्वगत)* ये लोग कैसे मूर्ख हैं इसका दोस्त मर रहा है परंतु ये अपना खून नहीं दे सकते। इन लोगों को कौन समझाये कि खून देने से कोई हानि नहीं होती यह वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित है। मगर कहीं ऐसा न हो इसका दोस्त मर जायें। मगर इन लोगों को समझाना भी बहुत जरूरी है चलता हूं

(इधर मजदूर लोग आपस में बात कर रहे हैं)

– अब क्या करें

– ये सुनो सोहन काका आप तो बूढ़े हो चले हैं अब आपको क्या है आज न कल मर ही जायेंगे आप अपना खून दे दीजिए न।

– नहीं नहीं मैं क्यूं दूंगा। बूढ़ा हो तुम बूढ़ा हो तुम्हारा बाप। तुम लोग तो मुझसे जलते हो चाहते हो कि मैं मर जाऊं।

– अरे भाई आपस में लड़ क्यूं रहे हो ऐसा करते हैं हम लोग किसी खून बेचने वाले के पास चलते हैं उसे पैसा देकर बुला लायेंगे डाक्टर से बोल देंगे ये हमारा आदमी है।

– हां हां ठीक है चलो।

(सभी एक तरफ निकल जाते हैं तुरंत तीन आदमियों को लेकर प्रवेश)

मजदूर : डॉक्टर साहब ये लीजिए इससे खून ले लीजिए ये हमारा आदमी है।

डॉक्टर : *(गुस्से से)* ये तुम्हारा आदमी है मैं इन तीनों को बहुत अच्छी तरह से पहचानता हूं इसमें से एक तो टी. बी. का शिकार है दूसरा एड्स का और तीसरा शराबी है इन तीनों में से किसी का भी खून लेता हूं तो मरीज कल मरने वाला होगा तो आज ही मर जायेगा। जाओ कहीं से भी खून लेकर आओ अन्यथा यह नहीं बचेगा। जल्दी करो।

(सभी वापस लौट जाते हैं)

(पुनः सभी का प्रवेश)

डॉक्टर : सबको एक नजर से देखते हुए बहुत अफसोस है कि मैं तुम्हारे मरीज को नहीं बचा सकता। तुम्हारा मरीज मर गया। वह मरा नहीं बल्कि तुमने उसे मार डाला है तुम खूनी हो। अगर अपना थोड़ा सा भी खून उसे दे दिए होते तो वह बच गया होता

(सभी रोने लगते हैं) ओ मूर्ख अब रोते हो। तुम लोग समझते हो कि खून देने से आदमी कमजोर हो जाता है उसकी मृत्यु हो जाती है परन्तु ऐसा कुछ नहीं है हम लोग उतना ही खून लेते हैं जिससे उसे हानि नहीं हो। किसी भी स्वस्थ्य आदमी जिसका वजन 45 किलो हो वह अगर 250 सी सी खून देता है तो उसे कोई हानि नहीं है।

(सभी रोने लगते हैं)

मजदूर : हाय ये हमने क्या किया अपने मित्र का खून कर डाला। हाय ईश्वर मुझे कभी माफ नहीं करेगा, डॉक्टर साहब ये बात आपने मुझे पहले क्यूं नहीं बतायी हम लोग तो डरते थे कि खून देने से आदमी कमजोर हो जाता है। आदमी मर जाता है। हाय भगवान ये हम लोगों ने क्या किया ।

डॉक्टर : चुप हो जाओ। तुम्हारा दोस्त मरा नहीं है बल्कि ब्लड बैंक वाले ने एक बोतल खून दे दिया है। मगर तुम लोग प्रण करो आज के बाद कभी भी खून देने से इनकार नहीं करोगे।

(सभी खुशी से डॉक्टर के पैर में लिपट कर प्रण करते हैं)

मजूदर : डाक्टर साहब हम लोग प्रण करते हैं और साथ ही साथ अभी सभी खून दान करेंगे।

(इतना कहकर दौड़कर राम से मिलते हैं सभी खुशी से एक दूसरे से लिपट जाते हैं।)

चलो खाना खायें

(डॉक्टर अपने दोस्त के साथ आता है)

डॉक्टर : रुक जाओ तुम गांव के बारे में कुछ नहीं जानते। तुम *(फालतू)* बात कर रहे हो।

दोस्त : क्या मैं, गांव के बारे में कुछ तो जानता ही हूं।

डॉक्टर : तुम जो कुछ भी जानते हो, बकवास है. बस इतना ही जानते हो कि उनके घर टपकते हैं, वे भूखे मरते हैं और कभी कभी दारू पीकर अपनी बीवी को मारते हैं।

दोस्त : तुम ऐसा क्यों कह रहे हो। ? हम उनके बारे में चिंतित रहते हैं, पिछले दिनों ही हमने उनके बारे में एक नाटक अपने क्लब में किया था।

डॉक्टर : क्या खूब नाटक किया था आपने रविन्द्र भवन में किया था न उसके बाद आपने पेटी खाई होगी, कटलेट खाये होंगे और अपने घर चले गये होंगे।

दोस्त : हम और क्या कर सकते हैं ? हम उसको रोज पैसा नहीं दे सकते, उसकी आर्थिक स्थिति नहीं बदल सकते।

डॉक्टर : तुम क्या सोचते हो ? क्या वे सिर्फ आर्थिक रूप से पीड़ित हैं, उनकी सबसे बड़ी समस्या है निरक्षरता। कुपोषण जिससे सैकड़ों बच्चे मारे जाते हैं।

दोस्त : ये तो होगा ही उन्हें कोई रोज अंडा मछली तो मिलती नहीं ज्यादा से ज्यादा हम उसे कुछ मुफ्त दवाई दिलवा सकते हैं।

(डॉक्टर चुप हो जाता है)

दोस्त : क्यों चुप क्यों हो गये ?

डॉक्टर : निरक्षरता सिर्फ गांवों में नहीं शहरों में भी है। ऐसा निरक्षर मेरा

दोस्त भी हो सकता है। तुम क्या सोचते हो कि सिर्फ अंडा मछली खाकर ही आदमी स्वस्थ रह सकता है।

दोस्त : और नहीं तो क्या ? मेरी बीवी जब बीमार थी तब डॉक्टर ने यही कहा था।

डॉक्टर : हे भगवान ऐसे डॉक्टरों की तो डिग्री फाड़ देनी चाहिये। तुम जानते हो कि गाजर में कितना विटामिन "ए" होता है। दाल, भात, सब्जी खाने से भी आदमी स्वस्थ रह सकता है। दिन भर में एक फल खाने से भी सभी *(प्रोटीन)* आपको मिल सकते हैं। और हरी सब्जियां आपको सब विटामिन दे सकती है। मैं तुम्हें एक बात बताता हूं। वो संतोष बाबू . . .

(संतोष अंदर आता है)

संतोष : डॉक्टर साहब, डॉक्टर साहब।

डॉक्टर : क्या बात है ?

संतोष : आपने जो चार्ट बना कर दिये थे। उससे मेरा वजन और बढ़ गया मैं बढ़ता जाऊंगा, मेरा दिल भी धड़क रहा है।

डॉक्टर : परचा कहां है ?

संतोष : हां, वे देखिये, मुझे दिन में नींद नहीं आती है। मेरा सिर भी भारी रहता है, मैं बचूंगा तो।

डॉक्टर : मैंने जो भी कहा है। वैसे ही खाते हो कि ज्यादा खा रहे हो।

संतोष : मैं क्यों छुपाकर खाऊं ? आपने जो दिया उसी के हिसाब से खाता हूं।

डॉक्टर : फिर भीं वजन कम नहीं हो रहा।

संतोष : जैसा आपने चार्ट दिया है वैसे मैं दवाई खा रहा हूं, दिन में दो बार। लेकिन एक बात है आपकी दवाई है बहुत अच्छी। मैंने तो कैप्सूल, सिरप, टैबलेट आदि के बारे में सुना था पर ये अच्छी हैं। एक तो खाना खाओ, उसके बाद दवाई के अनुसार खाना खाओ।

डॉक्टर : क्या मतलब ?

(डॉक्टर चार्ट चेक करता है)

तुम खाना भी खा रहे हो और चार्ट के हिसाब से अंडा, फ्रूट जूस, रोटी भी ले रहे हो ?

संतोष : हां डॉक्टर साहब । पर इस बार दिल की धड़कन कम करने की दवाई दीजिए ।

(दृश्य 3)

(डॉक्टर एवं दोस्त फिर आते हैं वहां एक किसान भी आता है)

किसान : डॉक्टर साहब। डॉक्टर साहब।

डॉक्टर : क्यों क्या हुआ ?

किसान : डॉक्टर साहब मेरा लड़का दिनों दिन कमजोर होता जा रहा है पहले वह खूब सुंदर था।

डॉक्टर : क्या खाने को देते हो।

किसान : क्या चावल खाता है काफी खाता दिन में तीन बार।

डॉक्टर : चावल के साथ क्या दे रहे हो ?

किसान : मैं क्या दूंगा कभी प्याज, कभी नमक, कभी मिर्च दे देते हैं।

डॉक्टर : क्यों कुछ सब्जी बगैरह नहीं देते ? तुम खुद भी सब्जी खाते हो या नहीं।

किसान : वो सब हम नहीं खाते कभी कभी बीबी लाती है तो खा लेते हैं।

डॉक्टर : वही खाना चाहिये, तुम्हारे खेत में पपीता नहीं होता क्या ? वो खा सकते हो।

किसान : जो भी होता है वह मैं बेच डालता हूं।

डॉक्टर : उसमें से कुछ बचाके तो खा सकते हो ? उस दिन मैंने देखा ही था कि तुम्हारी बीवी के शरीर में आयरन कम है।

किसान : क्या कहा आय. . .आय. . .

डॉक्टर : अरे बाबा आयरन. . . लोहा

किसान : ओ लोहा। हमारे घर में लोहे का बहुत सामान है। पर उसे खा कैसे सकते हैं।

डॉक्टर : नहीं नहीं क्या तुम्हारे घर में अमरूद नहीं होता।

किसान : वो तो है उसे हम ज्यादा नहीं खाते।

डॉक्टर : नहीं वही खाना है कठहल खा सकते हो वो तो मिलता है।

किसान : लेकिन क्या मछली अंडा नहीं देना है।

डॉक्टर : अगर दे सकते हो तो दो।

किसान : लेकिन कैसे दूं दाल रोटी में ही पैसा खत्म हो जाता है।

डॉक्टर : ये तुम्हारा दोष है कई लोग बिना मछली और अंडे के भी स्वस्थ रहते हैं दाल खाना जरूरी है।

किसान : कौन सी दाल ?

डॉक्टर : खेसरी दाल को छोड़कर कोई भी

किसान : ये तो आपने नई बात सुनाई, वैसे भी मेरा लड़का कमजोर होता जा रहा है चलो देखते हैं, जो डॉक्टर कह रहा है वही करके देखते हैं इसमें ज्यादा पैसा भी खर्च नहीं होगा।

डॉक्टर : अगर तुम मानने को तैयार हो तभी तुम्हारे लड़के को देखूंगा।

(रास्ते में)

अब से शहर में भी यही करना।

खत

(दो लड़के होस्टल के कमरों में दाखिल होते हैं)

श्याम : हलो रमेश, सुना है खूब तैयारी हो गई

रमेश : अरे कहां यार, अभी तक आधा सिलेवर्स भी नहीं हुआ पर कल पेपर है।

श्याम : हां यार, बात तो तेरी सही है। मुझे तो वैसे भी गणित का विषय बोर सा लगता है।

रमेश : क्यों घबराते हो भैया ? तुमने तो छःमाही परीक्षा में तो अच्छे नम्बर प्राप्त किये थे। इस बार भी कर लोगे।

श्याम : बात ये है कि परीक्षा के एक दिन पहले पूरा सिलेवर्स आंखों के आगे से गुजरना तो चाहिये।

(रमेश चिट्ठियों का डब्बा खोलता है और एक पत्र निकालता है फिर कहता है लो मेरा भी पत्र है) दोनों पत्र खोलकर पढ़ते हैं नेपथ्य से पत्र को पढ़ा जाता है।

(जय बजरंग नाथ, जय बजरंग नाथ . . .)

रमेश : अरे सौ बार एक ही बात लिख रखी है, जय बजरंग नाथ देखें आखिर में कुछ और भी लिखा है (जोर से) यह पत्र स्वयं पढ़कर ऐसे ही 101 लोगों को और लिखो। ऐसा करने से आपको शीघ्र ही लाभ होगा कोई छिपा हुआ खजाना मिलेगा और हर काम में सफलता मिलेगी जिला कांगड़ा के हीरालाल ने ऐसे ही पत्र लिखे थे और उसकी लॉटरी निकल आई। उषा रानी के भाग भी ऐसे ही खुल गये लेकिन जबलपुर के एक व्यक्ति ने इसे फाड़ कर फैंक दिया उसका दिवाला निकल गया उसका लड़का भी सालाना परीक्षा में फेल हो गया अवज्ञा करने वाले रामशरण की बस दुर्घटना में मौत हो गई अरे,

अरे, मैं और नहीं पढ़ता. . .

श्याम : तूने पढ़ तो लिया यार। अब तूझे 101 पत्र लिखने ही पड़ेंगे।

रमेश : वैसे भईया कितना समय नष्ट होगा और पैसे भी खर्चने पड़ेंगे और कल हमारी परीक्षा है कैसे करेंगे ?

श्याम : लेकिन रमेश अगर नहीं करेंगे तो नुकसान भी हो सकता है मेरा वैसे ही बुरा हाल है। अगर बजरंगनाथ नाराज हो गये तो . . . ना भई ना मैं तो कुछ समय निकालकर लिखूंगा।

रमेश : देखो भई बात तो ठीक है, चलो मैं भी सोचता हूं, क्यों श्राप लूं बजरंग नाथ का।

(दोनों बाहर जाते हैं, जय बजरंग नाथ, जय बजरंग नाथ की आवाजें आती है। श्याम अब खतों का ढेर लेकर आता है बीच बीच में कुछ बोलता जाता है।)

श्याम : पत्र तो लिख लिये पर 101 लोगों के पते कहां से मिलेंगे शाम हो चुकी है चलो बाजार में जाकर पते इकट्ठे करता हूं और कुछ दोस्तों को लिख देता हूं। *(जाता है)*

(रमेश आता है)

रमेश : स्वयं से खत तो ले आया हूं अब इसे लिखूँ भी क्या ? इसमें क्या रखा है ? लोग ऐसे ही मूर्खों की तरह बातें करते हैं हम विज्ञान पढ़ते हैं, हम इसमें क्यों विश्वास करें (फिर खुद से) लेकिन हमें कौन पूरी दुनिया का पता है। कहीं कुछ नुकसान न हो जाये *(फिर सोचकर)* नहीं नहीं ऐसा कुछ नहीं होता मेरे पास तो कुछ घंटे ही बचे हैं, खत लिखने के बदले में कुछ प्रश्न ही याद कर लेता हूं मैं कोई बुरा काम तो कर नहीं रहा अगर कोई बजरंग नाथ होंगे भी तो मुझे इस काम से क्या रोकेंगे चलो मैं निश्चय करता हूं कि सिर्फ पढ़ूंगा, खत वत नहीं लिखूंगा।

(जय बजरंग नाथ की आवाज आती है पत्र के हिस्से से "उसका लड़का भी सालाना परीक्षा में फेल हो गया")

रमेश : छोड़ो यार। मैं हिम्मत करके देखता हूं कुछ नहीं होगा *(किताब उठाता है जाता है, जय बजरंग नाथ की आवाज आती है)*

दृश्य 2

(दोनों एक ही अखबार में रिजल्ट देखते हुए प्रवेश करते हैं)

रमेश : लो भई मेरा रोल नंबर तो मिल गया मैं तो पास हो गया

(श्याम अखबार देखता जा रहा है फिर माथे पर हाथ मारकर. . .)

श्याम : मैं तो लगता है उड़ गया हूं।

(इतने में दो लिफाफे गिरते हैं, दोनों उठाते हैं देखते हैं)

श्याम : मैं तो गणित में ही रह गया मैंने तो बजरंगनाथ को नाराज भी नहीं किया था इतने खत भी लिखे थे फिर ये कैसे हो गया (बोलता है) रमेश तुम पर तो बजरंग नाथ की मेहरबानी हो गई, गणित में तेरे नंबर भी अच्छे आयें हैं।

रमेश : नहीं नहीं उन्होंने अपनी कृपा मुझ पर नहीं तुझ पर की है मैंने तो दृढ़ निश्चय कर लिया था और कोई खत वत नहीं लिखा उसी समय पढ़ने बैठ गया और तैयारी कर ली परचा भी अच्छा कर लिया था तेरा सारा दिन खत लिखने और पता ढूंढ़ने में लग गया होगा, कुछ पढ़ने भी नहीं पाया होगा।

(जय बजरंगनाथ 101 खत जय बजरंगनाथ 101 खत. . .)

एक हाथ खीरा, नौ हाथ बीज

(यह नाटक समाज में व्याप्त अंध विश्वास पर आधारित है, तथा अंध विश्वास को दूर करने का प्रयास किया गया है)

(मंच पर पिता टहल रहे हैं तभी उनका लड़का शहर से आता है)

कृष्णा : पिता जी प्रमाण।

पिता : जीते रहे बेटा जीते रहो, आने में कोई तकलीफ तो नहीं हुई।

कृष्णा : नहीं पिता जी आने में मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ पिता जी मां नजर नहीं आ रही है, कहां गई है ?

पिता : बेटा कल छिपकली मेरे ऊपर गिर गयी थी उसी की शुद्धि के लिए तुम्हारी मां ब्राह्मणों के यहां दाल चावल दान करने गयी है।

कृष्णा : आप भी पिता जी, अगर छिपकली गिर गयी थी तो अच्छी तरह नहा लेते क्या आवश्यकता थी ब्राह्मणों के यहां जाने की।

(तभी मां का प्रवेश)

कृष्णा : प्रणाम मां

मां : जीते रहो बेटा, सदा खुश रहो, कौन सी गाड़ी से आ रहे हो ?

कृष्णा : पैसिंजर से आ रहा हूं मां।

मां : कृष्णा आज कौन सा दिन है ?

कृष्णा : आज तो शनिवार है मां।

मां : शनिवार अरे तू शनिवार को क्यों आ गया दूसरे दिन आते नहीं बना?

कृष्णा : तुम भी कहां की बात ले बैठी मां ये दिन वार का चक्कर मेरे समझ से दूर है। मां तुम्हारी बहू अपने मायके से नहीं आयी क्या?

मां : अजीब बात करते हो बेटा, क्या कोई मां बाप अपनी लड़की को

मूल नक्षत्र में घर से बाहर भेजेगा, एक तो तुम बुद्धू हो।

कृष्णा : मां लगता है तुम्हारी बात कुत्ते की पूंछ की तरह जिंदगी भर टेढ़ी रहेगी।

पिता : अरे कुछ खाने को देगी या यूं ही बक–बक करती रहेगी

मां : अच्छा देती हूं। जैसा बेटा वैसा बाप।

कृष्णा : *(पिता से)* पिता जी कोलवा नजर नहीं आ रहा है कहां गया है?

पिता : खेत गया है बेटा चारा लेने आता ही होगा। क्या कोई काम था उससे ?

कृष्णा : नहीं ऐसा कोई खास काम नहीं था, शाम को मेरे पास भेज देंगे जरा गांव टहल कर आ जायेंगे।

(तभी मां की आवाज)

मां : थाली लग गयी है आ जाइये।

(कृष्णा और पिता खाने के लिए चले जाते हैं।)

(कोलवा का प्रवेश)

कोलवा : भईया को मुझसे मिलना था, फिर कहां चले गये।

(कृष्णा का प्रवेश)

कृष्णा : अरे कोलवा तुम इधर हो और मैं तुम्हारा घर पर इंतजार कर रहा था।

कोलवा : शहर से आये हो न भईया, बात बनाना अच्छा आता है। अरे नहीं बोलवा, चल गांव घूम कर आते हैं।

(दोनों आगे बढ़ते हैं तभी एक आदमी रोता नजर आता है।)

कृष्णा : कोलवा, ये मंगलू इतने जोर–जोर से क्यों रो रहा है रे।

कोलवा : भईया, मंगलू के भैंसा को भूत ने पकड़ लिया था, बैगा उसके भैंसा को तालाब में ले गया और खूब पटक–पटक कर मारा। दूसरे दिन उसका भैसा मर गया इस लिए बेचारा गरीब आदमी है तुरंत भैसा खरीदने के लिए पैसा नहीं है और खेती के दिन पास आ गये हैं.

कृष्णा : अरे भैसा भूत पकड़ने से मरा या तालाब में कुदा–कुदा कर मारने से।

कोलवा : ये तो मैं नहीं जानता, पर हां गांव के दूसरे पशुओं को भी यही

हो गया है।

कृष्णा : कल जा कर डॉक्टर ले आना और जांच करवा देना। अच्छा चल, बड़े पिता जी के यहां चलते हैं बहुत दिन हो गये उनसे मिले।

(दोनों आगे चलते हैं तभी एक बिल्ली रास्ता काटती है)

कोलवा : *(बात बनाते हुए)* भईया बहुत समय हो गया, फिर चलेंगें। और बिल्ली भी रास्ता काट कर चली गई ऐसे समय पर बिना सोचे उल्टे पैर घर चलना अच्छा होगा।

कृष्णा : *(समझाते हुये)* कोलवा में आगे चलता हूं, मेरे पीछे तुम आओ यदि कुछ होगा तो पहले मुझे ही होगा।

(कोलवा डरते हुए जाता है, और रास्ता पार कर लेता है, उसे कुछ नहीं होता)

कोलवा : भईया सच मुच मुझे कुछ नहीं हुआ, फिर ये गांव वाले ऐसा क्यों कहते है कि बिल्ली रास्ता काटे तो वहां से नहीं जाना चाहिए।

कृष्णा : बक–बक करते रहेगा या आगे भी चलेगा

कोलवा : चल तो रहा हूं, दो आखर क्या पढ़ लिये दिन भर डांटते रहते हो।

(दोनों आगे बढ़ते है तभी एक आदमी अपनी स्त्री का बाल पकड़ उसे घसीटते हुए ला रहा था, महिला चिल्ला–चिल्ला कर बचाओ–बचाओ कह रही थी पर आगे आकर उसे कोई नहीं बचा रहा था।)

कृष्णा : अरे, रघु यह तुम क्या कर रहे इसे मार क्यों रहे हो ?

रघु : भईया यह जादूगरनी है अपने बच्चे को होने के साथ ही खा जाती है।

महिला : *(रो कर)* नहीं भईया इसमें मेरा कोई दोष नहीं है, मुझे बचा लो भईया नहीं तो यह मार डालेगा।

कृष्णा : रघु तुम इसको छोड़ो।

(रघु के पिता से)

सुकालू काका मैंने पहले ही आप से कहा था बचपना है रघु की अभी शादी मत करो लेकिन आप को कौन समझाये, देख लिऐ

बचपन में शादी का नतीजा, तुम्हारी बहू की उम्र अभी मां बनने लायक नहीं है इसी कारण इसके बच्चे कमजोर पैदा होते हैं और मर जाते हैं।

रघु : भईया तुम नहीं जानते यह टोहनी विद्या सीख रही है अभी इसने अपने बच्चे को खाया है कल दूर गांव को बरबाद कर देगी।

कृष्णा : रघु तुम समझने का प्रयास करो।

(कोलवा उस माहौल से भयभीत हो जाता है और इससे छुटकारा पाने के लिए कृष्णा को घर चलने के लिए कहता है।)

कोलवा : भईया चलिये घर चलते हैं, क्यों बेकार में हम इस झमेले में पड़ें।

कृष्णा : जरा पास आना कोलवा।

(कोलवा पास आता है। और कृष्णा उसके कान में कुछ कहता है।)

(घर आते ही कृष्णा हाथ पैर छटपटाने लगता, उसके मां–बाप उसे देख कर आश्चर्य चकित रह जाते हैं।)

पिता : क्या हो गया रे कोलवा, कृष्णा––ऐसे क्यों कर रहा है।

कोलवा : मालिक ने मेरे को काट दिया।

पिता : काट दिया। कैसे काट दिया।

कोलवा : *(उसके हाथ को काट कर)* ये ऐसे।

पिता : चल हट रे, तु तो मेरे को ही काट दिया।

कोलवा : मैं तो आप को धीरे से काटा हूं उसने तो मुझे जोर से काटा था।

पिता : कोलवा लगता है इसे ऊपर किसी की छाया पड़ गयी है जा तो वैद्य को बुला ला।

(पिता बेटे के हरकम को देखते रहता है, और कोलवा वैद्य लेकर आता है।)

वैद्य : क्या हो गया रे कोलवा

कोलवा : पता नहीं वैद्य जी क्या हो गया मेरे भईया को बचा लो नहीं तो मुझे शहर कौन ले जायेगा सलीमा दिखाने।

वैद्य : *(हाथ छू कर)* क्या कोलवा यह तालाब में डूब–डूबकर बहुत देर तक नहाया था ?

कोलवा : हां वैद्य जी।

वैद्य : तब तो इसे डबल निमोनिया हो गया है ठीक हो जायेगा पर खर्चा बहुत है।

पिता : दूंगा सब कुछ दूंगा वैद्य, मेरे बेटे को बचा लीजिए।

(वैद्य उसे दवाई पिलाने का अभिनय करता है तो कृष्णा उसको लात मार देता है और वैद्य डबल निमोनिया कहते भाग जाता है। फिर बैगा आता है वह भी ढोंग करता है, उसको भी कृष्णा लात मारता है, फिर कोलवा)

कोलवा : मालिक मैं भी एक बार देखूं मंत्र पढ़ कर

पिता : देख रे कैसे भी बचा ले इसे।

(कोलवा मंत्र पढ़ता है और कृष्णा ठीक हो जाता है।)

पिता : *(झपझपाते हुए)* वाह कोलवा–वाह।

कृष्णा : मुझे कुछ नहीं हुआ था पिता जी मैं तो आप लोगों के सामने अंधविश्वास का जो पर्दा है उसे हटाने के लिए नाटक कर रहा था।

पिता : नाटक कर रहा था ?

कृष्णा : पिता जी, न मुझे डबल निमोनिया है, और न ही भूत ने पकड़ा है। ये वैद्य, बैगा हमारे समाज के कोढ़ हैं लोगों को बुद्धू बना कर ठगते हैं और आप लोग ठग जाते हो। बिना सोचे आप लोग किसी की भी बात पर विश्वास कर लेते हो। आप लोग कहते हैं न चंद्रमा देव लोक है, वहां देवता रहते हैं अरे देवता तो क्या वहां हवा तक नहीं है पहाड़ और खाई ही खाई है ये तो वही बात हुई एक हाथ खीरा के नौ हाथ बीज।

चितावर

(मास्टर जी कुर्सी पर बैठे सामने मेज पर रजिस्टर फैलाए कुछ लिख रहे हैं। चपरासी मन्नूराम पास ही में खड़ा है)

मन्नूराम : क्यों बोलाया आपने सरजी ?

मास्टर जी : *(सिर उठाकर देखते हैं।)* हां, इसलिए बुलाया तुम्हें मन्नूराम कि मैं हाजिरी लेने पहुंचा हूं और मेरी क्लास में एक भी लड़का नहीं है।

मन्नूराम : हां, सो तो दिखत है सरजी। लेकिन बाकी केलास के लड़कन तो आए हैं।

मास्टर जी : तो फिर आज आठवीं क्लास के लड़के कहां चले गए ? या कि वे आए ही नहीं। एकदम बीसों के बीस गायब। तुमने घंटी तो मारी थी न ठीक से ? देखो तो कहीं पिछवाड़े के मैदान में खेल तो नहीं रहे हैं।

मन्नूराम : हां सरजी, घटी तो हम जोर से पीटे रहे। ठीक बात, देखत हों बाहर कहीं खेल–वेल न रहे हों. . .।

(चपरासी के बाहर निकलने के साथ–साथ मंच के दूसरे कोने से तीन–चार लड़के दौड़ते हुए क्लास में घुसते हैं और हांफते हुए बोलने लगते हैं।)

सारे लड़के : *(लगभग एक साथ)* मास्टर जी, मास्टर जी, आपने तो कहा था न . . कि भू. . . भू . . .त. . .न. . .ई. . .।

(और उनके हांफने की बात अस्पष्ट रह जाती है)

मास्टर जी : अरे तुम लोग हांफ क्यों रहे हो ? हमने कहा था, हमने क्या कहा था ? इस तरह सब साथ–साथ न बोलकर एक जने बोलो न। और सांस लेकर इत्मीनान से बोलो क्या हो गया है ?

आगे वाला

लड़का : *(एक बार पीछे मुड़कर अपने तीनों साथियों को देखता है, फिर उनके इशारा करने पर मास्टर जी की ओर मुड़कर बड़ी बड़ी आंखों में कुछ बोलने को होता है। अभी भी उसकी सांस तेज चल रही है, जिसकी आवाज सुनाई दे रही है।)*
मास्टर जी, आपने तो कहा था कि भूतप्रेत नहीं होता, सब मन का वहम है, या फिर कल्पना से गढ़ी कहानी।

मास्टर जी : हां, कहा था और यह बात सही है।

लड़का : लेकिन हमारे क्लास के मुरारीलाल को तो "चितावर" ने पकड़ा है। उसे देवार झाड़ने आया है।

मास्टर जी : ये चितावर क्या है ?

चारों लड़के : *(एक साथ)* चितावर नहीं जानते मास्टर जी, आप शहर के जो हैं, ये सब तो गांव में ही होता है।

एक लड़का : चितावर नदी किनारे शमशान में पानी पर आग बनकर दिखने वाला भूत है मास्टर जी।

मास्टर जी : *(कुछ चिंतित से दिखते हैं)* इसका मतलब है कि क्लास के सभी लड़के भूत उतराई में लगे हैं।

एक लड़का : *(बाकी तीनों सर हिला लेते हैं)* जी, मास्टर जी आप भी चलिए न। चलकर खुद ही देख लीजिए न भूत झाड़ने का दृश्य।

मास्टर जी : ठीक है तुम लोग चलो, मैं प्रधान अध्यापक जी से पूछकर आता हूं। आज तुम्हारी विज्ञान की क्लास वहीं लगेगी। मैं साथ में सामान लेकर आता हूं।

(लड़के मंच में एक ओर चले जाते हैं। मास्टर जी दूसरी ओर से अंदर आते हैं। अब बीच का पर्दा उठता है, जहां कोने में झोंपड़ीनुमा एक घर है। उसके सामने एक दो देहाती बुजुर्ग, मर्द, औरतें और तमाम बच्चे खड़े हैं। उनके बीच एक वृत्ताकार घेरे में ओझा फूंक मारकर सरसों के दानों का छिटका मार रहा है और मुरारीलाल डरा सहमा सा ओझा की फटकारों का जवाब नाक से

निकली आवाज में दे रहा है।)

ओझा : *(सरसों दाना का छिटका मारकर जोर–जोर से बड़बड़ाते हुए)* ओं ही फट काली कलकत्ता वाली, भूतों का काल महाकाल कराली, नाम सुन भागे भूतों की नानी–परनाना *(ओझा दहाड़ता है)* बोलो तुम मुरारीलाल के बाबा परदेशीराम का प्रेत हो के नईं ?

मुरारी : *(नाक से निकली आवाज में)* हों; मैं परदेसीराम हूं। मैं मुरारीलाल लां अपन संग लै जैहों।

ओझा : देखों परदेशीराम, अब तुम्हारा इस दुनिया मे कोई काम नहीं। तुम प्रेत बइन चुके हो। तुम सीधे से मुरारी के जीव से उतर जाव, नहीं तो अभी आधा किलो लाल मिरच पिसा जा रहा है। अउर देखो ई झाड़ू *(वह बांस की सींकों का एक मजबूत झाड़ू उठाकर हवा में लहराता है)* जो मार पड़ही, जो मार पड़ही अउर आंखों में बुका हुआ मिरचा का ओंझा, के समझ लो बस. . .होश ठिकाने लग आवे। मैं कहत हों सोझ–सोझ उतर जाव. . .।

(इसी बीच मास्टर जी हाथ में कांच का एक बीकर और उसके अंदर कोई चीज लेकर आते मंच पर और एक कोने में खड़े होकर देखते हैं।)

मुरारी : मैं न मानहौं, मैं तो मुरारीलाल अपन संग लैकेई जैहो,

(ओझा मिर्च जलाता है और वहां खड़े सभी लोग खांसने–छींकने लगते हैं। खह–खंह आक छीं। ओझा झाड़ू उठाकर मुरारी पर एक भरपूर वार करता है और वह कराह उठता है. . .।)

ओझा : तू भागेगा कि नहीं बोल, नहीं तो मैं आंखों में बुकी मिर्च झोंकता हूं। ओं हीं, फट काली कलकत्ता वाली, भूतों का काल महाकाल कराली. . .।

मास्टर जी : *(घबड़ाकर रोकते हुए)* अरे, अरे, क्या कर हो, उसकी आंख फूट जाएगी। रुको रुको, मैं इसके बगैर ही उसका भूत उतार

सकता हूं।

(मास्टर जी, मुरारी के मां–बाप और बाबा की ओर मुड़ते हैं और खड़े बुजुर्गों के सामने हाथ जोड़ देते हैं।) मुझे आप लोग एक मौका दें।

(ओझा की आंखें लाल हो जाती हैं। मास्टर जी की ओर वह घूरकर देखने लगता है। उसके स्वार्थ को चोट पहुंचाने के लिए कौन आदमी आ गया है। गांव के बुजुर्ग मास्टर जी का आदर करते हैं। वे मास्टर जी की ओर मुलामियत से देखते हैं। घरवालों को ओझा की क्रूरता पर कुछ बुरा सा लगता है। वे आपस में मशविरा करते हुए दिखते हैं।)

सब लोग : मास्टर जी को पहले एक मौका दिया जाए।

मुरारी के बाबा : मास्टर जी, आप शहर के रहने वाले भूतप्रेत की ओझागिरी भला क्या जानेंगे। मगर आप कहते हैं तो. . . ।

मुरारी के पिता : हां बाबू, मास्टर जी भी एक बार कोशिश कर लें। ओझा की यह मार देखी नहीं जाती।

(मास्टर जी इन बुजुर्गों की सदाशयता का लाभ उठाकर ओझा को हाथ पकड़कर आदर से किनारे बिठाल देते हैं।)

मास्टर जी : आप यहां बैठकर उस्ताद।

(ओझा इधर–उधर देखता है, और परेशान–सा एक किनारे बैठ जाता है पर यह धमकी भी देता है . . .।

ओझा : कुछ हो गया तो हम न जाने गुरूजी ?

(मास्टर जी ओझा की ओर मुस्कराकर बात टाल जाते हैं। वे मुरारीलाल के पास जाकर प्यार से उसका सिर सहलाते हैं; मुरारी अजनबी आंखों से मास्टर जी को घूरता है।)

मास्टर जी . *(प्यार और निर्भयता से)* मुरारी बेटे। तुम स्कूल नहीं आए, तुमको

क्या हो गया बेटे ? देखो तुम्हारे दोस्त लोग खड़े हैं।

(मुरारी अस्पष्ट नकियासुर में गो गों करता है)

मास्टर जी : तुम्हें कुछ नहीं हुआ बेटे। तुम्हें गलत फहमी हो गई है। *(कुछ रुककर)* शमशान में रात को पानी पर जलने वाली आग भूत तो होता ही नहीं।

मुरारी : गों. . .गो. . . *(फिर नकियासुर में)* मैं चिंतावर हुं। मुझे क्या समझते हो, मैं तुमको भी ले जाऊगा. . .

मास्टर जी : अच्छा ले जाना भाई, पर तुम पर जो आत्मा सवार है वह चीज तुम्हें यहां भी दिखला सकता हूं।

(चारों ओर सभी उत्सुक होकर देखते हैं। बच्चे और करीब खिसक आते हैं। एक बच्चा डरकर आंखे बड़ी-बड़ी कर इधर-उधर देखने लगता है।)

मास्टर जी : *(मुरारी की मां से)* एक बड़ा-सा गंज या तसला लाओ मां जी।

मांजी : अभी लाई

(और वे तेजी से अंदर जाकर एक बड़े से गंज में पानी लेकर लौटती है और मास्टर जी के सामने रख देती है)

मास्टर जी : देखो बेटे मुरारी, इस पानी में देखो।

(मास्टर जी मां जी की ओर मुड़ते हैं।)

मास्टर जी : कमरे के दरवाजे खिड़कियां बंद कर अंधेरा करवा दीजिए मां जी।

(मास्टर जी बीकर में मिट्टी के तेल में रखे फास्फोरस के टुकड़े को निकालकर गंज के पानी में डाल देते हैं। पानी में डालते ही फास्फोरस जलने लगता है और अंधेरे में उसकी रोशनी चमक उठती है। मुरारी ने पानी पर जल उठे आग के गोले को गौर से देखना शुरू किया। चारों ओर खड़े गांव के सभी लोग आंखे फाड़कर देखने लगे। एक कोने पर बैठा ओझा भी घूर-घूर कर देखने लगा।)

मास्टर जी : यही भूत है न जो तुम पर सवार हो गया मुरारी बेटे। *(अबकी मुरारी नाक से जवाब न देकर मास्टर जी का मुंह बिटुर–बिटुर ताकने लगा है।)*

लड़कों में से एक : ये क्या चीज है मास्टर जी ?

मास्टर जी : यही तो मैं बतला रहा था बेटे कि आज तुम्हारी विज्ञान की क्लास मुरारी के यहां लगेगी। यह वही पदार्थ है जो मरे हुए जानवरों की जली हुई हड्डी में मिलता है। फास्फोरस का नाम सुना होगा तुमने। क्या संकेत है उसका ?

एक लड़का : "पी" है मास्टरजी।

मास्टर जी : तो यह फास्फोरस है। इसका ज्वलनांक कितना है, जानते हो तुम ?

दूसरा लड़का : ज्वलनांक क्या मास्टर जी ?

मास्टर जी : जिस पर कोई पदार्थ जलता है, उस ताप को ही उसका ज्वलनांक कहते हैं।

तीसरा लड़का : तीस अंश सेल्सियस मास्टर जी। फास्फोरस तीस अंश सेल्सियस पर जलता है।

एक और लड़का : गर्मी में तो ताप चालीस से पैंतालीस अंश सेल्सियस तक हो जाता है।

मास्टर जी : हां बेटे, तभी तो गर्मी में पानी का ताप चालीस–बयालीस अंश सेल्सियस होता है और उस पर शमशान की हड्डी का फॉस्फोरस जब तैरता है तो जलने लगता है।

एक लड़का : दिन में तो फिर यह रोशनी नहीं दिखाई देती होगी ?

मास्टर जी : तारे भी तो दिन में दिखलाई नहीं पड़ते बेटे। सूरज की रोशनी में इसकी रोशनी नहीं मालूम पड़ती जबकि दिन में भी यह जलता जरूर है।

मुरारी के बाबा : तो क्या मास्टर जी यह चितावर भूत नहीं है।

मास्टर जी : कतई नहीं बाबा। यह तो हमारे अंदर का संस्कारगत भय है। हम छुटपन से बच्चों को भूत–प्रेत की कहानी सुनाकर उनमें यह संस्कार डाल देते हैं। जब वे ऐसी चीजें देखते हैं तो पहले से डाली गई डर की भावना ही भूत बनकर सवार हो जाती है।

मास्टर जी : क्यों बेटे मुरारी, अब तो तुम समझ गए न कि यह भूत तुम्हारे मन का ही वहम है। तुम पहले से जानते हो कि भूत नाकियासुर में बोलता है और तुम इतना डर गए हो कि खुद ही अपने अनजाने में नकियासुर में बोलने लगे हो।

मुरारी : तो मास्टर जी, यह फास्फोरस का खेल है।

सभी लड़के : अरे यह मुरारी तो अच्छा हो गया, देखो कितना साफ बोल रहा है।

मुरारी : हां मैं बिलकुल ठीक हूं। मुझे चितावर का रहस्य मालूम हो गया है।

(मुरारी उठकर खड़ा हो गया और सभी लड़कों से खुशी–खुशी मिलने लगा। वह सहसा बोल पड़ता है।)

मुरारी : वह झाड़ूं मारने वाला ओझा कहां है ?

(ओझा इधर–उधर ताकता है। और असहाय भाव से अपनी टोकनी उठाकर एक ओर तेजी से भागता है। सभी लड़के यह देखकर तालियां पीटने लगते हैं, और खिलखिलाकर हंसते हैं।)

मास्टर जी : तो बच्चों हमारी आज की विज्ञान की क्लास खत्म। चलो चलें अब स्कूल।

तुम भी तो कर सकते हो

(वैज्ञानिक चमत्कारों पर आधारित नाटिका)

(गांव में बाजारका दृश्य--इसी बाजार में एक ओर से कुछ युवा साधु प्रवेश करते हैं. उनमें से एक साधू बाजार के बीच में पहुंचकर चारों ओर बिखरे लोगों को संबोधित करता है)

साधु : "सुनो सुनो, ऐ गांव के निवासियों सुनो"

(साधु का उद्घोष सुनकर बाजार में आ जा रहे लोग चौक कर उसे देखते हैं और उसकी बात सुनने को आतुर होते हैं)

साधू : सुनो ऐ गांव के निवासियों सुनो--तुम्हारे गांव पर निकट भविष्य में बड़ा संकट आने वाला है। यहां महामारी फैलने वाली है तुम्हारा सर्वनाश होने वाला है।

(गांव वाले भयभीत होकर एक-दूसरे को देखते हैं और कई व्यक्ति एक साथ प्रश्न करते हैं)

कोरस : "हमारा सर्वनाश क्यों होने वाला है महाराज। महामारी क्यों फैलने वाली है महाराज।"

साधु : तुम्हारे गांव के उत्तर में एक पीपल का अतिपुराना वृक्ष है उसी स्थान पर गांव के किसी मूर्ख अज्ञानी व्यक्ति ने मांस भक्षण कर उसे अपवित्र किया है इसी पर देवी माता क्रोधित हो गई हैं।

कोरस : फिर इस क्रोध से बचाव का उपाय क्या है महाराज।

साधु : तुम्हारे कल्याण के लिए मथुरापुरी से महाराज स्वामी भस्मानंद जी यहां पधारे हैं, वह उसी देवी स्थान पर बैठकर मां चण्डालिका

से तुम्हारे लिए प्रार्थना कर रहे हैं।

(साधु ऐसा कहते हुए अपने झोले में से एक चित्र निकालता है और उसे अपने चारों ओर एकत्र लोगों को दिखाते हुए कहता है)

साधु : "यह हमारे महाराज जी का चित्र है--महाराज जी इस गांव के लोगों से बहुत ही प्रसन्न हैं। कारण यह है कि कभी इस गांव के लोगों ने महाराज के गुरू का जब यहां का भ्रमण कर रहे थे बहुत आदर सत्कार किया था.

(इसके साथ ही साधू भीड़ पर नजर डालकर एक चतुर एवं संपन्न नजर आनेवाले एक व्यक्ति को अपने पास बुलाता है और कहता है)

साधु : अपने दोनों हाथ आगे बढ़ा बालक।

(व्यक्ति अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाता है लोग उत्साहपूर्वक यह दृश्य देखने लगते हैं साधू अपने हाथ में थामे अपने गुरू के चित्र को उसके हाथ पर घुमाता है चित्र से भूत भभूत निकल कर व्यक्ति के हाथ में झड़ जाती है--इस साधू के साथ आए अन्य साधू जयघोष करते हैं।)

साधुगण : श्री भस्मानंद जी महाराज की जय।

(दर्शक साधुओं को हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं भभूत ग्रहण करनेवाला व्यक्ति भभूत माथे पर लगाकर कहता है)

व्यक्ति : महाराज हमें आने वाले संकट से बचालो।

साधु : अवश्य बचोगे बालक--अवश्य बचोगे--परंतु इसके लिए तुम्हें कुछ करना होगा।

कोरस : क्या करना होगा महाराज

साधु : तुम्हें अपने गांव में अष्ट कुंडली यज्ञ करना होगा--हमारे महाराज जी मंत्रों की शक्ति से यज्ञ के हवन कुंड में अग्नि प्रज्वलित करेंगे और देवी प्रकोप को शांत करेंगे।

(गांव वाले एक दूसरे की ओर देखकर आश्चर्य से बतलाते हैं)

एक

गांव वाला : मंत्र शक्ति से अग्नि प्रज्वलित करेंगे––यह तो चमत्कार होगा।

दूसरा

गांव वाला : देखा नहीं महाराज जी के चित्र से भभूत की वर्षा हो रही थी।

सब

गांव वाले : (साधु को संबोधित कर) महाराज हम यज्ञ के लिए तैयार हैं हमें महामारी से बचाइए।

साधु : ठीक है पर इसके लिए तुम्हें बहुत रुपया पैसा खर्च करना होगा हवन के लिए पूजा पाठ के लिए सामग्री जुटानी होगी।

गांव वाले : हम तैयार हैं जो भी खर्च होगा हम करेंगे। अन्य साधु आगे आकर अपना थैला फैला देते हैं––चंदा शुरू हो जाता है।

(2)

(अष्ट कुंडली यज्ञ का विधान पूर्वक दृश्य महाराज, जी हवन कुंड के सम्मुख आसन पर विराजमान हैं उनके दोनों ओर दो शिष्य भी बैठे हैं उनके पास हवन की सामग्री रखी है––एक शिष्य यह सामग्री हवन कुंड में डाल देता है दूसरा घी का पात्र महाराज जी के सम्मुख रखता है।

आसपास का सारा प्रांगण अपार ग्रामीण जनों से भरा है. सब की दृष्टि महाराज जी, और हवन कुंड पर टिकी है :––महाराज जी आंखें बंद किए अंतर–ध्यान होने की मुद्रा में बिराजमान हैं––एक अन्य शिष्य शंखनाद करता है––महाराज जी धीरे–धीरे आंखें खोलते हैं––चारों ओर दृष्टिपात करते हैं––और ऊंचे स्वर में धारा प्रवाह मंत्रोच्चारण करते हैं।)

महाराज : महाराज जी . . . . .(मंत्रोच्चारण) . . . . ..(मंत्रोच्चारण)।

(ग्रामीणजन एक दूसरे को धक्का मुक्की करते हुए उत्सुक्तापूर्वक महाराज जी पर दृष्टि जमाए हुए है—तभी महाराज जी हवन कुंड में घी डालते हैं :—क्षण भर में हवन कुंड में अग्नि प्रज्वलित हो जाती है—आसपास खड़े महाराज के अन्य शिष्य जय घोष करते हैं।)

शिष्य गण : श्री श्री भभूतानंद जी महाराज की जय।

(दर्शक भाव विभोर महाराज जी की जयघोष करते हुए उनके चरणों पर लेट जाते हैं पैसा आभूषण कुशालतापूर्वक न्योछावर करते हैं :—ग्रामीणजनों की हलचल का दृश्य कुशलतापूर्वक दिखाया जा सकता है)

ग्रामीण–1 : आश्चर्य है जी; अद्भुत है।

ग्रामीण–2 : मंत्रों की शक्ति अपार है।

ग्रामीण–3 : सिद्ध महात्मा है जी,

ग्रामीण–4 : हमारे गांव पर आने वाला संकट टल गया।

(अचानक ही उद्घोष होता है—एक साधु ऊंची आवाज में बोलता है)

साधु : सुनो सुनो, ऐ गांव के वासियों सुनो।

(चारों ओर सन्नाटा छा जाता है लोग एक दम चुप होकर ऊधर देखने लगते हैं महाराज जी अपने आसन से उठते हैं और मंच के बीच में खड़े हो जाते हैं उनके दोनों ओर उनके अन्य शिष्य आकर पंक्ति बनाकर खड़े हो जाते हैं :—महाराज जी और उनके शिष्य अपने शरीर से लिपटी चादर उतार देते हैं चेहरों पर लगी नकली दाढ़ियां भी उतार देते हैं—और कालिज के छात्रों के रूप में सामने आते हैं। तभी महाराज बना लड़का कहता है)

महाराज लड़का : भाइयो, यह देखकर आपको आश्चर्य तो हुआ होगा पर इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है--हम तो आपको अपनी ओर से नाटक की असलियत बताते हैं।

साधु लड़का–1 : हम सब कालिज के छात्र हैं।

साधु लड़का–2 : हम आपको यह दिखाना चाहते हैं कि तंत्रमंत्र जैसी शक्ति नहीं होती है।

साधु लड़का–3 : अभी आपने मंत्रोच्चारण से अग्नि प्रज्वलित होने का जो चमत्कार देखा ऐसा चमत्कार आप स्वयं करके दिखा सकते हैं।

साधु लड़का–4 : आपमें से कोई भी एक व्यक्ति हमारे पास आ जाए।

(भीड़ से एक व्यक्ति निकल कर सामने आता है--महाराज जी बना लड़का एक पुड़िया में बंधी हवन सामग्री की शेष सामग्री उसे दिखाता है)

महाराज लड़का : देखिए इसे गौर से देखिए यह क्या है?

ग्रामीण : *(सामग्री देखते हुए)* यह हवन सामग्री है।

महाराज लड़का : *(घी का पात्र दिखाते हुए)* यह क्या है ?

ग्रामीण : *(पात्र में दृष्टि डालते हुए)* यह घी है।

महाराज लड़का : अब आप इस घी को हवन की सामग्री पर डाल दीजिए।

(ग्रामीण व्यक्ति हवन की सामग्री वाली पुड़िया को धरती पर रखता है और उस पर घी का पात्र उलट देता है देखते ही देखते हवन की सामग्री आग पकड़ लेती है--ग्रामीण स्वयं घबरा कर दो कदम पीछे हट जाता है। दर्शक भौंचक्के रह जाते हैं।

महाराज लड़का : देखा आपने, आपके ही गांव के इन सज्जन ने बिना मंत्र पढ़े हवन सामग्री में अग्नि प्रज्वलित कर दी।

कोरस : यह कैसे हुआ ? कैसे हुआ ?

महाराज लड़का : ये यह हम बताते हैं कैसे हुआ ।

(यहां गांव वालों को इसकी वैज्ञानिक प्रक्रिया समझाई जाती है)

महाराज लड़का : हमने हवन सामग्री में अवसर मिलते ही चुपके से पोटेशियम परमेगनेट मिला दी थी इसका रंग हवन सामग्री जैसा ही होता है साधारणतः इसे पहचाना नहीं जा सकता फिर ऐसे अवसर पर शंका भी कौन करता है कि सामग्री में कुछ मिला होगा––फिर इस सामग्री पर हमने घी तरह नजर आने वाला गिलीसरीन डाल दिया––गिलीसरीन डालने पर पोटेशियम में वैज्ञानिक परमेगनेट प्रक्रिया होती है आग लग आती है।

साधु लड़का–1 : देखा आपने यह सब कितनी आसानी से हो जाता है और इसे ही चमत्कारों का नाम देकर ढोंगी साधु महात्मा आपको मूर्ख बनाते हैं।

साधु लड़का–2: आपसे धन ऐंठते हैं।

साधु लड़का–3: आपको धोखा देते हैं।

महाराज लड़का : तो भाईयों अब हम सारा धन जो हमने आपसे ही एकत्र किया था हम इसे आपके ही गांव में पीने के पानी की समुचित व्यवस्था में, आपकी अनुमति से लगाना चाहते हैं।

ग्रामीण जन : स्वीकार है––स्वीकार है ।–– तुमने हमें धोखा खाने से बचाया है––दृश्य फ्रीज हो जाता है।

नोट–1. यहां यदि संभव हो तो एक गीत दिया जा सकता है। गीत का संदेश यह हो कि :

हम जान गए इस अंतर को
सच है क्या और झूठ है क्या
हम जान गए इस अन्तर को
सच को हमने जान लिया
और ढोंग को हम पहचान गए
हम अब न धोखा खाएंगे
ढोंगी को मार भगाएंगे

हम अपने हाथों से अपना
संसार नया बनाएंगे
हम जान गए—हम मान गए

(2) चित्र से भभूत झड़ने के चमत्कार की वैज्ञानिक प्रक्रिया को भी प्रेक्टिकल करके समझाया जा सकता है।
इस प्रक्रिया को देखना और समझना ग्रामीणों के लिए स्वयं में एक रोचक अनुभव हो सकता है। इस दृश्य को जिज्ञासा के साथ देखे जाने की पूरी संभावना है।

पहेलियां

1. जिसके पेट में थैली होती
जिसमें वह बच्चे रख लेता
लम्बी कूद लगाता है वह
भारत में ना पैदा होता
– कंगारू

2. टंगस्टन की पसली मेरी
बनी कांच की काया
एडिसन हैं पिता हमारे
मैंने घर चमकाया
– बल्ब

3. मैकमिलन की एक सवारी
गांव–गांव हरेक को प्यारी
– साईकिल

4. मेरी सीटी रेल इंजन सी
दाब का जादू दिखाता हूं
रहता हूं रसोई मैं
खाना मिनटों में बनाता हूं
– कुकर

5. दिन भर चलता रहता हूं
तिल भर नहीं चल पता हूं
खुद तो भूखा रहता हूं
सबको हवा खिलाता हूं
– पंखा

6. मेरे महल में दस खिड़की
उंगली डाल घुमाओ जी,
जिससे चाहे बात करो
अपना हाल सुनाओ जी
– टेलीफोन

7. एक सुनहरा चिकना पत्थर
रंग छूटे तो जाये मर
देखो तन की मूरत इसमें
पहचानो निज मन का मरमर — *आइना*

8. एक सींग की ऐसी गाय
जितना दो उतना ही खाये
खाते–खाते गाना गाए
पेट नहीं उसका भर पाए — *चक्की*

9. एक अनोखा गृह बनाया
ऊपर नींव नीचे घर छाया
बांस न बल्ली बंधन घने
कहो खुसरो घर कैसे बने — *बया का घोंसला*

10. बाल नीचे कपड़े फटे,
और मोती लिये उतार
यह आफत कैसी पड़ी,
जो नंगी कर ली नार। — *भुट्टा (मक्के)*

11. एक थाल मोतियों से भरा,
सबके सिर पर औंधा धरा,
चारों ओर वह थाली फिरे,
मोती उसके एक न गिरे। — *आकाश*

12. एक नारी को दो बालक,
दोनों का है एक ही रंग।
एक घूमे एक खड़ा रहे,
फिर, भी दोनों संग। — *चक्की के पाट*

13. दो भाई एक रंग
गहरा उनका नाता
एक बिछुड़ जाए तो
दूसरा काम नहीं आता — *जूता*

14. बचपन में रही डरी
बुढ़ापे में हुई लाल
जिसने काटा चबाया
उसे कर दूंगी बेहाल — *मिर्ची*

15. पिताजी एक डिब्बा लाए
ना कुछ खाए न कुछ पिए
कान मरोड़ो तत्काल बोले,
हर देश को सैर कराये — *रेडियो*

16. पांच अक्षरों का मेरा नाम
उल्टा सीधा एक समान — *नव जीवन विकट कवि*

17. दोनों फाड़ बराबर क्यों ?
बीच में काली टीकी क्यों ?
हाथ उठाये धमके क्यों ?
इसके अर्थ बता दे क्यों ? —*आंख*

18. एक पुरुष के हमने देखे,
छाती ऊपर दांत,
बिन मुंख के गाये रागिनी
करे रसीली बात —*हरमोनियम*

19. पहाड़ है पर पत्थर नहीं,
नदी है पर पानी नहीं,
गांव है पर बस्ती नहीं। —*मानचित्र/नक्शा*

20. आड़ी–टेढ़ी बांसुरी बजाने वाला कौन
बीबी चली मायके मनाने वाला कौन—नदी

21. दो अक्षर का मेरा नाम
खाने के आता हूं काम
खूब सलीना मेरा नाम
नाम बताओ मिले ईनाम —*सेब/आम*

22. जिसकी नाक हो इतनी लंबी

सर से लेकर पांव तलक
कान सूप से आंख जरा सी
चलता है वह धमक–धमक
जिसको देख सभी खुश होते
बतलाओ उसको क्या कहते ? –*हाथी*

23. कूबड़ टेढ़ी, गरदन टेढ़ी,
टेढ़े उसके पांव,
बड़ी पूंछ लिए फिरता है
खड़ा बबूल की छांव
जहाज कहाए रेगिस्तानी
बतलाओ है कौन सा प्राणी –*ऊंट*

24. सोने की वह नहीं
सोने की है नार
खाती–पीती कुछ नहीं
बूझो बूझनहार –*सूर्य की किरणें*

25. संध्या को पैदा हुई
आधी रात को जवान
बड़े सबेरे मर गई
घर हो गया मसान –*रात*

26. सुन्दर चमड़ी गोल शरीर
ऐसी है उसकी तकदीर
खाती है वह सौ–सौ लात
फिर भी करती हवा से बात –*फुटबाल*

27. लग–लग कहे तो ना लगे
मत लग कहे तो लग जाए –*होंठ*

28. एक कांच के गोले में
वह डाले रहता डेरा
करे रात भर काम
और सो जाता देख सवेरा –*बल्ब*

एक प्रश्न

क्यों, क्यों क्यों
समय यही है प्रश्न उठाने का---2
एक प्रश्न
एक प्रश्न, प्रति प्रश्न, बहुत प्रश्न, बहुत-बहुत प्रश्न
ब्रह्माण्ड शक्ति कौन है ? सुन्दरता किसने रची ?
एक प्रश्न, प्रति प्रश्न बहुत प्रश्न, बहुत-बहुत प्रश्न
जवाब है, यही जवाब है
मेहनत करता आदमी, इतिहास रचने वाला आदमी
जवाब है, यही जवाब है
साम्राज्यों को सभ्यताओं को, ज्ञान, विज्ञान, इतिहासों को
किन हाथों ने इन सबको रचा
जवाब है, यही जवाब है
लड़े-लड़ाई मुसीबतों से, युग-युगों से लड़ते आये,
इसी तरह से हुआ विकास, बना इतिहास
भूतकाल की अंधेरी गुहों का मानव,
सभी जगह ज्ञान ज्योति उसने जलाई,
जवाब है, यही जवाब है
दुनिया का बड़ा अजूबा ताजमहल किसने बनाया
शाहजहां ?नहीं-नहीं
हाथ जिनके कुचले, कमर झुकी चट्टानों से,
खून बहा जिनका, उसे बनाया इन हाथों ने
जवाब है, यही जवाब है
नगरों को, राष्ट्रों को, साम्राज्यों को किसने बनाया ?
राजाओं ने ? नहीं
नेताओं ने ? नहीं, नहीं,
सैनिकों ने, पेट की खातिर जंग लड़ी सैनिकों ने,
गोली खाई सीनो पे, तलवार से काटे गए
जवाब है, यही जवाब है ।

सीखो दोस्तों सीखो

सीखो दोस्तों सीखो, सीखो दोस्तो सीखो
बुनियाद से, बुनियाद से, बुनियाद से
बुनियाद से शुरूआत करो
तुमको अगुआ है बनना
अब भी नहीं है देर हुई, अगुआ तुम्हें जो है बनना
बुनियाद से, बुनियाद से, बुनियाद से
क ख ग तुम सीखो लेकिन---इतना है नहीं काफी
फिर भी सीखो जानो
हर चीज को मेरे साथी
पतवार को अपने हाथ में ले लो हो जाओ तैयार
अगुआ तुम्हें जो है बनना
सीखो दोस्तो सीखो
बहिष्कृतो तुम सीखो, ऐ बन्दी तुम सीखो
और रसोईघर की, तुम सीखो, तुम सीखो
ऐ बूढ़े तुम सीखो
पतवार को अपने हाथ में ले लो हो जाओ तैयार
अगुआ तुम्हें जो है बनना
बेघर भटकने वालों, अपना ही ग्रन्थ बनाओ
रुके हुए पानी की मछली
ज्ञान की खोज में तुम निकलो
ऐ भूखे तुम अपने लिए एक किताब की तलाश करो
अस्त्र यही एक होगा, होगा यही हथियार
पतवार को अपने हाथ में ले लो, हो जाओ तैयार
अगुआ तुम्हें जो है बनना
कभी न डरना दोस्तो, कोई सवाल उठाने से

अन्ध विश्वासों के दम पर, कभी यकीं ना करना
तुम खुद जांचकर देखो, तुम खुद जो न सीखोगे
उसे कभी जान न पाओगे
पूछो सवाल हिसाबों से, तुम्हें चुकाने हैं सारे,
हर चीज परखकर अंगुली पूछो
ये कैसे मिला, कहां से आया
अगुआ तुम्हें जो है बनना

घर की तलाश

(एक समूह में सभी पात्र मंच की एक तरफ अलग–अलग भारत का नाम लेते हैं। आवाज तेज होती जाती है। अन्त में समवेत स्वर होता है)

पहला : आर्यावर्त !
दूसरा : भारतवर्ष !
तीसरा : वेद भूमि !
चौथा : जम्बू द्वीप !
पांचवां : हिन्दुस्तान !
छठा : इन्डिका !
सातवां : इन्डिया !
आठवां : भारत खंड !
नौवा : भारत भूमि !
दसवां : भारत देश !
ग्यारहवां : भारत ! इण्डिया ! हिन्दोस्तान ! हिन्दोस्तान ! इण्डिया!

(सभी एक साथ झटके से मंच पर गिरते हैं। फिर एक करुण आलाप शुरू होता है। कुछ देर तक चलता है)

आलाप : हो वे ला हो वे लो हो वे ला खेल भैया
पहला : *(धीरे–धीरे उठता है)* गंगा !
कोरस : *(सभी लोग झुण्ड बनाते हैं)* गंगा ! गंगा ! गंगा!
दूसरा : यमुना !
तीसरा : ब्रह्मपुत्र!
चौथा : सरस्वती ! कोसी!
पांचवा : कृष्णा! कावेरी ! गोदावरी !
छठवां : गोमती! नर्मदा ! ताप्ती !
सातवां : चम्बल! झेलम! महानदी !

आठवां : सोन! सिन्धु ! स्वर्ण रेखा !

नवां : नीला! तुंगभद्रा ! भागीरथी !

सूत्रधार : गंगा–यमना–ब्रह्मपुत्र–कृष्णा–कावेरी–गंडक–सतलुज–विपासा–परयार–दामोदर–हुगली–बइगई। इतनी सारी नदियां, इतनी झीलें इतने तालाब, इतनी नहरें, सागर की असीम जलराशि। फिर भी . . . . .?

सब : सूखा ! सूखा !! सूखा !!! अकाल ! अकाल !! अकाल !!!

सूत्रधार : हां यह तो इस देश का एक रूप है। दूसरा रूप भी है, बाढ़ ! . . . . पूरा इलाका जलमग्न ! बाढ़ ! बाढ़ ! पुराने जमाने से ही इस देश में ऐसी घटनाएं होती आयी हैं। कभी सूखा ! कभी बाढ़ ! कभी अकाल ! लोगों पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है ? कभी आप लोगों ने सोचा है, नहीं । आप लोग नहीं सोचेंगे। छोड़िये इन बातों को नाटक देखने आये हैं, तो नाटक देखिये।

(समूह अपना सामान उठाकर अलाप करता हुआ चलने लगता है)

एक गायेगा: अलाप : हो वेला . . . . .गाना शुरू

कोरस : चले जा रहे हैं—चले जा रहे हैं।
कहां जा रहे हैं—
चले जा रहे हैं !
बेघर भटकने वाले । रुकेंगे कहां ये
कहां जा रहे हैं
चले जा रहे हैं . . . .
रखेंगे अपने पैर कहां ये
भूमिहीन ये ले जा रहे
विस्थापित ये कहां जा रहे, कहां जा रहे, कहां जा रहे
बाढ़ में बह गये, आ . . . .
आग में जल गये, आ . . . .
या थे ही नहीं कभी
घर इनके–4 . . . .चले जा . . .

एक व्यक्ति : *(दूर से पूछता है)* ओ . . . . कहां जा रहे हो ? . . . .

पहला : *(पंक्ति से निकलकर)* काशी . . . . .

दूसरा : बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री . . . . . .

तीसरा : पुरी, मदुरई, कांचीपुरम, तिरुपति, पलनी,

चौथा : सबरी मलैय, धर्मस्थल, उडुपी, श्री शैलम

पांचवा : काली घाट, बेलोर मठ, दक्षिणेश्वर, तारकेश्वर

छठवां : वेलूड, अलैवेडू मंत्रालय, भद्राचलम् रामेश्वरम्।

सातवां : जामा मस्जिद, अजमेर शरीफ़, बिहार शरीफ ।

आठवां : बोधगया, पारसनाथ, हरिद्वार, कामाख्या

नवां : स्वर्ण मंदिर, हेमकुण्ड साहिब, पटना साहिब, बंगला साहिब

सूत्रधार : आप लोग समझ रहे हैं—ये लोग तीर्थ करने धर्मस्थल जा रहे हैं ? नहीं ? आप लोग तो जानते हैं—इस देश में 33 करोड़ देवता हैं। इनके लिए तो आलीशान और खूबसूरत मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, और गिरजाघर बने हुए हैं। सुबह, शाम, मधुर—संगीत के साथ इनकी आरती और भोग लगते है। वहां ये घर विहीन लोग कैसे रहेंगे, वे स्थान तो देवताओं के लिए सुरक्षित हैं। हमारा देश तो महान है। यहां तस्वीर और पत्थरों के लिए सुन्दर और विशाल भवन हैं। लेकिन इन बेबस असहाय लोगों के लिए जगह ही कहां ? फिर भी पूछ लेते हैं ओ . . .कहां जा रहे हो . . . .?

पहला : मैं भगतराम हूं हुजूर ! तीन बच्चे हैं हमारे ! अपनी पत्नी के साथ बस्तर से आ रहा हूं। चार साल से लगातार सूखा पड़ा है, पानी नहीं है। कोई काम नहीं है, इसलिए भटक रहा हूं। काम ढूंढने भोपाल जा रहा हूं।

दूसरा : मेरा नाम श्रीमन्त है। पूरा मिदनापुर बाढ़ के पानी में डूब गया। घर द्वार बह गये। इसलिए चला आया हूं कलकत्ता जा रहा हूं। देखूं कोई काम मिलता है या नहीं।

तीसरा : मेरी छोटी सी खेती थी। दो बीघा जमीन में मेहनत कर हम सुख से जी रहे थे। लेकिन बीते साल अकाल पड़ा। मैंने गांव के जमींदार से कर्ज लिया, जमीन गिरवी रखनी पड़ी। जमींदार ने मेरे ऊपर इतने अत्याचार किये कि मुझे जमीन छोड़कर भागना पड़ा। इसलिए दिल्ली जा रहा हूं। वहां फैक्टरी में काम करूंगा। मेरा

घर "कुरसैला" में है। घर छोड़ते समय बहुत रोया।

चौथा : अकाल पड़ा हुजूर। हमारे इलाके में। सब कुछ बिक गया, जीने का कोई उपाय नहीं रहा। काम ढूंढ़ने बम्बई जा रहा हूं।

(सभी जाने लगते हैं)

कोरस : चले जा रहे हैं 1/2/1
रखेंगे अपने पैर कहां ये
विस्थापित ये कहां जा रहे हैं।
चले जा रहे हैं।

(कुछ लोग हाथों को जोड़कर दो–तीन झोपड़ियां बनाते हैं। कुछ लोग सोते हैं, कुछ बैठते हैं। एक के बाद एक पवन दैत्य, अग्नि दैत्य और जल दैत्य आते हैं, नृत्य करते हैं। तीनों आक्रमण करने जैसा शोर, चीख, फुसफुसाहट करते हैं, आतंकित और पीड़ित अवस्था में चिन्तित होकर सब बैठ जाते हैं . . .बाढ़ में बह गये . . . .। गाना कोरस)

सूत्रधार : पाषण युग से ही मानव के पूर्वजों ने खुले आकाश के नीचे पहाड़ों की गुहों में, वृक्षों की छाया में, मैदानों में, पत्थर, मिट्टी और लकड़ी के घर बनाकर अपने–अपने निवास बनाये। तभी से उन्हें प्रकृति के इन दैत्यों से संघर्ष करना पड़ रहा है। कभी आग की ज्वाला कभी भयंकर बाढ़ तो कभी तूफान के थपेड़ों ने इनके निवास उजाड़े। लेकिन आज विज्ञान की इतनी उन्नति हो चुकी है, यंत्र तकनीकी का इतना विकास हो चुका है, कि उन प्राकृतिक दैत्यों पर काबू पाया जा सकता है, इन्हें नियंत्रित किया जा सकता है। लेकिन इन दैत्यों को . . . .? (चुनाव रे भैयारे चुनाव रे . . . .)

(बिल्डर, पुलिस, नेता का प्रवेश । तीनों अपने गाने की प्रथम दो पंक्तियां गाते हैं अन्त में तीनों हम सबसे हैं ऊपर वाला, कहकर करते हैं––प्रस्थान)

(लोगों का झुण्ड पास आता है और नेता से अपना दुखड़ा–सुनाता है)

पहला : मुझे घर नहीं है, थोड़ी सी जमीन मिल जाती है तो अपना घर

बना लेता हुजूर।

दूसरा : हुजूर काम नहीं है, बाल बच्चे भूखे मर रहे हैं, कोई काम चाहिए।

तीसरा : मुझे कुछ कर्ज लेना है हुजूर। कुछ मदद कर दीजिए।

(नेता आश्वासन देता है, बिगुल बजाता है जे हिन्द)

(मकान तो बिल्डर बनाता है, मैं तो सरकार चलाता हूं लिखा हुआ कार्ड–बोर्ड दिखाता है)

कोरस : मैं हूं नेता मैं हूं लीडर। आसमान से उतरा हूं मैं, करने जनता का कल्याण जनता की हालत कुछ भी हो, मैं हूं तुम सबका उद्धारक। मैं हूं नेता मैं हूं लीडर।

कोरस : गाने के साथ ही तई–धिक . . . तक . . . तई धिक . . . तक तई . . . धिक . . . तक . . . तई।

(काम करने का दृश्य)

चौथा : मैं ठेकेदार का काम कर रहा हूं। ठेकेदार का भाई है न ? शहर में बिल्डर है वह।

पांचवा : ठेकेदार का भाई ?

छठा : हां, बड़ा बिल्डर है वह। शहर में चार बहुत बड़ी इमारतें बना रहा है वह।

पांचवा : चार महल शहर में ?

सातवां : हां ! सूर्य महल, जल महल, पवन महल, बन महल।

आठवां : इन महलों के बनने में बहुत मजदूरों की जरूरत है। मुझे उसमें काम मिल गया है।

नवां : उसी के पीछे झोपड़ी डालकर रहने की व्यवस्था हो जायगी।

पांचवा : महल बनने के बाद ?

छठा : देखा जायगा।

(फ्रिज वाले पुनः काम की धुन में काम करने का दृश्य कई पात्र सीढ़िया बनाते हैं जिस पर बिल्डर चढ़ जाता है कुछ लोग मजदूरी और काम मांगने के लिए एक जगह जमा होते हैं)

कोरस : मैं हूं बिल्डर भूपति––महलों का मैं राजा
पैर रखूं मैं जिस जमीन पर
हो जाऊं उसका स्वामी

महलों के हम राजा हैं,
महलों के हम राजा हैं,
हर एक शहर में हमने इतने, आसमान तक महल बनाये
फिर क्यों घर की खातिर, लोग इतना शोर मचायें।

पहला : हुजूर माई बाप मुझे काम दे दीजिए। यहां पीछे झोपड़ी डालकर रह भी जाएगें। इस शहर में हमें ठहरने की कोई जगह नहीं।

बिल्डर : यहां काम नहीं है। बम्बई में मेरा पांच सितारा महल बनेगा वहां आना। अभी फूटो यहां से।

दूसरा : तब तक हम लोगों के ठहरने के लिए कोई जगह दे दीजिए ?

बिल्डर : मैंने कह दिया ना, यहां काम खत्म हो गया। जाओ यहां से ।

(झुण्ड आपस में अस्पष्ट शब्दों में बातें करते हैं कहां जायें ? क्या करें ? थोड़ा चल कर बैठ जाते हैं . . शहर भी आवाज निकालता है, मैं बिल्डर, मैं भूपति हूं)

छठा : *(सातवें से पूछता है)* दोस्त, इस शहर में मुझे कोई अच्छा सा एक मकान चाहिए। मेरी बदली हो गयी है। मेरे चार बच्चे हैं। बीबी और बच्चों को मैंने उसी शहर में छोड़ दिया है। बच्चों की पढ़ाई अस्त–व्यस्त हो गई है। भाई यहां कई मकान देखे। रसोई घर अच्छा है तो लेटरिन ठीक नहीं है। उस मोहल्ले में घर मिला, सब ठीक था। लेकिन वहां बाजार बहुत दूर है, मैं तो परेशान हो गया हूं।

सातवां : मैं तुझे एक पता बताता हूं। बहुत अच्छा मकान है। डायनिंग हाल, बेड रूम, किचन, लैट्रीन सब ठीक है। भाड़ा भी कम है। बाजार तो बस बाहर आते मिल जाता है। चौक पर सारी चीजें मिल जायेंगी।

छठा : ऐसा ? कहां है वह ? मुझे पता बता दो भाई ।

सातवां : भारत नगर के बापू मार्ग पर सोना गाड़ी के बगल में डी/47 ब्लाक में एक मकान खाली है।

छठा : एडवांस कितना देना होगा ?

सातवां : आजकल तो जानते हो, पैसे की कीमत कितनी कम हो गई है। 5000 रुपया एडवांस होगा ?

छठा : ठीक है, लेकिन वहां से एक साल के अंदर हटना तो नहीं पड़ेगा

आजकल तो भाड़ा बढ़ाने के लिए मकान मालिक तरह–तरह के षड़यंत्र करते हैं।

सातवां : नहीं ! नहीं ! ऐसा तो कुछ नहीं है। उसका मालिक भी अच्छा आदमी है। मुझे तो सात दिन पहले मालूम हुआ है। देखो वह खाली है या किराये पर लग गया।

(मंच पर सर्किल से एक व्यक्ति कार्ड बोर्ड लेकर आता है)

सूत्रधार : मकान खाली है ! मकान खाली है !! मकान खाली है !!!

(सभी फुसफुसाहट से तेज करते हुए इसी आवाज को दोहराते हैं)

(मकान का दृश्य मकान मालिक के साथ बातचीत) (मकान नहीं मिलता है पुनः फुटपाथ पर लोगों का दृश्य)

कोरस गाना : जी रहे थे मानव प्राणी, संघर्षों की राह पर
मानव प्राणी चलते आये, क्रोध प्रकृति का सहते
छिप कर गुफाओं में, धरती की गोद में
बांधकर घर अपने, लकड़ी के और मिट्टी के . . . .
जी रहे . . . . *(पुलिस का प्रवेश)*

पुलिस : मैं हूं खाकी वर्दी वाला
फुटपाथ का समझो राजा

कोरस : मैं हूं खाकी वर्दी वाला
फुटपाथ का समझो राजा
अपने अफसर का मैं नौकर
फिर भी मालिक तुम सबका

पुलिस : मैं हूं खाकी वर्दी वाला
फुटपाथ का समझो राजा

कोरस : तू ही खाकी वर्दी वाला
फुटपाथ का समझो राजा

पुलिस : साला भाग गया। उसे मैं छोड़ूंगा नहीं । *(सर्किल में आता है)*

(झुण्ड के कुछ लोग सो जाते हैं, चौथा और पांचवां बात करते हैं)

चौथा : सो जाओ भाई जब तक पुलिस वाला आयेगा, हम एक नींद सो

लेंगे।

पांचवा : कब तक ऐसे गुजारेंगे, हम अपनी जिन्दगी ?

चौथा : अब तो फुटपाथ पर जिंदगी गुजारना सीख गये हैं। यह खुला आकाश ही हमारी छत है और यह धरती ही हमारा फर्श।

पांचवा : यहीं पकाता हूं, यहीं खाता हूं।

चौथा : यहीं सोता हूं हमारा बेटा शनीचर यहीं पैदा हुआ।

पांचवा : वह यहीं बढ़ेगा।

चौथा : हमारा कफ़न भी तो यहीं होगा।

पांचवा : हां, भाई यही तो हमारी जिन्दगी बन गई है।

चौथा : कभी हमारा भी एक छोटा सा घर था। एक बीघा जमीन थी। लेकिन कारखाना बनाने के लिए मेरी जमीन जब्त कर ली गई।

पांचवा : कब की बात है यह ?

चौथा : कुछ दिनों पहले की बात है। एक सुबह राक्षस की तरह एक मशीन जिसे बुलडोजर कहते हैं, मेरी बस्ती की तरफ दहाड़ता हुआ आया। इसके साथ लाठी धारी पुलिस और एक दण्डाधिकारी अफसर भी था। पुलिस का असफर आदेश पत्र लिये हुए था। दो घंटे का समय दिया गया। लेकिन मैंने अचानक देखा पुलिस लाठियां चला रही है लोग इधर उधर भाग रहे हैं। बुलडोजर आगे बढ़ता गया। हमारी झोंपड़ी, बस्ती ध्वस्त होती गई। *(सीटी की आवाज। दोनों जल्दी जल्दी सोते हैं। पुलिस का प्रवेश)।*

पुलिस : *(डंडा फटकारते हुए)* कौन है साला ? फुटपाथ को बाप का घर समझ लिया है। *(सबको लगाता है)* एक को पकड़ कर। साला कहां से आया ?

पहला : हुजूर माई वाप। रहने की जगह नहीं है। इसलिए सो रहा हूं।

दूसरा : कहां जाऊं सरकार। कोई घर नहीं है हमारा।

पुलिस : भाड़ में जाओ मुझे इससे क्या मतलब। मुझे सिर्फ कानून व्यवस्था से मतलब है। फूटो यहां से। भागो। चले आते हैं साले *(सभी चलने लगते हैं)*

कोरस : चले जा रहे हैं/कहां जा रहे हैं/बेघर भटकने वाले/रुकेंगे कहां ये/रखेंगे अपने पैर कहां से।

सूत्रधार : *(प्रवेश)* यह बेघर, भूमिहीन, बिना काम के लोग कहां, भटक रहे

हैं, कहां जा रहे हैं उन्हें पता नहीं है। हमारे देश के देहातों के 7 करोड़ 19 लाख लोग बेघर हैं। शहरी इलाकों में 18 लाख लोग बिना घर के हैं। यह तस्वीर तो चौथी पंचवर्षीय योजना की है। जबकि इसके बाद दो पंचवर्षीय योजनाएं और हो चुकी हैं यह संख्या इसी तरह है। जैसे भारत में लोग हस्ताक्षर करते हैं। वह साक्षर माना जाता है। वैसे ही घर के नाम पर टूटी मढैया भी यहां घर मान ली जाती है। घर की खोज में इस तरह के लोग सदियों से भटक रहे हैं, आवास के अभाव में कितने "कालीदास" कितने "रविन्द्रनाथ" कितनी "आम्रपालिकायें भूखों, प्यासे बेघर होकर, भटकते रहे। कितने वैज्ञानिक, कितने डॉक्टर, कितने कलाकार हो सकते थे। लेकिन इनको घर नहीं हैं। काम नहीं है। विकास करने का कोई भविष्य नहीं है।

कोरस : लाखों को रहने का घर भी नहीं हैं।
अभिमानी ये देश गणतंत्र का
अपना ही हिस्सा न मानेंगे हम भी
बंधे हाथ जिये हम क्यों ये जिन्दगी
ये हमसे है दुनिया। ये हमसे है दुनिया। ये हमसे है दुनिया।

विसर्जन

सूत्रधार : भाईयो और बहिनों, ये किसी देवी–देवता या ताजिये के विसर्जन की कथा नहीं है। ये एक ऐसे विसर्जन की कथा है जो हमें रोज करना पड़ता है और जो हमारे करोड़ों भाई बहिनों के लिये कष्ट का विषय बन जाता है। ये एक ऐसे विसर्जन की कथा है जिसे करने के लिए शहरों में जगह नहीं है और गांवों में सुरक्षा नहीं है। ये एक ऐसे विसर्जन की कथा है जो हमारे पानी के स्रोतों को खराब कर रहा है, सैकड़ों बीमारियां फैला रहा है।

(मंच पर हाथ में लौटा लिये हुए समूह का प्रवेश। वे मुंह से किसी रिद्म की आवाज निकालते जा रहे हैं। हाथ में लोटा थामे हुए हैं, और पेट थामते या दातून करते हुए नित्य क्रिया के लिये जा रहे हैं वे मंच के अंत तक पहुंचते हैं उसके पहले ही. . .)

सूत्रधार : भाई साहब, आप लोग कहां जा रहे हैं ?

कोरस : *(हाथ के लोटो को कंधे पर उठाकर एक साथ)* क्यों दिखता नहीं क्या ?

(कोरस रुक जाता है)

सूत्रधार : नहीं, नहीं, दिख तो रहा है, पर ये गांव के बाहर क्यों ?

एक : और कहां जाएं ?

सूत्रधार : क्यों शौचालय में क्यों नहीं जाते ?

दो : शौचालय अगर हो तभी तो जायेंगे न. . .

तीन : भाइयों हमें तो खुले में ही अच्छा लगता है. . .

चार : जहां जगह मिलती है चले जाते हैं. . .

पांच : अगर शोचालय खोजेंगे तो यहीं हो जायेगी. . .

कोरस : चलो भाईयों चलो। *(फिर सूत्रधार से) आओ तुम भी आओ (जाते हैं)*

सूत्रधार : हमारे देश में करोड़ों लोगों की सुबह इसी तरह से होती है। जहां जगह मिलती है चले जाते हैं। बेचारे करें भी क्या, शौचालय हो तब उनमें जायें। देखे ये हमारे भाई कहां चले गये ?

(कोरस का प्रवेश। लौटा लेकर थोड़ी–थोड़ी दूरी पर बैठ जाते हैं बीच–बीच में आपस में बातचीत भी करते जाते हैं)

एक : यार कल बारात में गया था पेट खराब हो गया।

दो : अपने कुएं का पानी ही खराब हो गया लगता है। मुझे तो कब्ज हो गया है।

तीन : मेरा पेट तो अक्सर खराब रहता है।

चार : वो पंचायत वालों ने कुएं की सफाई तो कराई थी. . .

पांच : *(हंसते हुए)* वैसे तो गंगा नदी की भी सफाई हो रही है उससे क्या होता है. . .

(सब हंसते हैं)

सूत्रधार : *(दर्शकों से)* जी हां आप लोगों के रहते कौन पानी साफ कर सकता है। *(फिर कोरस से मंच के एक कोने में खड़ा होकर)* भईया आप एकदम तालाब के पास बैठ जाते हैं।

एक : अरे सो क्या हुआ ? कौन दूर तक जाये।

दो : जहां साफ सुथरी जगह मिलेगी वहीं तो बैठेंगे न. . . ।

तीन : फिर कभी पानी की जरूरत पड़े तो पानी पास ही होना चाहिए।

चार : फिर ये मिट्टी में ही मिल जायेगी. . .

सूत्रधार : *(दर्शकों से)* जी नहीं, ये पूरी की पूरी मिट्टी में नहीं मिलेगी। इसमें से कुछ बहकर पास के पानी के स्रोतों में जा सकता है। उसे खराब कर सकता है। उसमें बीमारियां पैदा कर सकता है। अगर आप भी चाहे तो इतने शौचालय नहीं है फिर हमारे भाई साफ जगह या पानी की तलाश में पानी के पास जा बैठते हैं पानी खराब हो जाता है और उसके साथ आती हैं सैकड़ों बीमारियां, लेकिन एक और बात है जो इससे भी भयानक है हमारे देश में 70% महिलाओं के साथ किये जाने वाले अपराध तब होते हैं जब वे

शौचालयों के लिये जाती हैं। स्कूल की उन बच्चियों की हालत सोचिये जहां शौचालय नहीं है। क्या हमारा विज्ञान लोगों की यह समस्या हल नहीं कर सकता ?

(दृश्य बदलता है। बस स्टैंड की आवाजें, बसों के आने जाने की आवाजें लोग आ जा रहे हैं। एक भाई साहब पेशाबघर तलाश कर रहे हैं। बैचेन हैं हम उन्हें "एक" कहेंगे)

(अचानक उन्हें एक कोने में पेशाबघर दिखता है वे लगभग दौड़ कर वहां तक जाते हैं। पर पेशाबघर के अंदर नहीं जाते वहीं बाहर पेशाब करने लगते हैं। ऊपर लिखा है--देखो गधा पेशाब कर रहा है।

दो : *(पेशाब करने वाले के पीछे से)* भाई साहब, आप गधे हैं क्या ?

एक : *(पेशाब करने वाला)* क्यों तुझे नहीं दिख रहा है क्या ?

दो : आप दिख तो मुझे आदमी रहे हैं, पर ऊपर लिखा है कि देखो गधा पेशाब कर रहा है।

एक : *(पलटते हुए)* वो आपके जैसे किसी गधे ने लिखा है *(चला जाता है)*

(अब एक, दो की जगह लेता है पहले वह गधे को काटकर होशियार लिख देता है फिर जोर से पढ़ता है "देखो होशियार पेशाब कर रहा है" और फिर पेशाब करने लगता है)

तीन : *(दो से)* भाई साहब आप बड़े होशियार आदमी हैं।

दो : इसमें क्या शक है ?

तीन : तभी तो गधे की तरह यहां पेशाब कर रहे हैं।

दो : *(पलटता है)* तो कहां करें ?

तीन : क्यों पेशाबघर के अंदर नहीं जा सकते ?

दो : आओ तुम्हें पेशाबघर के अंदर ले चलता हूं।

(दो तीन को आगे-आगे धकेलता है। काफी बदबू आ रही है। तीन जाने में झिझकता है, दो उसे धकेलता है.

दो : जाइये, जाइये अंदर जाइये।

तीन : ठहरो यार, बड़ी बदबू आ रही है।

दो : आपको क्या फर्क पड़ता है। आपको तो अंदर जाने की पड़ी थी न।

(हिम्मत करके अंदर जाता है। नाक बंद करके पेशाब करता है। नाक बंद किये हुए ही बाहर आता है)

दो–तीन

और कोरस : बड़ी बदबू है, बड़ी बदबू है, बड़ी बदबू है।

सूत्रधार : जी हां, बड़ी बदबू है। क्या इसे दूर नहीं किया जा सकता ?

(रेलगाड़ी का दृश्य बनता है। गाड़ी में बहुत भीड़ है। एक पुरुष शौचालय जाने के लिये उठता है। बड़ी मुश्किल से वहा तक पहुंच पाता है। दोनों शौचालय बंद हैं)

एक : *(खटखटाता है)* अंदर कौन है, निकलिये। कितनी देर घुसे रहेंगे?

दो : *(अंदर से)* ठहरो अभी आता हूं।

(एक बेचैनी से यहां वहां घूमता है।)

एक : अरे भाई निकलिये न। नहीं तो मेरी निकल जायेगी।

दो : *(दरवाजा खोलते हुए)* जाईये, हल्ला क्यों मचा रहे हैं ?

एक : *(अंदर जाता है और तत्काल बाहर आता है)* अरे भाई साहब ये आपने प्लास्टिक की सीट पर ही कर दिया।

दो : तो और कहां करते हैं ?

एक : उसे खोल तो लिया होता ।

दो : अपने को क्या मालूम ? अपन को जहां समझ में आया वहां कर दी।

एक : तो अब इसे साफ कर जाइये।

दो : आप ही कर लीजिये।

(चला जाता है)

एक : अंदर जाता है कोई मां अपने बच्चे को वहीं विसर्जन करा गई है। एक का पैर पड़ जाता है। वह फिर बाहर आता है)

कोरस : क्यों भाइयों क्या हुआ ?

एक : अरे पूरा पैर भर गया। जाने किसने बच्चे को जमीन पर ही करवा दी।

कोरस : तो अब ?

एक : अब क्या सफाई करनी पड़ेगी।

सूत्रधार : ये हमारी आदत तो नहीं बनाती जा रही। एक काम जिसे जन सुविधाओं के स्थान पर सुचारू रूप से किया जाना चाहिये, भी क्या हम ठीक से नहीं कर सकते। पानी बहाने यानी फ्लश करने से हमारा कोई संबंध नहीं प्यार से मां बच्चे को दरवाजे पर ही बिठा देती है। और नतीजा होता है--असुविधा, गंदगी आइये इसे ठीक करें।

लड़की पढ़कर क्या करेगी ?

(स्कूल की घंटी बजती है। अभिनेताओं का शोरगुल करते हुए प्रवेश मास्टर पंचांग आता है। लड़कों को डांटता है। लड़के चुप हो जाते हैं। वन्दना गाते हैं।)

सरस्वती वन्दना *(निराला की सरस्वती वन्दना या कोई भी स्थानीय सरस्वती वन्दना)।*

वीणा वादिनी वर दे
प्रिय स्वतंत्र नव अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे। वीणा वादिनी वर दे।

(पुनः घंटी बजती है, छात्र कक्षा में प्रविष्ठ होकर बैठ जाते हैं)

पंचांग : तो अब हम पहला पाठ शुरू करते हैं।

सूत्रधार : रुकिए। मैं सुनाना चाहता हूं आपको एक लड़की की कहानी। एक सरस्वती नाम की लड़की थी।

पंचांग : इसकी बात पर ध्यान मत दो और आज का पाठ शुरू करो।

सारे लोग : दो एकम दो। दो दूनी चार।
मास्टर की छड़ी मास्टर को मार।
दो तिआ छह दो चुके आठ।
लड़के की आफत मास्टर की ठाठ।
दो पंजे दस दो छंग बारह।
खायेंगे जलेबी होंगे पौबारा।
दो सत्ते चौदह दो अट्ठे सोलह।
सबको दे रोटी ऐ मेरे मौला।

दो नाम अठारह दो धाम बीस।

पंचांग : कल लेकर आना स्कूल की फीस । *(जाता है)*

सूत्रधार : तो तुम लोग पढ़ना लिखना सीख रहे हो ?

सब : हां हम पढ़ना लिखना सीख रहे हैं।

सूत्रधार : लेकिन इस स्कूल में कोई लड़की क्यों नहीं हैं ?

सब : लड़की क्यों ? लड़की पढ़ लिखकर क्या करेगी ?

एक : चूल्हे चक्की के लिये पढ़ने की क्या जरूरत है।

दो : अरे लड़की पढ़ने लगेगी तो लोगों को प्रेम पत्र लिखेगी. . .ना बाबा ना।

तीन : लड़की पढ़ जायेगी तो धोबी का हिसाब लिखेगी। महीने का खर्च लिखेगी ?

(सब हंसते हैं)

चार : लड़की को पढ़ाओ और घर बैठे आफत बुलाओ ?

पांच : *(समझा कर)* अरे भाई पढ़ना लिखना मर्दों का काम हैं औरतों का नहीं।

छह : बैलगाड़ियों में पतवार की जरूरत नहीं होती।

सूत्रधार : लेकिन बैलगाड़ी में एक पहिया कमजोर और एक मजबूत हो तो बैलगाड़ी का क्या होगा ?

तीन : टर्र. . .टर्र. . .कुएं के मेंढक कुएं में ही भले लगते हैं भैया ? क्यों भइया

सब : टर्र. . .टर्र. . .

सूत्रधार : यही जाना है अब तक तुमने। क्या यह आजादी सिर्फ पुरुषों के ही बल पर मिली है ? क्या सारी तरक्की सिर्फ पुरुषों की देन है? तुमने क्या मीराबाई के पद नहीं सुने ? पर तुम्हारे तो भेजे में पता नहीं किस–किस ने क्या–क्या भर दिया है। मैं अब लड़कियों से ही इस बारे में बात करुंगा।

कोरस : लड़की पढ़ेगी तो आगे बढ़ेगी गाड़ी समाज की।
कहता है सूत्रधार।

पंचांग : *(प्रवेश करता है)*

झूठ–झूठ झूठ। झूठ कहता है सूत्रधार।
मार मार मार। उस पे किस्मत की मार।
झूठ झूठ झूठ। झूठ कहता है सूत्रधार *(प्रस्थान)*

(दृश्य दो)

(लड़की किताब लेकर प्रवेश करती।)

लड़की : अ से अक्षर आ से आम।
इ से इमली ई से ईख।
पढ़ना लिखना सीख।
अक्षर गढ़ना सीख।

लड़की : *(पिता से)* पिताजी पिताजी मैं पांचवी में पास हो गयी।

पिता : ठीक है ठीक है अब अपनी मां के साथ जरा घर का काम धाम सीखो।

लड़की : पिताजी मैं छठी में नाम लिखाउंगी शहर के स्कूल जाऊंगी भैया के साथ।

पिता : बस बस बहुत पढ़ लिया। गांव की बात थी सो मैंने इतना पढ़ा दिया। अब चुपचाप घर में बैठ।

(मंत्रोउच्चार की तरह)

पंचांग : लड़कियां क्यों पढ़े।

सब : क्यों पढ़े, क्यों पढ़े, क्यों पढ़े ?

पंचांग : घर से बाहर क्यों जायें लड़कियां।

सब : क्यों जायें, क्यों जायें, क्यों जायें ?

पंचांग : लड़कियां अपने हक के लिये क्यों लड़ें।

सब : क्यों लड़े, क्यों लड़े, क्यों लड़े ?

लड़की : *(मां से)* मां मैं स्कूल जा रही हूं।

मां : स्कूल ? बिल्कुल नहीं। घर का सारा काम पड़ा है यह कौन करेगा।

(किताब छीन लेती है)

(लय में)

एक : लड़की ने यौवन में पांव धरा।

सब : बन्द करो, बन्द करो, कमरे में बन्द करो।
तितली न बन जाये वो, चिड़िया न बन जाये वो।
बन्द करो, बन्द करो, पिंजरे में बन्द करो।
(सब एक के बाद एक लड़की से)

एक : अब तुम बड़ी हो गयी हो।

दो : बाहर मत जाना।

तीन : स्कूल अब भूल जाओ।

चार : लड़के वाले आयेंगे।

पांच : काम–काज सीखो अब।

छह : पराये घर जाना है।

सात : पति का वंश बढ़ाना है।

आठ : सलीके से उठो बैठो। सलीके से काम करो।

नौ : काम करो, काम करो। काम करो, काम करो।

दस : कुछ नहीं धरा है पढ़ाई लिखाई में।

ग्यारह : कुछ नहीं धरा है इस झूठी बड़ाई में।

सूत्रधार : बाहर देखो, बाहर देखो, बाहर देखो
दुनिया बहुत बड़ी है।
इस पिंजड़े से बाहर देखो, दुनिया बहुत बड़ी है।
लड़ना सीखो, भिड़ना सीखो
दुनिया बहुत बड़ी है।
जानो, अपने हक को जानो
दुनिया बहुत बड़ी है।
(लड़की फिर से किताब उठाकर पढ़ने बैठती है। एक–एक कर लोग मुखौटे लगाकर आते हैं। एक–एक बात पूछते हैं और किताब छीनकर ले जाते हैं। सरस्वती हर बार नई किताब लेकर पढ़ने बैठ जाती है।)

एक : सरस्वती तुम किताब लेकर बैठी हो और मेरी दाढ़ी बनाने की ब्लेड नहीं मिल रही है।

दो : अरे तुम पढ़ रही हो। पहले मेरे लिये चाय बना दो।

तीन : अरे पानी कौन गरम करेगा तेरा बाप। फैंक इस किताब को वरना जला दूंगा इसे।

चार : मां मुझे स्कूल को देर हो रही है पहले मुझे तैयार कर दो। मेरे जूते पालिश किये या नहीं।

सूत्रधार : सरस्वती, सरस्वती, सरस्वती
किताब मत छोड़ना सरस्वती।
अक्षर से मुंह न मोड़ना सरस्वती।

पंचांग : तुम क्यों इस लड़की को बहकाते रहते हो। अरे भाई इसका पीछा छोड़ो। पढ़ने–लिखने में कुछ नहीं धरा है। इसे अपने घर का काम धाम करने दो। इसका जन्म पढ़ने के लिए नहीं हुआ है। पढ़कर कौन सा इसे अफसर बन जाना है।

सूत्रधार : तुम कौन हो ? हर बार इसी तरह टांग अड़ाते हो। क्या तुम्हारे भेजे में भूसा भरा है।

पंचांग : अहा तुम मुझे नहीं जानते ? अरे मैं इस देश की महान प्राचीन संस्कृति का रक्षक हूं।

सूत्रधार : तुम झूठे हो, मक्कार हो और संस्कृति के बारे में अनपढ़ भी। तुम जो कुछ कह रहे हो उसका हमारी संस्कृति से कोई लेना देना नहीं। हमारे यहां तो शुरू से ही स्त्रियां ज्ञानी हुई हैं। तुमने क्या गार्गी का नाम नहीं सुना जिसने याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ किया था ?

पंचांग : ऐसी बातें मुझे मत सुनाओ। लड़कियों को पढ़ाना शास्त्र के विरुद्ध है। फिर पढ़ लिखकर भी वे क्या कर लेंगी ? क्या पुरुषों के बराबर हो जायेंगी ?

सूत्रधार : क्यों क्या आज लड़कियां डॉक्टर नहीं हैं, इन्जीनियर नहीं है, नेता नहीं हैं क्या नहीं है ? कौन सा क्षेत्र है जिसमें आज स्त्रियां काम न कर रही हों ?

पंचाग : बस बस इन बातों ने तो नष्ट कर डाला है हमारी पूरी सस्कृति को, नैतिकता और मर्दायदा को।

(पंचांग और चार–पांच पात्र लड़की को घेरते हैं, और लड़की के आस–पास पिंजरा बना लेते हैं)

पंचांग : पति को परमेश्वर मानो।

सब : मानो, मानो, मानो।

पंचांग : सास ससुर की सेवा करो।

सब : सेवा करो, सेवा करो।

पंचाग : पहले उन्हें खिलाओ बचे तो खुद खाओ।

सब : बचे तो खाओ, बचे तो खाओ

सूत्रधार : सरस्वती जिसे हम ज्ञान की देवी मानते हैं। आज वो सरस्वती पिंजरे में बन्द है। आज वही सरस्वती हमारी अज्ञानता, अंधविश्वास और रूढ़िवादिता के पिंजरे में बन्द है।

(लड़की पिंजरे से निकलने की कोशिश करती है। रोती है पिंजरा छोटा होता जाता है।)

सभी पात्र

मिलकर : *(लय में)*

कौन बनाता है यह पिंजरा जानो जानो
जानो जानो जानो।
कौन रच रहा है यह साजिश जानो जानो
जानो जानो जानो।
लय बदल कर
पढ़ना सीखो लिखना सीखो
हक की खातिर लड़ना सीखो
सीखो सीखो सीखो सीखो
तोड़ो–तोड़ो तोड़ो तोड़ो।
हाथ तुम्हारे काम सभी कुछ कर सकते हैं।
पांव तुम्हारे पर्वत–पर्वत चढ़ सकते हैं।
अबला नहीं हो सबला हो तुम।
अपनी शक्ति को पहचानो।
जानो जानो जानो जानो।

कथा ये मंगलपुर की

(घेरे में ढोल बजाता हुआ एक आदमी। दो विदूषक नाचते–मटकते हुए घेरे में चक्कर लगाते हैं। थाप पर थमते हैं)

विदूषक–1 : क्यों भैया कहां से आ रहे हो ?

विदूषक–2 : खेत से। जरा यह चिट्ठी बांच दो।

(विदूषक। चिट्ठी उलटता–पलटता है। पढ़ने का ढोंग करता है)

विदूषक–1 : चिठिया में अक्षर बड़े–बड़े हैं, पास से दिखाई नहीं देते। थोड़ी दूर ले जाओ।

(विदूषक 2 चिट्ठी पकड़कर विदूषक1 की ओर किये दूर जाता है।)

ऊं हूं, जरा पास ले आओ। अक्षर बहुत छोटे हैं। *(विदूषक 2 पास लाता है)* ऊं हूं, अक्षर बहुत टेढ़े–मेढ़े हैं।

(दर्शकों से) अगर मैं पढ़ा लिखा होता तो कितना अच्छा होता। ऐसी ढोंग की नौबत तो न आती।

विदूषक–2 : जान गए भैया, हम समझ गए। जाता हूं किसी और से पढ़वा लूंगा।

(जाने को मुड़ता है)

विदूषक–1 : *(उसे रोकते हुए)* अरे रुको रुको। इसी बात पर तुम्हें एक कथा सुनाता हूं।

विदूषक–2 : *(खुश होकर)* सत्यनारायण की।

विदूषक–1 : नारायण की नहीं, रामदीन की, मंगलपुर की।

विदूषक–2 : जल्दी सुनाओ।

विदूषक–1 : तो सुनो।

सुनो कथा रे, सुनो कथा जी
मंगलपुर की एक कथा

(गीत की पहली लाइन दुहराते हुए कोरस दो पंक्तियों में आकर आमने–सामने बैठता है। गीत जारी)

सुनो कथा रे, सुनो कथा
मंगलपुर की सुनो कथा।
रामदीन की कथा है भैया
मंगलपुर की एक कथा।
कथा हमारी कथा तुम्हारी
सबकी है बस यही कथा।
सुनो कथा रे सुनो कथा
रामदीन की सुनो कथा।
सबकी है बस यही कथा
दीन हीन की कथा
जो आखर ना सीखेगा
वो ऐसे ही खीझेगा
सुनो कथा रे सुनो कथा
मंगलपुर की एक कथा।

(रामदीन एक ओर से पढ़ते हुए आकर दोनों पंक्तियों के बीच में जाता है। एक ओर से पांच गांव वालों का खेती–बाड़ी की बातें करते प्रवेश। रामदीन को पढ़ते देखकर दबे पांव आकर उसके दोनों ओर बैठते हैं)

एक : क्यों भाई रामदीन इस बुढ़ापे में यह क्या पढ़ना लिखना सीख रहे हो ?

रामदीन : गहरी बात है बबुआ गहरी बात।

दो : तो हमें भी समझाओ न गहरी बात ?

रामदीन : बता दूं. . .?

तीन : बताओ भाई बता दो क्या है गहरी बात ?

सारे लोग : समझ पड़े कुछ हमको भी तो क्या है गहरी बात ?

रामदीन : तो सुनो, मैं ठहरा किसान।

सारे लोग : तुम ठहरे किसान और हम सब क्या राजे महाराजे हैं अरे भाई यह तो पूरा गांव जानता है कि तुम किसान हो. . .खैर आगे बोलो. . .।

रामदीन : और भैया मेरा बाप भी रहा किसान. . .*(सभी हंसते हैं)*

दो : अब मजाक–वजाक छोड़ो रामदीन. . . यह भी सबको पता है कि तुम्हारा बाप भी था किसान।

रामदीन : और मेरा बेटा. . .।

सारे लोग : *(चिढ़कर)* वह भी रहा किसान. . .।

रामदीन : नहीं–नहीं. . .मेरा बेटा तो दसवीं पास है, फौज में है।

तीन : उलझा दिया न पहेली में. . . हां भाई वो तो फौज में है।

रामदीन : एक दिन की बात है। एक दिन की बात।

सभी : एक दिन की बात है। एक दिन की बात।

कोरस–1 : क्या हुआ तुम्हारे साथ?
क्या हुआ तुम्हारे साथ ?

कोरस–2 : बोलो–बोलो रामदीन
क्या हुआ तुम्हारे साथ ?

रामदीन : हुआ जो मेरे साथ। ना हो कभी किसी के साथ।

कोरस : क्या हुआ। क्या हुआ। क्या हुआ तुम्हारे साथ ?

(रामदीन को घेरते हुए पूछते हैं। दृश्य बाजार में तब्दील। (दोनों विदूषक "सुनो कथा रे" की धुन पर नाचते हुए आते हैं।)

विदूषक–1 : एक दिन की बात है। बाजार का दिन था, कि एक आदमी ने आकर रामदीन को एक खबर दी।

विदूषक–2 : क्या खबर, कैसी खबर ?

विदूषक–1 : खबर बाद में। पहले बाजार, तो देख लो, आओ।

(बाजार आते हैं। विदूषक एक बन्दर बनाता है, विदूषक दो मदारी ढोलक पर थाप के साथ एक आदमी दौड़ता

हुआ रामदीन के घर आता है।)

आदमी : रामदीन. . . रामदीन. . .खुशखबरी है।

रामदीन : *(आता है)* कैसी खुशखबरी भाई ?

आदमी : बता दूं. . .पर पहले मिठाई खिलाओ।

रामदीन : अरे, मिठाई खिलाने को कोई मैं मना करता हूं, पर पहले बात तो मालूम हो. . .।

आदमी : अरे मैं पोस्ट ऑफिस गया था।

रामदीन : तो फिर. . . ?

आदमी : तो फिर क्या ? हेड साहब ने बताया है कि तुम्हारे बेटे ने तुम्हें पैसा भेजा है. . .जाकर पोस्ट ऑफिस से ले लो. . .।

रामदीन : *(खुश होकर)* क्या सच ? मेरे गोपाल ने पैसे भेजे हैं ? सबसे पहले हनुमान जी को परसाद चढ़ाऊंगा. . .नहीं पहले गोपाल की मेहतारी के लिए एक धोती खरीदूंगा. . .बेचारी साल भर से थेंगडे लगा लगा कर धोती पहन रही है. . .।

आदमी : और मेरी मिठाई भूल गये. . .?

रामदीन : अरे वो भी खिलाऊंगा. . .सब याद है, सब याद है. . .।

(रामदीन जाने की मुद्रा में।)

(ढोलक या टिमकी की तालबद्ध गति पर कोरस अलग अलग दिशाओं में भागने जैसी मुद्रा में, अपनी अपनी जगह पर ही)

कोरस : दौड़ता, भागता, कांपता, हांफता
रामदीन, रामदीन, रामदीन, रामदीन
पहुंचा पोस्ट आफिस पर
रामदीन, रामदीन, रामदीन, रामदीन

(कोरस एक ओर हटकर बैठ जाता है। रामदीन पोस्ट ऑफिस पहुंचता है)

क्या हुआ पोस्ट आफिस में, क्या हुआ पोस्ट आफिस में
बोलो–बोलो रामदीन, बोलो–बोलो रामदीन।

(पोस्ट मास्टर आता है। रामदीन से कागज पर अंगूठा

लगवाता है दो सौ रुपया गिनकर देता है)

पोस्ट मास्टरः *(मनीआर्डर से पढ़कर सुनाता हूं)* तुम्हारे लड़के ने लिखा है. .. .बापू और मां को मेरा प्रणाम। दो सौ रुपया भेज रहा हूं। घर के पिछवाड़े एक पक्का कमरा बनवा लेना जिससे गांव वाले वहां आकर पढ़ सकें. . .मैं हर महीने रुपया भेजता रहूंगा।

कोरस : *(लय में)* एक बरस बीत गया। एक बरस बीत गया।
हां, एक साल बीत गया।
हर महीने गोपाल ने पैसा भेजा। हर महीने गोपाल ने पैसा भेजा।
पोस्ट मास्टर ने जैसा पढ़ा, वैसा माना रामदीन।
वैसा माना रामदीन, वैसा माना रामदीन।
सच क्या है झूठ क्या ?
कैसे जाने रामदीन ? कैसे जाने रामदीन ?
अंगूठा टेक रहा रामदीन ? अंगूठा टेक रहा रामदीन।
भरोसा किया रामदीन। ठगा गया रामदीन।
ठगा गया रामदीन। ठगा गया रामदीन।
आखर न जानकर ठगा गया रामदीन।

(कोरस आमने सामने दूरी पर बैठे हुए)

कोरस–1 : एक साल बीत गया।
कोरस–2 : एक साल बीत गया।
कोरस–1 : लौटा गोपाल जब।
कोरस–2 : लौटा गोपाल जब।
कोरस–1 : छुट्टी मिली फौज से लौटा गोपाल जब ?
आदमी–1 : क्या हुआ ?
आदमी–2 : क्या हुआ ?
आदमी–3 : क्या हुआ लौटा गोपाल जब ?

(वाद्यों पर फौजी धुन। गोपाल आकर कोरस की दोनों पंक्तियों से जयहिंद करता है। मिलन भेंट। एक ओर जाकर रामदीन को आवाज देता है)

गोपाल : *(आवाज देकर)* बापू। बापू. . .।

रामदीन : *(आते हुए)* कौन ?

गोपाल : मैं, गोपाल।

(रामदीन, गोपाल कहते हुए खुशी से लिपटता है)

रामदीन : बेटा अच्छा तो है ?

गोपाल : हां बापू।

रामदीन : आने में कोई तकलीफ तो नहीं हुई ?

गोपाल : बिल्कुल नहीं, आखिर फौजी जो ठहरा। *(हंसता है)*

रामदीन : अच्छा चल नहा–धोकर खाना खा लेना। तेरी मां बहुत याद करती है

(गोपाल आगे बढ़ता है। अचानक रुककर)

गोपाल : बापू। तुमने मकान क्यों नहीं ठीक कराया ?

रामदीन : बेटा, दो सौ रुपये में मैं भला यह सब कैसे करता ?

गोपाल : दो सौ रुपया. . .अरे मैं तो तुम्हें हर महीने पांच सौ रुपया भेजता था

रामदीन : पर पोस्ट मास्टर ने तो हर बार मुझे दो सौ रुपया दिया और तुम्हारी चिट्ठी भी बांचकर सुनाई।

गोपाल : *(उग्र होकर)* उस पोस्ट मास्टर को ऐसा सबक सिखाऊंगा कि याद करेगा। *(रामदीन से स्नेह सहित)* और बापू इसीलिए तो आपसे बार–बार कहता हूं कि पढ़ना–लिखना सीखो पर. . .

रामदीन : पर बेटा मेरी उमर।

गोपाल : सीखने की कोई उम्र नहीं होती बापू। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। आप तो आज से ही शुरू कर दो, बल्कि अभी से।

रामदीन : अच्छा बस, बस। चल नहा धोकर खाना खा ले। बहुत जिद्दी हो गया है तू।

गोपाल : *(रुककर)* नहीं–नहीं। जब तक आप पढ़ेंगे नहीं, मैं खाना नहीं खाऊंगा।

रामदीन : अच्छा ठीक है बाबा। पढ़ा।

(गोपाल पुस्तक निकालकर पढ़ाता है)

गोपाल : अ आ, इ ई।

रामदीन : अ आ, इ ई।

(पांच लोग आकर रामदीन को घेरते हैं और शुरू की तरह दोनों ओर बैठ जाते हैं)

रामदीन : और भैया उस दिन से मैंने पढ़ना–लिखना शुरू कर दिया।

(सभी लोग बारी–बारी से हम भी पढ़ेंगे । हमें भी सिखाओ। हमें भी पढ़ाओ)। रामदीन पढ़ाता है। कोरस का नृत्य–गीत)

गीत : अ आ इ ई सब सीखेंगे
सब सीखेंगे सब सीखेंगे
क ख ग घ सब सीखेंगे
सब सीखेंगे सब सीखेंगे
जब सीखेंगे तभी कटेंगे सब अंधियारे
गली चौबारे, घर और द्वारे
सब के सब होंगे उजियारे।

यक्ष प्रश्न

दृश्य एक

(सघन वन, नकुल सहदेव एक शिला पर चिंतामग्न मुद्रा में बैठे हैं)

नकुल : *(सहदेव को खोजते हुए)* अरे सहदेव तुम यहां हो। किस सोच में डूबे हो ?

सहदेव : भैया, मैं सोच रहा हूं कि हमारे साथ जो रहा है, वह सब क्यों हो रहा है।

नकुल : क्या हो रहा है।

सहदेव : यही कि हम अधिकरी होते हुए भी भूख, गरीबी, अन्याय, शोषण के शिकार हो रहे हैं ऐसा क्यों ? क्या पाप किए हैं, हमने ?

नकुल : पाप । पाप कुछ भी नहीं। यह सब व्यवस्था का दोष है।

सहदेव : व्यवस्था, कैसी व्यवस्था ?

नकुल : यही कि छल, ठग, धूर्त कूटनीति, दुर्योधन, दशानन राज कर रहे हैं और हम . . . .

सहदेव : क्या हम लोग व्यवस्था को बदल नहीं सकते ?

(अर्जुन का धनुष लेकर प्रवेश)

अर्जुन : *(धनुष की प्रत्यंचा पर टंकार करते हुए)* क्यों नहीं बदल सकते। हम उसे जरूर बदल देंगे।

नकुल : लेकिन कब?

अर्जुन : जब हम संगठित होंगे क्योंकि यह समस्या अकेली नहीं है। हमारे साथ लाखों लोग हैं जो भूख, गरीबी, अत्याचार, शोषण के शिकार हैं। हमें उन सबको साथ लेकर चलना होगा।

(कन्धे पर गदा रखे हुए भीम का प्रवेश)

भीम : साथ चलने से ही काम नहीं होगा उन्हें संगठित भी करना होगा।

सहदेव : संगठन का मतलब ?

भीम : शस्त्र की शिक्षा।

(युधिष्ठिर का हाथ में पुस्तकें लेकर प्रवेश)

युधिष्ठिर: और शस्त्र से पहले शास्त्र की शिक्षा।

सहदेव : शास्त्र। शास्त्र से आपका क्या मतलब है ? क्या ज्योतिष शास्त्र, भूगोल शास्त्र, नागरिक शास्त्र ?

युधिष्ठिर: नहीं मेरे प्यारे भाई। शास्त्र का अर्थ है--साक्षरता, पढ़ना लिखना और मनुष्य होने के बोध को पहचानना।

अर्जुन : लेकिन भैया हमारे गुरू द्रोणाचार्य ने तो शास्त्र का यह अर्थ हमें कभी नहीं सिखाया।

भीम : इसलिये तो वे इसका सही अर्थ नहीं जानते अन्यथा वे दुर्योधन के साथ न होकर हमारे साथ होते।

नकुल : पीड़ित दुखी शोषितों के साथ कोई नहीं होता भैया। उन्हें अपना शास्त्र स्वयं लिखना होता है।

अर्जुन : उन्हें अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी पड़ती है।

सहदेव : लेकिन अर्जुन भैया हमारे गुरूजी ने एकलव्य का अंगूठा क्यों मांग लिया

युधिष्ठिर: इसका उत्तर मैं दूंगा--सहदेव।

(चारों भाई युधिष्ठिर की ओर देखने लगते हैं।)

युधिष्ठिर: हमारे गुरुजी स्वतंत्र नहीं है। वे कौरवों के अधीन है। कौरव नहीं चाहते कि गांव का आम आदमी पढ़े। शास्त्र की शिक्षा प्राप्त करे और उनकी बराबरी करे--लेकिन। *(थोड़ा मुस्कुराकर)* पर मुझे बड़ी तेज प्यास लगी है भाई. . .कहीं आसपास पानी होगा क्या?

भीम : मैं जाता हूं पानी की तलाश में।

सहदेव : वाह भइया आप क्यों जायेंगे ? सेवा करने का अधिकार तो मेरा है। मैं सबसे छोटा जो हूं।

युधिष्ठिर: ठीक है तब तुम जाओ और आसपास कहीं पानी हो तो शीघ्र खबर दो।

(सहदेव का प्रस्थान)

दृश्य दो

(एक सरोवर चारों ओर जंगल पहाड़)

(विस्मयपूर्वक) अरे वाह कितना सुन्दर सरोवर है। और कितना निर्मल जल है--इसका पानी। ऐसा मन करता है कि यहीं रहा जाये। जाता हूं, भाईयों को खबर देने। पहले अपनी प्यास तो बुझा लूं।

(सहदेव के सरोवर के पास जाते ही भीषण ध्वनियां होती हैं और एक ककर्श आवाज सुनाई पड़ती है। ठहरो, इस सरोवर का पानी मत छूना, मर जाओगे)

सहदेव : कौन हो तुम ? सामने आओ।

यक्ष : *(प्रकट होकर)* मैं यहां हूं। इस सरोवर का स्वामी।

सहदेव : मुझे तेज प्यास लगी है। मुझे इस सरोवर का पानी पीने दो।

यक्ष : पहले तुम्हें मेरे प्रश्नों का उत्तर देना पड़ेगा। यदि तुम्हारे उत्तर सही होंगे तभी तुम इस सरोवर के जल को पी सकते हो।

सहदेव : पूछो क्या है तुम्हारे प्रश्न ?

यक्ष : पहला प्रश्न--संसार में सबसे बड़ी सम्पदा क्या है ?

सहदेव : राज्य।

यक्ष : दूसरा प्रश्न--सबसे सुखी कौन है ?

सहदेव : जिसके पास सत्ता हो *(जो चुनाव जीत चुका हो)*

यक्ष : सबसे दुखी कौन है ?

सहदेव : जो सत्ता से हटा दिया गया हो।

यक्ष : संसार में अधिकांश लोग दुखी क्यों है ?

(सहदेव इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाता, और पानी पीने सरोवर की सीढ़ियां उतरता है, लेकिन जल को छूते ही बेहोश होकर गिर जाता है।)

दृश्य तीन

युधिष्ठिर : क्या बात है। सहदेव अभी तक नहीं लौटा।

नकुल : मैं जाकर देखता हूं।

(नकुल और यक्ष का संवाद)

यक्ष : तुम मेरे प्रश्नों का उत्तर दोगे ? तभी तुम इस सरोवर के जल को पीने के अधिकारी होंगे।

नकुल : तुम्हारे प्रश्नों की तो मैं परवाह नहीं करता, लेकिन जो तुम्हें पूछना है पूछो।

यक्ष : संसार में सबसे सुखी कौन है ?

नकुल : जिसका पेट भरा हो जिसे खाने के लिये अच्छे व्यंजन मिलें।

यक्ष : संसार में सबसे दुखी कौन ?

नकुल : जो भूखा हो।

यक्ष : लोग भूखे नंगे क्यों हैं ?

(नकुल इसका कोई उत्तर नहीं दे पाता और उसकी भी गति सहदेव जैसी ही होती है)

दृश्य चार

युधिष्ठिर: क्या बात है ? नकुल भी नहीं लौटा। कहीं किसी विपदा में न पड़ गया हो।

अर्जुन : मैं जाकर देखता हूं। भईया

युधिष्ठिर: अपना गांडीव भी साथ ले जाओ।

अर्जुन : जी भईया

(अर्जुन और यक्ष का संवाद)

यक्ष : सबसे सुखी कौन है ?

अर्जुन : जिसके पास बल हो, शांत हो, और साथ में हो दृढ़ निश्चय।

यक्ष : सबसे दुखी कौन ?

अर्जुन : दुर्बल, मनोवृत्ति वाला शक्तिहीन प्राणी।

यक्ष : लोग दुर्बल क्यों हैं?

अर्जुन : क्योंकि वे परिश्रम नहीं करते।

यक्ष : लेकिन लाखों लोग जी तोड़ परिश्रम करते हैं फिर भी वे दुर्बल है और शोषण के शिकार है क्यों ?

(अर्जुन इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दे पाता और बेहोश होकर गिर जाता है)

दृश्य पांच

युधिष्ठिर : (चिंतित स्वर में) पता नहीं अर्जुन को भी क्या हो गया ? कहीं रास्ता न भटक गया हो।

भीम : मैं जाता हूं भइया।

(भीम और यक्ष का संवाद)

यक्ष : संसार में सबसे सुखी कौन ?

भीम : जिसके पास सबसे अधिक बल हो।

यक्ष : सबसे दुखी कौन ?

भीम : सबसे दुखी बलहीन व्यक्ति।

यक्ष : बलहीन कौन है ?

भीम : खेतों में काम करने वाला किसान और कारखानों में काम करने वाला मजदूर।

यक्ष : क्यों ?

(भीम उत्तर नहीं दे पाता। अतः बेहोश होकर गिर पड़ता है)

दृश्य : छः

युधिष्ठिर: *(स्वगत)* पता नहीं क्या हो गया। भीम को भी। चारों भाई गये लेकिन एक भी नहीं लौटा। मैं जाकर देखता हूं। *(युधिष्ठिर सरोवर के पास देखता है कि चारों भाई अर्धमृत से पड़े हुये हैं)*

युधिष्ठिर: *(क्रोध से)* कौन है मेरे इन भाईयों का शत्रु सामने आये, और मुझसे युद्ध करे।

यक्ष : क्या युद्ध ही सभी प्रश्नों का समाधान है।

युधिष्ठिर: नहीं लेकिन कभी–कभी युद्ध अनिवार्यता बन जाती है।

यक्ष : युद्ध अनिवार्यता कब बनती है ?

युधिष्ठिर : अत्याचार, अनाचार, शोषण जब चरमसीमा पर पहुंच जाते हैं। और समूचे समाज तथा देश की प्रगति अवरुद्ध हो जाती है।

यक्ष : देश की प्रगति अवरुद्ध क्यों होती है ?

युधिष्ठिर: जब समाज अज्ञान के अंधकार में डूबने लग जाता है।

यक्ष : क्या ऐसा कोई उपाय है जिससे सभी समस्याओं का समाधान हो सके ?

युधिष्ठिर: अक्षर अज्ञान, क्योंकि अक्षर ही प्रकाश है, अक्षर ही जीवन है और अक्षर ही शाश्वत है। अत्याचार, अनाचार, शोषण, बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार आदि अंधेरों के राक्षस कितने ही प्रबल क्यों न हो। अक्षर रूपी प्रकाश के सामने वो सब गायब हो जाते हैं।

यक्ष : बहुत सुन्दर। युधिष्ठिर। मैं एक अभिशापित यक्ष हूं। नाना प्रकार के प्रश्नों के आहत आकुल और व्याकुल। तुमने मुझे आज प्रश्न मुक्त कर दिया। अब यह सरोवर रूपी ज्ञान वैभव एवं शांति की संपदा तुम्हारी है। केवल तुम्हारी। तुम जो भी वर मांगना चाहते हो मांग लो।

युधिष्ठिर: मेरी कामना है।
मेरा देश ज्ञान से दीपित हो।
मेरे देशवासी संपन्न सुखी हों।
शोषण, अत्याचार, भ्रष्टाचार से मुक्त हो।
हम ज्ञान का यह प्रकाश अपने भीतर जागृत करें।
उसे बाहर प्रसारित करें।

यक्ष : एवं अस्तु, एवं अस्तु एवं अस्तु।
चारों पांडव उठ खड़े होते हैं और युधिष्ठिर के साथ गाते हैं

अक्षरम् ब्रम्हः अक्षरम् विष्णु,
अक्षरम् देव महेश्वर

मुक्ति का मार्ग

(गिरधर सोते हुए अचानक जागता है और जोर जोर से रो रहा है। चारो ओर से कोरस का गाते हुए प्रवेश)

कोरस : *(गायन)*
सब : तू क्यों रोता है गिरधर ?
तू क्यों रोता है गिरधर–4
एक : क्यों गिरा है ठोकर खाकर ?
अरुणा : तू क्यों रोता है गिरधर ?
आदित्य : या साण्ड ने मारी टक्कर
तू क्यों रोता है गिरधर। *(सब गाते हैं)*
चार : क्या मार पड़ी सरकारी
या कर्ज चढ़ गया भारी
महेश : घर गिरवी आया रखकर
या उड़ा हवा में छप्पर
संध्या : गांव में पड़ गया सूखा
या सारा घर है भूखा
सब गाते हैं: क्यों कलप रहा है गिरधर
तू क्यों रोता है गिरधर
अरुणा : तुझको है किस किसका डर
सब : तू बतला हम को खुलकर
आदित्य : जो पढ़ लेता तू गाता
तो खेत ना तेरा जाता
हां फिर लाला ने लूटा
फिर छापा कहीं अंगूठा
संध्या : अब तो बतला दे खुलकर
तू क्यों रोता है गिरधर

गिरधर : मेरा जन्म यूं ही बेकार चला गया।
हे भगवान। मैं अब क्या करूं
अब मेरा क्या होगा ?

एक : अरे, बतायेगा भी क्या हो गया ?

दो : बोल तो क्या हुआ ?

गिरधर : ये पूछ के क्या नहीं हुआ
मेरा तो. . .*(सिर व छाती पीटने लगता है)*

तीन : बताना हो तो बता नहीं तो जा।

चार : तू पहले रोना तो बन्द कर।

गिरधर : क्या रोना बन्द करूं। इस सपने ने तो मेरा जीना ही हराम कर दिया।

एक : सपना। कैसा सपना ?

दो : सपना और जीना ?

तीन : लगता है इसे कुछ हो गया ?

चार : कहीं ये पागल तो नहीं हो गया ?

गिरधर : अरे, पागल ही हो जाता तो अच्छा होता।
पर इस सपने ने तो. . .।

एक : चुप। चुप हो जा. . .अब अगर एक भी लफ्ज़ बोला तो तेरे मुंह पर डाट लगा दूंगा।

दो : सीधे–सीधे क्यों नहीं बोलता. . .क्या सपना देखा ?

गिरधर : क्या बताऊं भैया मैं तो मर गया था।

एक : मर गया था. . .क्या बकता है ?

दो : तू तो जिन्दा बैठा है।

तीन : मर गया था तो फिर जिन्दा कैसे हो गया ?

चार : अरे, तुम समझे नहीं, इसका मतलब है ये सपने मैं मर गया था। क्यों ऐसा ही है ना ?

गिरधर : हां––मैं सपने में मर गया. . .मैंने देखा कि चार पाई पर मेरी लाश पड़ी है और दो यमदूत मेरी आत्मा को लेकर और ऊपर ले जा रहे थे।

एक : तो वह ऊपर हवाई जहाज से टकरा गई और तू गिर गया।

दो : क्या तेरी आत्मा घायल हो गई इसीलिये रोता है ?

तीन : दोनों यमदूत कहां चले गये. . .भाग गये ?

चार : अरे, यमलोक में कोई अस्पताल नहीं होगा।

(सब हंसते हैं)

गिरधर : यार तुम सब को मज़ाक सूझ रही है. . .और मैं फिकर के मारे पिलपिला हुआ जा रहा हूं *(सब फिर हंसते हैं)* आगे की तो सुन।

एक : हां तो आगे क्या हुआ ?

गिरधर : क्या हुआ. . .दोनों यमदूत मुझे लेकर यमलोक की तरफ उड़े जा रहे थे और मैं एकदम रुई के फायें की तरह हल्का तैरते हुए आसमान में उड़ा जा रहा था। नीचे मुझे सब कुछ दिख रहा था।

(पीछे दृश्य बनता है गिरधर दो यमदूतों के साथ आकाश में उड़ा जा रहा है। शेष पात्र उसकी यात्रा में पड़ने वाले बिम्ब बनते हैं)

गिरधर : ये गया ताजमहल, ये गया संसद भवन, ये गंगा मैया, हर हर गंगे. . . *(यमदूतों से)* किधर की तरफ ले जा रहे हो ? ये कैसा मैला है ?

यमदूत एक : हम लेट हो रहे हैं।

यमदूत दो : ठीक टाइम पर नहीं पहुंचे तो धर्मराज हमें मनुष्य बनाकर मृत्युलोक में भेज देंगे।

गिरधर : ये तो क्षिप्रा नहीं है, ओह–ये तो सिंहस्थ लग रहा है, ऋषि मुनि पधारे रहे हैं. . .अरे–मुझे कहां ले जा रहे हो ? भैया मुझे छोड़ दो मेरा तीसरा सिंहस्थ हो जाएगा. . .अहा. . .अन्नकूट चल रहा है शुद्ध घी का. . .मुफ्त का भोजन बारह साल में एक बार ही तो मुफ्त का भोजन मिलता है।

यमदूत एक : *(डांट कर)* चुप, जान निकल गई,. . .प्राण छूट गये मगर आत्मा अभी भी दुनियादारी में अटकी है।

(गीत–कालिदास की उज्जैनी को)

(चित्रगुप्त का दृश्य बनता है. . .कुछ लोग इधर–उधर बैठे हैं चित्रगुप्त को एक मक्खी तंग कर रही है। पूरे कक्ष में दौड़ रहे हैं। कक्ष के बाहर लोगों की लाइन लगी है। गिरधर सब के पीछे खड़ा है। मक्खी गिरधर की नाक पर बैठ जाती है। चित्रगुप्त मक्खी को मारता है. . .गिरधर गिर जाता है)

(यमदूत उठाता है)

चित्रगुप्त महाराज की जय हो, गिरधर हाज़िर है महाराज।

चित्रगुप्त : *नेक्सट (लोगों की लाईन आगे बढ़ती है और गिरधर चित्रगुप्त के सामने आता है)*

यमदूत एक : *(रजिस्टर आगे बढ़ाते हुए)* लो—इसमें अपनी हाज़िरी भरो, हाज़िरी समझते हो ना ? नाम. . .बाप का नाम उम्र, शिक्षा और बाकी पढ़ लेना।

गिरधर : अंगूठे से काम नहीं चलेगा साहब ?

यमदूत दो : अबे, अंगूठा दिखाता है ? तेरा अंगूठा काट कर तेरी नाक पर चिपका दूंगा। चल जल्दी से हाजिरी भर।

(गिरधर पहले पेन को उल्टा पकड़ता है। फिर सीधा पकड़कर कुछ आड़ी तिरछी लकीरें खींचता है)

यमदूत : अरे, ये क्या? ये क्या चील बिलाऊ किरम काटे खींच डाले ? चल सीधे—सीधे हिन्दी में अपना नाम लिख अंग्रेजी की औलाद।

गिरधर : मैं अपने दस्तखत ऐसे ही करता हूं साहब। वैसे मेरा नाम गिरधर है। गिरधरलाल, आप खुद ही हिन्दी में लिख लो, पूरा नाम कृष्ण मुरारी मुरलीधर नटवर नागर गिरधर लाल हमारी यशोदा जैया मैया ने हमारा यह नाम रखा था, साहब लिख लो।

यमदूत : फिर से बताओ।

(चिढ़ते हुए) एक आदमी के चार—चार नाम कहां से आए हो? उज्जैन से ? ओ—अब वहां सारे के सारे कृष्णमुरारी मुरलीधर नटवर नागर गिरधर लाल ही बसते हैं।

चित्रगुप्त : नैक्सट —

एक यमदूत : *(गिरधर से)* चलो आगे

(चित्रगुप्त और गिरधर आमने—सामने)

चित्रगुप्त : *(परची लेते हुए रजिस्टर पलटता है)* नाम ?

गिरधर : जी पूरा बताऊं या एक चौथाई ?

चित्रगुप्त : *(आंखें तानते हुए)* पूरा।

गिरधर : कृष्णमुरारी मुरलीधर नटवर नागर गिरधर लाल

चित्रगुप्त : उज्जैन से हो ?

गिरधर : जी साहब और कहां से होंगे ?

चित्रगुप्त : बहुत बक—बक करता है। ले रजिस्टर और चल धर्मराज के पास।

गिरधर : साहब. . .*(कुछ बोलना चाहता है)*

(यमराज के दरबार का दृश्य)

धर्मराज : मौन हो जा *(रजिस्टर आगे बढ़ाते हुये)* आंखे खोलकर पढ़ इसमें दो खाते हैं। एक में तेरे अच्छे कर्मों को जोखा है–सारे पुण्य जमा है। और दूसरे में तेरे बुरे कर्मों का हिसाब किताब है इन्हीं के आधार जाये स्वर्ग में या नर्क में। इस हिसाब–किताब को ध्यान से पढ़ लो और अच्छी तरह से पढ़ तो। यदि तुम्हारे हिसाब में कोई कमी हो तो तुम्हें एक अवसर दिया जाता है।

गिरधर : मैं बाहर जा कर पढ़ लूं साहब।

धर्मराज : *(हंसता है)* ठीक है, जा सकते हो।

(गिरधर परेशान सा इधर–उधर घूमता है मंच के एक ओर से एक दूत आता हुआ दिखाई देता है)

गिरधर : राम–राम पुलिस।

दूत : क्या हे बे ? *(गिरधर रजिस्टर दिखाता है)*

दूत : क्या हे ये ? ओ. . .हूं पढ़ लिया ?

गिरधर : *(नहीं की मुद्रा में गरदन हिलाता है)* पढ़ना नहीं आता।

दूत : *(इशारा करते हुए)* उधर चला जा।

(गिरधारी पास के कार्यालय में घुस जाता है)

गिरधर : राम राम हेड साहब।

दूत दो : क्यों. . .? (गिरधर रजिस्टर दिखाता है) खाता बाहर कैसे आया?

गिरधर : यमराज जी ने दिया है साहब जी, इसमें क्या लिखा है बतला दो।

दूत दो : यानि कि तुम पढ नहीं सकते ? *(डांटकर)* अनपढ़ हो ? *(हाथ पकड़कर)* चलो धर्मराज के पास। *(गिरधर को दूत धर्मराज के पास ले जाता है)*

दूत दो : *(धर्मराज से)* महाराज ये व्यक्ति अपने कर्मों के इस खाते को लेकर मेरे कार्यालय में घुस गया और बेवजह परेशान कर रहा है।

धर्मराज : क्यों, तुम अपने कर्मों का लेखा–जोखा अपने आप नहीं पढ़ सकते?

गिरधर : महाराज, असली बात ये है कि मैं अनपढ़ हूं मुझे पढ़ना–लिखना नहीं आता।

सब : अपराध, घोर अपराध

धर्मराज : *(गुस्से में)* खाता इससे ले लिया जाये।

सब : महाराज, ये अपराध नहीं पाप है, इस पापी को कठोर दण्ड दिया जाय।

धर्मराज : जरा देखें तो इसका खाता। *(एक दूत दो–तीन मीटर लंबी बही को खोलता है)*

धर्मराज : गिरधर तुम पैंतालिस बरस जिये तुमने पचास टन खाना खाया–दस हजार मटके पानी पिया–पन्द्रह साल सोये सात सौ अड़तालीस घंटे तीस मिनट सेठ साहूकारों के खातों में अंगूठा छापते रहे––दस साल तीन महीने बीमार रहे, पूरा जीवन बाप का कर्ज उतारने के लिये बन्धुवा मजदूर रहे। छःसौ बार अपमानित हुए बड़े शर्म की बात है। अपनी आयु के चार लाख घंटे में दो अक्षर भी नहीं सीख सके। *(चित्रगुप्त से)* नियम क्या कहते हैं चित्रगुप्त ? ये व्यक्ति अनपढ़ है इसका क्या किया जाय।

चित्रगुप्त : महाराज नियम के अनुसार 26 वें अध्याय के 36 वें अनुच्छेद में ना तो इसे नरक मिल सकता है और ना ही स्वर्ग। जब तक ये पढ़ लिख नहीं जाता तब तक इसकी आत्मा को मृत्यु लोक में यू ही भटकना होगा।

(गिरधर धर्मराज के पांव पकड़ लेता है)

गिरधर : ऐसा मत करो, महराज ना मैं इधर का रहूंगा और ना उधर का *(रोता है)*

धर्मराज : यदि तुम सच में लज्जित हो तो दस दिन के लिये तुम्हारे प्राण छोड़ कर वापस भेज रहा हूं।

गिरधर : महराज, एक विनती और है, मैं अपने कर्मों के खाते को अपने साथ ले जाना चाहता हूं।

धर्मराज : *(सोचकर)* ठीक है. . .दस दिन के लिये वापस जाओ।

(संगीत के साथ गिरधर का वापस आना)

गिरधर : और भैया इस तरह यमराज ने मुझे खाता देकर धरती पर दस दिन के लिये वापस भेज दिया।

(कोरस)

कोरस : अब आगे बोलो गिरधर
अब आगे बोलो गिरधर
हां–तुम खाते को लेकर
वापस लौटे धरती पर

गिरधर : कर्मों का खाता लेकर
तो लोट आया धरती पर
मैं फिर लोटा धरती पर
मैं खाते में क्या पढ़ता
मैं कदम–कदम पर अटका
मैं घर घर जाकर भटका
(दृश्य बनता है, गिरधारी भटक रहा है)
क्या लिखा है, क्या लिखा है, क्या लिखा है
कोई मुझे बता दे, इसमें क्या लिखा है

गिरधर : *(बाबू से)* बाबू जी मुझे बता दो
इस पोथी में क्या लिखा
पढ़कर मुझ को बतला दो
इसी पोथी में क्या लिक्खा–बाबूजी मुझे बता दो

बाबू : मेरी छूट जायेगी बस, जाना है मुझको दफ्तर
अगले महीने है फुरसत, आ जाना मेरे घर पर

गिरधर : बाबू, इतना समय नहीं है जल्दी जाना है ऊपर
अभी बता दो अभी बता दो
क्या लिक्खा इसके अन्दर

बाबू : किस मूरख से है पाला
मुझको भी चक्कर में डाला. . .
भाग–भाग–भाग. . .
(बाबू का प्रस्थान)

गिरधर : मैं कदम–कदम पर अटका
मैं घर घर जाकर भटका
मैं पहुंचा लाला के घर
पड़ गया वहां भी चक्कर
(मंच पर सेठ मसनद आदि लगाकर बैठे हैं)

गिरधर : लालाजी मुझे समझा दो
इस पोथी में क्या लिक्खा
पढ़कर मुझको बतला दो
इस पोथी में क्या लिक्खा
(गायन लाला का)

लाला : पोथी का नाटक मतकर
बतला दे क्या चक्कर
चाहिये क्या तुझको राशन
क्या कुनबे का है अनशन
पहले पिछला उधार चुका दे
मेरे नाम जमीन लिक्खा दे
कागज पर छाप लगा दे
तब दूंगा तुझको राशन

गिरधर : लाला ये बात नहीं है।
मेरे हाथ में ये जो नहीं है
मैं ठहरा निपट निरक्षर
पढ़ने भेजा धरती पर
लेखा है ये कर्मों का
यह लेखा जनम जनम का

लाला : तुम जा कर वापस आये यमराज से खाता लाये
वापस जा बाहर निकल
बाहर निकल बाहर निकल—भूत—भूत

(सेठ भागता है। गिरधर खाते को लेकर पीछे—पीछे दौड़ता है। मंच के एक ओर साधु ध्यान लगाये बैठे हैं।)

(तालाब में)

गिरधर : बाबा लगता है साक्षर
अब उससे पूछूं चलकर

(नौटंकी शैली में)

बाबा जी मुझे समझा दो
पढ़कर मुझको बतला दो
इस पोथी में क्या लिक्खा

(ताल में)

बाबा : पता नहीं सिंहस्थ पर्व है
सारी व्यवस्था अस्तव्यस्थ है
सभी यात्री गण भैरो जी के
चरणों में ही नत मस्तक हैं
पहले मेरे चरण धुलाओ

फल फूल और मेवा लाओ
तब बतलाऊं क्या लिखा है
पोथी में जो कुछ लिक्खा है

(गिरधर इधर–उधर घूमकर)

कोरस : पोथी पढ़वाने के चक्कर में भरमाया गिरधर
बाबू, लाला बाबाजी के पास गया, बारी बारी
किसी ने पोथी नहीं पढ़ी
सभी ने उसको दुतकारा
यहां वहां और जहां तहां
फिरता रहा मारा–मारा
ऐसे करते करते उसके
बीत गये सारे दस दिन
दुखों के मारे दस दिन
आये दूत और उठा ले गये
जा पहुंचे फिर यम के द्वार
गिरधारी जैसे लोगों की
जहां लगी थी बड़ी कतार

(यमराज के दरबार का दृश्य)

धर्मराज : (हंसकर) आओ, गिरधर। खाता पढ़वा कर लाए हो या खुद पढ़ कर आये हो *(गिरधर हाथ–जोड़कर)*

गिरधर : महाराज, ना तो किसी ने पढ़कर दिया और ना मैं खुद पढ़ सका।

धर्मराज : *(अत्यन्त क्रोध से)* चित्रगुप्त–नियम बताओ अब क्या करना होगा ?

चित्रगुप्त : महाराज, आपने इसे एक मौका दिया तब भी इसने खुद पढ़ने का प्रयत्न नहीं किया औरों पर आश्रित रहा।

धर्मराज : नियम बताओ अब क्या करना है।

चित्रगुप्त : महाराज, नियम तो अब आपके हाथ में है।

धर्मराज : *(क्रोध से खड़े होकर)* अब ना इसे स्वर्ग मिलेगा ना नरक। पृथ्वी पर, इसका शरीर भी जला दिया गया है अब चौरासी लाख योनियों में घूमना होगा इसे।

गिरधर : *(कांपते हुए पैरों में गिर जाता है)* दया करो महाराज, मुक्ति का कोई उपाय बता दीजिये महाराज।

धर्मराज : जिस जन्म में साक्षर हो जाओगे
खुद मुक्ति तुम्हें मिल जाएगी।
दूर हो जाओ यम लोक से
मृत्युलोक में भटकते रहो
(गिरधारी का प्रस्थान)

गिरधार : भैया. . .फिर. . . मेरी आत्मा. . . दरदर. . . भटकती रही. . .
एक दिन भटकते-भटकते एक सुन्दर बगीचे में पहुंचा वहां एक सुंदर बच्चा कुछ मजदूरों को पढ़ा रहा था।

कोरस : फिर तुमने भी पढ़ना लिखना सीख लिया क्या ?

गिरधर : कैसा लिखना-पढ़ना भैया, दो अक्षर भी नहीं सीख पाया था कि आंख खुल गई।

कोरस : लेकिन इसमें रोने की क्या बात है ?

गिरधर : मैं पूछता हूं, इसमें हंसने की क्या बात है ? रोने की बात इससे बड़ी क्या हो सकती है कि हम अपने पूरे जीवन दो अक्षर भी न पढ़ सके। मैं तो आज से और अभी से पढ़ाई शुरू करने का प्रण लेता हूं। और भाईयों, अरे, तुम भी मेरी बात याद रखना कि बिना
पढ़े-लिखे ये लोक
सुधरेंगे ना वा लोक
(गायन) अपढ़ धरती--सा दुःखदायी।

बिरादरी बाहर

(एक लम्बी गली से गुजरता हुआ एक जुलाहा जिसके कंधे पर दरी चादरों का गट्ठर रखा है, गली से आवाज लगाता गुजर रहा है)

जुलाहा : "दरियां लेलो–चादरें ले लो"

(आवाज सुनकर एक मकान से एक बालिका बाहर आती है)

बालिका : "दरी वाले अंकल–दरी वाले अंकल

जुलाहा : "आया बिटिया, क्या लेना है"

बालिका : "मुझे नहीं, मेरी मम्मी को चादरें, खरीदना है" तभी एक महिला उसी घर के द्वार पर आ जाती है।

महिला : "भैया कुछ चादरें दिखाओ"

जुलाहा : "हां, बहिन जी, दिखाता हूं"

(दरी वाला अपने कंधे से गठ्ठर उतार कर नीचे रखता है और अपने दूसरे कंधे पर पड़ी चादरों में से एक चादर महिला को दिखाता है)

जुलाहा : "यह देखिए बहिन जी, धागा एकदम मजबूत और रंग पक्का है"

(महिला चादर देखने में व्यस्त हो जाती है–इसी बीच बालिका जुलाहे की गठरी पर रखे अन्य चादरों को उलट पलट कर देखती है और एक चादर उठाकर कहती है।)

बालिका : "मम्मी मम्मी यह वाला देखिए"

महिला : "तू चुप कर" (महिला, बालिका को झिड़कती है)

जुलाहा : "नहीं बहन जी, उसे भी देखने दीजिए, बहुत अच्छी गुड़िया है"

(जुलाहा बालिका की ओर स्नेह से देखता है और एक अन्य चादर महिला को दिखाता है।)

जुलाहा : यह भी देखिए बहन जी, एक दम नया डिजाइन है महिला यह दूसरा चादर भी देखती है– कपड़े वाला स्नेह से बालिका के सिर पर हाथ फेरता है–बालिका उससे पूछती है।

बालिका : अंकल आपके भी कोई गुड़िया है।

जुलाहा : हां, बेटी बिल्कुल तुम्हारे जैसी"

बालिका : "मम्मी कहती है, मैं बातें बहुत करती हूं, वह भी बहुत बातें करती हैं क्या।"

जुलाहा : "हां, वह भी बहुत शरारती है, बहुत बोलती है"

बालिका : "वह भी मेरी तरह गुड़ियों से खेलती है अंकल"

जुलाहा : "हां, उसके पास बहुत अच्छी–अच्छी गुड़िया हैं"

बालिका : "वह भी स्कूल जाती है"

(जुलाहा स्तब्ध रहा जाता है, उसका उत्साह ठंडा पड़ जाता है प्रश्न संगीत की तेज ध्वनियों के साथ बार बार उसके चारों ओर से गूंजता है–दृश्य फ्रीज हो जाता है)

(एक मकान का अन्दरूनी दृश्य जुलाहा, उसकी पत्नी दो बालक और एक छोटी बालिका)

जुलाहा (इलाही) : *(अपनी पत्नी हमीदा से)* "हमीदा मैं सकीना को पढ़ाना चाहता हूं"

सकीना : "हां, हां, जरूर पढ़ाएं, अभी कल ही तो मुल्ला जी आये थे मोहल्ले के बच्चों को मदरसे में भर्ती कराने की बात कर रहे थे, चाचा चाची है।

इलाही : नहीं, मैं सकीना को स्कूल में भर्ती कराना चाहता हूं"

हमीदा : "*(आश्चर्य से)* स्कूल में !! क्या अक्ल मारी गई है तुम्हारी क्या आज तक हमारे यहां किसी ने अपनी लड़कियों को स्कूल में पढ़ने भेजा है, फिर अभी उसकी उम्र ही क्या है, वक्त

आने पर मसजिद् में भेज देंगे पढ़ने के लिए"

इलाही : नहीं, हमीदा, मैं तो स्कूल में ही पढ़ाना चाहता हूं बाकी सब कुछ तो उसे तुम घर पर पढ़ा समझा सकती हो।

इलाही : निकट ही खेलती बच्ची को गोद में उठाकर हवा में उछालता है दृश्य फ्रीज हो जाता है।

(एक मकान के प्रांगण में चार छः व्यक्ति बैठे बातें कर रहे हैं।)

पहला पुरुष : सुना है इलाही ने अपनी लड़की को पाठशाला में भर्ती करा दिया है।

दूसरा पुरुष : अजी सुना क्या है देखा है उसे अपनी आंखों से स्कूल जाते हुए।

तीसरा पुरुष : यह तो सरासर बेशरमी है वहां वह लड़कों के साथ बैठकर गंदी गंदी बातें सीखेगी।

चौथा पुरुष : यह सब रोकना पड़ेगा, मुल्लाजी साहब ऐसा न हो कि इलाही को देख कर अन्य लोग भी ऐसा ही करने लगे।

पांचवा पुरुष : मुझे तो इसमें कोई बुराई नजर नहीं आती वह कोई ऐसा काम तो नहीं कर रहा है जो दीन और मजहब के खिलाफ हो फिर हमारे यहां तो लड़कियों को भी बराबरी का हक दिया गया है इस्लाम औरतों की आजादी का हामी है।

पहला पुरुष : बात यह नहीं है साहब, बल्कि इससे दूसरों को भी राह मिलेगी जमात के उसूलों को तोड़ने की।

दूसरा पुरुष : हां, इसे रोकना पड़ेगा, वर्ना हमारे मदरसे तो वीरान हो जायेंगे। फिर हमें भी कौन पूछेगा।

तीसरा पुरुष : नहीं हम ऐसा नहीं होने देंगे, हमारे जमात में आज तक किसी लड़की को स्कूल में नहीं भेजा गया है।

चौथा पुरुष : नहीं हम ऐसा नहीं होने देंगे इलाही जमात के उसूलों को तोड़ रहा है।

सब एक साथ : हम ऐसा नहीं होने देंगे

हम ऐसा नहीं होने देंगे।

पहला पुरुष : हम इसकी शिकायत जमात के इमाम साहब से करेंगे।

दूसरा पुरुष : हम इलाही को जमात की अदालत में ले जायेंगे।

तीसरा पुरुष : हम उसे सजा दिलायेंगे।

चौथा पुरुष : हां, हम उसे सजा दिलायेंगे।

सब एक साथ : हम उसे सजा दिलायेंगे

(जमात की अदालत का दृश्य—एक बड़े प्रांगण में एक बड़ा फर्श बिछा है। फर्श पर एक सफेद चांदनी बिछी है, चांदनी पर सामने की ओर एक मौलाना बैठे हैं उनके अगल बगल दो दो अन्य मोलवी बैठे हैं इनके सामने फर्श पर कुछ ही दूरी पर एक चपरासी सिर झुकाए खड़ा है।

फर्श पर खड़े बैठे इन व्यक्तियों के चारों ओर हर आयु वर्ग की स्त्री पुरुष खड़े हैं। स्त्रियां अपने चेहरे चादरों से ढके हुए हैं।

दर्शकों की इसी भीड़ में एक ओर इलाही भी चुपचाप खड़ा है उसके हाव भाव से उसकी मन स्थिति जाहिर होती है।

चपरासी के बराबर ही एक अन्य व्यक्ति बगल में एक रजिस्टर दबाए खड़ा है—कुछ समय पश्चात यह रजिस्टर वाला व्यक्ति आगे बढ़कर मंच के मध्य बैठे मौलाना साहब के सम्मुख जाता है। अदब से सिर झुका कर उन्हें आदाब पेश करता है और उनसे अदालत की कार्यवाही प्रारंभ करने की अनुमति मांगता है।

मुहर्रर : हुजूर मुसिफे आला, इजाजत हो तो अदालत की कार्यवाही ही शुरू की जाए।

मुसिफ : हां, इजाजत है।

मुहर्रर : *(चपरासी से)* इलाही बख्श वल्द जीर बख्श, साकिन हाल मोजा

जलालाबाद को जमात की अदालत में हाजिर किया जाए।

चपरासी : भीड़ की ओर मुंह करके आवाज लगाता है।

चपरासी : इलाही बख्श, वल्द पीर बख्श जमात की अदालत में हाजिर हो।

(आवाज के साथ इलाही भीड़ में से निकल कर फर्श पर बिछी सफेद चादर पर आकर सामने बैठे मौलाओं को झुक कर सलाम करता है और फिर एक ओर हाथ बांध कर खड़ा हो जाता है। मुहीर्रर रजिस्टर खोल कर उसे देखते हुए शलामी को संबोधित करता है।)

मुहीर्रर : इलाही बख्श तुम पर इल्जाम है कि तुम ने अपने लड़की सकीना उम्र सात साल से गांव के मदरसे में दीन तालीम हासिल न करने भेजकर एक सरकारी स्कूल में जहां दीगर कौमों के लड़के भी पड़ते हैं, पढ़ने भेजकर जमात के उसूल के खिलाफ वर्जी की है? तुम जानते हो कि लड़कियों का स्कूल में पढ़ाना हमारी जमात के उसूलों के खिलाफ है. . .तुम यह भी जानते हो कि तुम्हें ऐसा करने से गांव के कुछ समझदार लोगों ने समझाया भी था मगर तुम्हें अपनी सफाई पेश करने का मौका देती है। *(भीड़ में हल चल होती है। लोगों की नजरें इलाही पर जम जाती है इलाही संभल कर अपने स्थान पर खड़ा होता है और अंदर अदालत को संबोधित करता है।)*

इलाही : हुजूर मुंसिफ साहेबान, यह सही है कि मैं अपनी लड़की को स्कूल में पढ़ने भेज रहा हूं, यह भी सही है कि वह लड़कों के साथ स्कूल में पढ़ती है मगर यह सही नहीं है कि मैं बेशरमी को बढ़ावा दे रहा हूं और मजहब के खिलाफ काम कर रहा हूं।

मुंसिफ : इलाही बख्श तुम जानते हो कि लड़कियों के लिए स्कूल की पढ़ाई की कोई जरूरत नहीं है, उनके लिए बस इतना बहुत है कि वह मदरसे में दीन की तालीम करें और चौल्हा चौके से काम रखें।

इलाही : मैं पहले इसे मानता था पर अब मैं समझता हूं कि लड़कियों को भी स्कूलों में लड़कों के साथ पढ़ने का हक है इसके बगैर वह

समाज में आगे नहीं बढ़ सकती, हम उन्हें घर में बंद करके नहीं रख सकते।

मुंसिफ–2 : तुम जानते हो ऐसा करने से क्या होगा।

मुंसिफ–3 : मदरसे वीरान हो जायेंगे।

मुंसिफ–4 : घर परिवार का ढांचा टूट जायेगा।

मुंसिफ–5 : लड़कियां पढ़ लिख जायेंगी तो घर में बच्चे कौन संभालेगा।

इलाही : हुजूर मदरसे की पढ़ाई दुनियादारी के काम नहीं आती वहां उन्हें जो कुछ पढ़ाया जाता है वह उसे समझ भी नहीं सकती। इस पढ़ाई से उन्हें बाहर की दुनियां का ज्ञान होगा।

मुंसिफ–1 : इलाही बख्श तुम्हारी बातों से साफ जाहिर होता है कि तुम अपने रास्ते से भटक गए हो।

मुंसिफ–2 : अब हम तुम्हारी कोई दलील सुनना नहीं चाहते।

मुंसिफ–3 : तुम साफ साफ बताओ कि लड़की को स्कूल में पढ़ाना बंद कराते हो या नहीं।

मुंसिफ–4 : हम तुम्हें यह भी बता दें कि जमात के उसूलों को तोड़ने की सजा क्या होती है।

मुंसिफ–5 : तुम्हें बिरादरी से बाहर कर दिया जाएगा।

(भीड़ में हलचल होती है लोग एक दूसरे से खुसर फुसर करते हैं इलाही घबराकर चारों ओर ऐसा देखता है उसमें चारों ओर से आवाज आती है।)

आवाज–1 : बिरादरी बाहर करने का मतलब जानते हो इलाही!

आवाज–2 : घर गांव में कोई तुम से संबंध नहीं रखेगा।

आवाज–3 : गांव में कोई तुम से किसी तरह का लेन देन नहीं करेगा।

आवाज–4 : तुम्हारे बाप भाई तुम से मिलना जुलना बंद कर देंगे। इलाही हर आवाज की ओर देखता जाता है आवाजें तीव्र गति से उसके कानों में पड़ती जाती है।

आवाज–1 : बिरादरी बाहर होने का मतलब है तुम संसार में अकेले रह जाओगे।

आवाज–2 : तुम्हारे लड़के–लड़कियों की कहीं शादी ब्याह तक नहीं होगा।

आवाज–3 : तुम्हारा सारा कारोबार समाप्त हो जायगा।

आवाज–4 : गांव का कोई सेठ व्यापारी तुम्हे बुनाई का कच्चा माल नहीं देगा।

आवाज–1 : तुम्हें कहीं से कर्ज नहीं मिलेगा।

आवाज–2 : गांव में हकीम वैद्य तुम्हारा इलाज नहीं करेंगे।

(एक साथ कई आवाजें)

तुम समाज में अकेले रह जाओगे

तुम समाज में अकेले रह जाओगे

(संगीत की तीव्र ध्वनियां इलाही के अंतरमन की उलझन को प्रदर्शित करती है)

अब क्या करेगा इलाही

क्या करेगा इलाही

(इलाही चारों ओर देखता है घबराता है अपने भाई को देखता है मां को देखता है पत्नी को देखता है बच्चों को देखता है)

संगीत एक दम थम जाता है चारों ओर सन्नाटा छा जाता है। मुंसिफ आला की आवाज आती है।

मुंसिफ आला: बताओ इलाही तुम्हारा फैसला क्या है

इलाही मौन खड़ा रहता है––प्रश्न फिर आता है

बताओ इलाही तुम्हारा फैसला क्या है।

(इलाही धीरे–धीरे चलता हुआ अपनी लड़की के निकट जाता है उसे गोद में उठाता है एक नजर मुंसिफों पर डालता है––एक नजर भीड़ पर डालता है और तीव्र गति से भीड़ को चीरता हुआ उस घेरे से बाहर निकल जाता है।

फंस गया बुधिया चक्कर में

(मदारी मजमे को इकट्ठा करने के लिए डमरू बजाता है)

मदारी : जमाना छान मारा है दुनिया देखी भाली है।
न कोई शाह खर्रम है, न कोई ग़म से खाली है।।

तो हिन्दू भाई को राम-राम मुसलमान को सलाम। साहेबान, मेहरबान, कदरदान, आपने भोरा सा नाटक, नौटंकी, जादू फिल्म सलीमा देखा होगा। बड़ा-बड़ा बाजीगर मदारी आपके शहर में आता है। कबूतर को मुर्गी बनाता है। नाक से पैसा निकालता है। लड़की को हवा में लटका के बताता है।

पर साहेबान आपुन कोई आलतू फालतू सड़क छाप मदारी नहीं कि खेल दिखाया पैसा बनाया और रफूचक्कर। कसम परवरदिगार की आज इस मदारी का खेल देखना मजा न आए तो हाथ उठाना, कसम खुदा की ये खानदानी पेशा बंद कर दूंगा। अच्छा लगा तो प्रेम से ताली बजाना। बोलो शंकर भगवान की जै। ये मदारी आज इस मजमे के अंदर हाथ की सफाई, बंगाल का जादू, नजरबंद और मीशमोरीजम करके बताएगा। बच्चा लोग जरा इस घेरे के बाहर अब हाथ खोलकर जोर से ताली बजाना।

(ताली बजने की आवाज)

किसी पी फकीर ने कहा है। क्या कहा है।
सांप के बच्चे से कभी प्यार न करना।
दुश्मन लाख कहे ऐतबार न करना।।

तो जमूरे चल शुरू हो जा। तू जमूरे ओए जमूरे। कहां चला गया। किधर गायब हो गया ये बस साहेबान दो मिनट के अंदर शुरू होने वाला है मेरा खेल। अबे जमूरे कहां मर गया ऐसे नहीं

आएगा। *(मंत्र पढ़ता है)*

छान–छान–छान तेलिया मशान, मेरे जमूरे को पकड़कर ले आ।
या धस धस देवी एक दो तीन।

(जमूरा तेजी से चीखता चिल्लाता है)

जमूरा : उस्ताद बचाओ–बचाओ। मैं मर गया उस्ताद बचाओ

मदारी : हूं। अब आया मजा। *(मंत्र पढ़ता है)* माफ कर जमूरे को चल दफा हो जा।

गिली–गिली–फू. . .

मदारी : क्यों बे मैं तेरे कूं घंटे भर से बुला रिया हूं। तू क्या कररिया था

जमूरा : अखबार पढ़रिया था।

मदारी : अबे अंगूठा छाप तू उस्ताद से झूठ बोलरिया है। क्यों साहेबान कोई अंगूठा छाप अखबार पढ़ सकता है क्या ?

कोरस : *(कोरस एक साथ आवाज करता है)* नहीं. . .

मदारी : नहीं न तो चल शुरू कर अपना खेल। जमूरे इधर आ।

जमूरा : *(गुस्से से)* नहीं आएगा।

मदारी : इनको देख।

जमूरा : नहीं देखेगा।

मदारी : जो पूछेगा बतायेगा।

जमूरा : नहीं बताएगा।

मदारी : *(गुस्से से डांटते हुए)* अबे चोप. . .इतनी पब्लिक के सामने बेइज्जती खराब करता है।

जमूरा : उस्ताद तुमने भी तो मेरी बेइज्जती की।

मदारी : क्यों मैं क्या बोला ?

जमूरा : अंगूठा छाप बोला।

मदारी : *(जमूरे को मक्खन बाजी करते हुए)* अच्छा मेरे बाप तू अंगूठा छाप नहीं हूं बाबू।

जमूरा : हां।

मदारी : तू कलेक्टर।

जमूरा : हां।

मदारी : तू मंत्री ।
जमूरा : हओ
मदारी : अब तो खुश।
जमूरा : खुश
मदारी : जमूरे इधर आ।
जमूरा : आ गिया।
मदारी : इनको देख।
जमूरा : देख लिया।
मदारी : जानता है ?
जमूरा : जानता है।
मदारी : जो पूछेगा, बतायेगा ?
जमूरा : बताएगा। पर उस्ताद. . .
मदारी : समझ लिया। साहेबान मेरा जमूरा बोलता आपन सब कुछ बतायेगा पर तीन चीज नहीं बताएगा।
नम्बर एक जुए सट्टे या लाटरी का नंबर।
नंबर दो कोर्ट कचहरी जमीन जायदाद का फैसला।
नंबर तीन किसी के दुश्मन का अता पता ठिकाना।
इसके अलावा मेरा जमूरा आपको सब कुछ बताएगा।
तो जमूरे सबसे पहले तो–वो मजमे में जो सबसे पीछे जो दादा खड़े है जिनके कंधे पर लाल गमछा पड़ा है। उनके बारे में सब कुछ डिटेल से बता।
जमूरा : दादा की उमर साठ साल। पांच लड़का, सात लडकी, सत्तावन नाती–पोते, रोजी–रोटी घरबार की चिन्ता। अनपढ़ अंगूठा छाप है। इसीलेए रोज ठगा जाता है। अभी ठगा जायेगा।
मदारी : कैसे ठगा जायेगा ?
जमूरा : जैसे बुधिया ठगा गया है।
मदारी : बुधिया ? कौन बुधिया।
मदारी : जेल में ?
जमूरा : हां जेल में।

मदारी : जमूरे इधर इतना पब्लिक जमा है सबको बता बुधिया कौन है और जेल में क्यों ?

जमूरा : उस्ताद पब्लिक बताने से नहीं दिखाने से समझेगा।

मदारी : मजमे में खड़े आज सभी माता–बहिन को नजर बंद और मीशमिरीजम करके बतायेगा। पर साहेबान वे बहुत ही खतरनाक खेल हैं ये मेरे जमूरे की जिन्दगी और मौत का सवाल है। खेल के बीच में कोई बात मत करना। मुट्ठी मत बंद करना वरना घर जाओगे और रात को ऐसे चिल्लाओगे जैसे थोंड़ी देर पहले मेरा जमूरा चिल्ला रिया था।

तो लीजिए मीशमिरीजम और नजरबंद का खेल आपके सामने सभी लोग जोर से ताली बजाना। (सभी ताली बजाते हैं) बोलो शंकर भगवान की जै।

(मदारी डमरू बजाता है और मंत्र पढ़ता है)

मदारी : लेके काली कलकत्ते वाली का नाम
जमूरा जाएगा शमशान।
हेइ मरदेन की जात, तेलिया मशान
काली बिल्ली लाल कबूतर।
दूध का दूध पानी का पानी. . .है गिली. . .गिली. . . फू. . .*(गंभीर संगीत के साथ दृश्य परिवर्तन होता है। कोरस मिलीजुली आवाजें करता है)*

एक : लो भइया धनीराम जी आ गए।

दो : जय हो अन्न दाता की।

तीन : बोलो धनीराम की जै।

(संगीत बजना शुरू होता है। धीरे धीरे गीत शुरू हो जाता है जिसे कोरस के सभी लोग गाते हैं)

गीत : लो आ गए आ गए धनीराम
गांव भर में है न्यारे धनीराम
पइसा के खजाने धनीराम
सबको देवे उधारी धनीराम

ब्याज हमसे वसूले धनीराम
देखत में सीधे धनीराम
पर दिल के काले धनीराम
खुद फंदी करे जेब अपनी भरे
सब करें चाकरी उनकी पूजा करें
गांव भर में पढ़े लिखे धनीराम।

बुधिया : अन्नदाता पांयलागी।

धनीराम : क्यों बुधिया ठीक तो है न।

बुधिया : दया है मालिक आपकी।

धनीराम : परसों से जनकरपुर वाले खेत की कटाई शुरू होनी है तो समय से पहुंच जाना।

बुधिया : हां मालिक पहुंच जावी। पर मालिक एक विनती है।

धनीराम : हां बोलो बोलो क्या बात है।

बुधिया : छुटकी की शादी है मालिक अगले माह। उसके लिए पैसे की जरूरत है। अब आप लोगों की मदद से ही कुछ हो पायेगा।

धनीराम : *(कुछ सोचते हुए)* पैसा. . . हां पैसा तो तुमको मिल जायेगा। मैं तुमको सरकारी कर्जा दिलवा दूंगा। हमारे परिचित के एक अधिकारी है में कल उनसे बात करूंगा। कि वो तुम्हें चार हजार रुपये का कर्ज दिलवा दें। तुम परसों आना।

बुधिया : मालिक उसके लिए करना क्या होगा। हम तो अंगूठा छाप ठहरे हमें तो उसके बारे में कुछ मालूम नहीं है।

धनीराम : तुम्हें कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। हम अधिकारी से मिलकर सब ठीक ठाक कर लेंगे। तुम परसों आ जाना बस।

बुधिया : अच्छा मालिक आपकी जय हो. . .

(कोरस द्वारा एक गीत शुरू होता है)

गीत

बुधिया सीधो रे फंस गओ चक्कर में
फंस गओ ऊ चक्कर में भइया फंस गओ ऊ चक्कर में
बुधिया सीधी रे फंस गओ ऊं चक्कर में।

अनपढ़ है ऊ दुनियादारी न जाने
मोड़ा मोड़ी ना पढ़ाए
करके मजूरी ऊ जीवन गुजारे, ऊ तो अंगूठा लगावें।
बुधिया सीधी रे. . .

(इस गीत के साथ दृश्य परिवर्तित होता है)

बुधिया : राम–राम मालिक।

धनीराम : राम–राम बुधिया ये है साहब *(मैंने तेरे बारे में इनसे बात कर ली है)* तुझे हम चार हजार रुपये का कर्ज दिलवा देंगे।

बुधिया : पर मालिक हमको करना क्या पड़ेगा।

धनीराम : साहब धनीराम को बता दीजिये कहां अंगूठा लगाना है।

साहब : सुनो बुधिया तुम्हारे सारे कागजात मैंने तैयार कर लिए हैं। तुमसे दस्तखत करते तो बनता नहीं। ऐसा करो यहां दो तीन स्थान पर अंगूठा लगा दो. . .*(कागजों पर अंगूठा लगवाता है)* हो अब तुम तुम ऐसा करो तुम्हारा ये चार हजार रुपये का चैक है मैं धनीराम को दे रहा हूं। उनके साथ किसी भी दिन जाकर बैंक से पैसे निकलवा लेना। क्यों धनीराम जी ठीक है ना।

धनीराम : बुधिया तुम कल आ जाना। हमारे साथ बैंक चलना वहां से पैसा निकलवाकर हम तुम्हें दे देंगे।

बुधिया : जैसी आपकी मर्जी (कोरस के द्वारा फिर गीत)
आरारा रा. . .आरारा. . .रा
फंस गओ बुधिया याद भइया फंस गओ बुधियार यार
लगा अंगूठा दस हजार पर पाओ चार हजार
अफसर मुखिया दोनों मिलकर लूट लओ घर वार
लगा अंगूठा दस हजार पर पाओ चार हजार।
शादी हो गई बरस बीत गओ. .

(दृश्य परिवर्तन, बुधिया का अपने घर में पत्नी से संवाद)

पत्नी : काहे. . .मोड़ी की शादी हुए तो साल भर हो गये।

बुधिया : हां पिछले साल इसी महीने में तो हुई थी शादी हां साल भर तो हो ही गए।

पत्नी : ऐसा करो बिटिया को ले आओ। बेटी सोच रही होगी कैसे मां बाप हैं। साल भर से खबर नहीं ली।

बुधिया : आज ही पंडित के यहां जा रहा हूं। कोई अच्छा दिन पूछकर चला जाऊंगा उसके यहां।

पत्नी : अरे हां मैं तो भूल ही गई गांव में मास्टर साहब आए थे उनके साथ एक दो लोग और थे, कुछ पढ़ाई लिखाई की बात कर रहे थे

बुधिया : कैसे पढ़ाई लिखाई ?

पत्नी : वो कह रहे थे गांव के सभी अनपढ़ लोगों को रात में पढ़ना लिखना सिखाया जायेगा।

बुधिया : अरे सब बेकार की बात है। भला हम लोग अब इस उम्र में पढ़ लिखकर क्या करेंगे अब तो गई बहुत रही थोडी। जैसे–जैसे ये भी कटे जायेगा।

पत्नी : अरे भई उन लोगों ने कहा था तो कह दिया। वैसे पढ़ने लिखने में बुराई ही क्या है। बूढ़े हो जायेंगे तो कम से कम रामायण तो पढ़ेंगे।

(इतने में एक व्यक्ति दरवाजे पर आकर आवाज देता है)

पुरुष : बुधिया. . .बुधिया. . .

बुधिया : राम राम भइया कहो क्या बात है।

पुरुष : तुम्हारा नाम बुधिया है ?

बुधिया : हां हमारा ही नाम बुधिया है।

पुरुष : ये लो तुम्हारे नाम एक सरकारी कागज आया है। और यहां दस्तखत कर दो।

बुधिया : दस्तखत तो हमसे बनता नहीं।

पुरुष : तो ठीक है अंगूठा लगा दो।

बुधिया : हां *(अंगूठा लगाता है)* इसको पढ़ के बता दीजिये इसमें लिखा क्या है।

पुरुष : तुमने बैंक से जो दस हजार रुपया कर्जा लिए थे। उसको चुकाने का आदेश है।

बुधिया : नहीं भाई।(चीख कर) दस हजार पर मैंने तो चार हजार लिए थे। ठीक से पढ़िए इसमें चार हजार लिखा होगा।

पुरुष : नहीं भाई इसमें दस हजार लिखा है, अच्छा हम चलते हैं।

बुधिया : *(स्वत:)* धोखे से लिख गया होगा। मालिक के पास चलते हैं वहां इसका निपटारा करेंगे।

(दृश्य परिवर्तन)

बुधिया : मालिक जै राम की।

धनीराम : कैसा आना हुआ रे।

बुधिया : मालिक आपने तो चार हजार रुपये कर्जा दिलवाए थे नये सरकारी कागज आया है इसमें तो दस हजार लिखा है।

धनीराम : *(कागज पढ़ता है)* भाई ये सरकारी मामला है। इसमें मैं कुछ नहीं कर सकता। इसमें दस हजार लिखा है तो दस हजार जमा करो।

बुधिया : पर मालिक आपके सामने मैंने अंगूठा लगाया रुपया भी मुझे चार हजार मिले थे।

धनीराम : मैं इसलिए तुम लोगों के पचड़े में नहीं पड़ता तुम यहां से जाओ अभी मुझे बहुत जरूरी काम से बाहर जाना है।

बुधिया : अरे तमाशा है क्या मैंने चार हजार लिए थे तो दस हजार कैसे दे दें। हम इतने मूर्ख नहीं है मैं कलेक्टर साहब के पास जाऊंगा। अब तो मैं उन्हीं से फरियाद करुंगा।

(दृश्य परिवर्तन)

कलेक्टर: हां तुम्हारा नाम बुधिया है।

बुधिया : हां मालिक हमी बुधिया हैं।

कलेक्टर : हां तो बोलो क्या बात है।

बुधिया : मालिक मैं पास के गांव में रहता है। लड़की शादी के लिए धनीराम मुखिया जी ने हमको बैंक से चार हजार क्या दिलवाएं पर ये वसूली का कागज आया है इसमें दस हजार लिखा है। अब हम गरीब आदमी है दस हजार कहां से दें आप कलेक्टर है आप ही कुछ कीजिए।

कलेक्टर : *(कागज देखते हुए)* भाई इसमें तो दस हजार लिखा है और तुम्हारे

अंगूठे का निशान भी लगा है। इसका मतलब है कि तुमने दस हजार रुपये लिए। मुखिया के चक्कर में तुम ठगे गए हो। चूंकि तुम्हें पढ़ना नहीं आता इसलिए। तुमने दस हजार पर अंगूठा लगाया बाकी पैसे धनीराम और दूसरे की जेब में गए। गलती धनीराम ने की लेकिन उससे ना बड़ी गलती तुम्हारी है। तुमने पढ़ाई लिखाई नहीं की तुम अनपढ़ हो। ऐसी स्थिति में मैं चाहकर भी तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता हूं। क्योंकि तुमने दस हजार पर अपना अंगूठा लगाया है। पैसे तुम्हें जमा करने पड़ेंगे।

बुधिया : *(दुखी होकर)* ठीक है मालिक चलता हूं।

(दृश्य परिवर्तन)

पत्नी : *(दुखी होकर)* क्यों क्या कहा कलेक्टर साहब ने।

बुधिया : कहेंगे क्या। उन्होंने भी वही कहा गलती तुम्हारी है तुमने अंगूठा लगाया है। पैसा जमा करो नहीं तो जेल जाऊं।

पत्नी : *(कोसते हुए)* सारी जड़ धनीराम है। उसका नाश हो भगवान उसे कभी चैन से न रहने दे।

बुधिया : उसको कोसने से क्या होगा। गलती तो हमारी ही है न । हम पढ़े लिखे होते तो देख समझकर दस्तखत करते। अब गलती हमारी है तो सजा भी हमें भुगतनी पड़ेगी ।

(उसी समय एक पुलिस वाले का आगमन)

पुलिस : बुधिया. . .बुधिया. . .

बुधिया : कौन है।

पुलिस : बाहर आओ।

बुधिया : अरे हवलदार साहब आप बैठो साहब कैसे आना हुआ।

पुलिस : चलो

बुधिया : कहां

पुलिस : थाने

बुधिया : काहे हवलदार साहब।

पुलिस : तुमने सरकारी कर्ज नहीं जमा किया तुम्हारे नाम वारंट है।

बुधिया : *(गिड़गिड़ाते हुए)* पर हवलदार साहब मेरी विनती. . .

पुलिस : जो कुछ कहना हो वहां चल के कहना चलो।

(उसकी पत्नी धीरे–धीरे रोना शुरू करती है और तेजी से रोने लगती है।)

गीत

बुधिया खा सजा भई रे. . .
सजा भई रे रहो अनपढ़ जाई अपराध रे. . .
बुधवा खा रे. . .

(मदारी डमरू बजाते हुए आगमन)

मदारी : बोलो शंकर भगवान की जै। साहेबान हमारा खेल यही खत्म होता है। साहेबान आप सोच रिया होगा कि थोड़ी देर बाद मेरा जमूरा आपके पास झोली फैला के आयेगा आप से पांच पैसे दस पैसे रुपया दो रुपया मागेगा पर साहेबान नहीं मेरा जमूरा पैसा नहीं मागेगा। पर साहेबान किसी भी साहेबान ने पढ़ने लिखने के बारे में सोच लिया तो अपुन समझेगा कि अपना पैसा वसूल हो गया।

जन्मदिन

बाल कविता

अम्मा ! आज जन्मदिन मेरा मैं तो खुशी मनाऊंगा।
केक–वेक कुछ नहीं काटूंगा, मैं तो पेड़ लगाऊंगा।

वर्षा में हैं पेड़ सहायक
गंदी हवा साफ करते हैं।
रोटी कपड़ा सब कुछ इनसे
फल फूल ये ही देते हैं।
लकड़ी कागज इनसे मिलता
प्रकृति का पोषण करते हैं।
जड़ी बूटियां इनसे आती
हमारा स्वास्थ्य ठीक रखते हैं।

पेड़ हमारे सच्चे साथी, इनको खूब उगाऊंगा।
केक–वेक कुछ नहीं काटूंगा मैं तो पेड़ लगाऊंगा।

कितना अच्छा होगा वह दिन
फिर से जन्मदिन जब आयेगा।
मेरे साथ–साथ ये मेरा
पेड़ बड़ा हो जायेगा।
बहुत सारे मेहमान आयेगें
न्यौता दुंगा गांव में।
सारे लोग इकट्ठे होकर
बैठेंगे इसकी छांव में।

इसी पेड़ के फल फिर अम्मा मैं सबको खिलवाऊंगा।
केक–वेक कुछ नहीं काटूंगा मैं तो पेड़ लगाऊंगा।

कर–मर–कर पत्ते बोलेंगे
हहर हहर कर हवा चलेगी।
चीं चींकर चिड़ियां चिहुकेंगी
कूं–कूं कर कोयल कूकेगी।
संगीत का आनंद मिलेगा
जब यह स्वर लहरी फूटेगी।
मेरे मित्रों की टोली तब
उछल कूदकर नाच उठेगी।
इसी तरह प्रकृति मां के साथ खुशी मनाऊंगा।
केक–वेक कुछ नहीं काटूंगा मैं तो पेड़ लगाऊंगा।

जन्मदिन आने पर हम बच्चे
कुछ तो ऐसा काम करें।
समाज का कल्याण हो और
प्रकृति संतुलन बना रहे
पेड़ लगायें हरियाली बढ़ायें
सोखता बनायें, सफाई करें।
स्मरणीय बने जन्मदिन अपना
कुछ ऐसा प्रयास करें।
ऐसा सन्देश मैं अपने सब मित्रों में फैलाऊंगा।
केक–वेक कुछ नहीं काटूंगा मैं तो पेड़ लगाऊंगा।

अन्त्याक्षरी खेल

नित्य प्रति दातून जो करते
दांतों को हैं साफ रखते।
दातून-फल, सब्जी, चबा चबाकर
दांतों का व्यायाम करते।
स्वस्थ रहेंगे दांत तब उनके।
सेवा करेंगे शरीर की उनके।

ओ अम्मा ! तुम क्या करती हो,
सब्जियों को तुम क्यों छीलती हो।
छिलकों में हैं खनिज–विटामिन
उन्हें छीलकर क्यों फैंकती हो।
उबालकर पालक मैथी को
निचोड़कर पानी, क्यों फैकती हो।

हवा न लगने दें भोजन को
खुले बर्तन में खाना पकवाकर
बचाओ पौष्टिक तत्वों को तुम
प्रेशरकुकर में खाना पकाकर।
नष्ट न होने दो उन सबको
तेज आंच और हवा लगाकर

रोज सुबह नाश्ते में तुम
अंकुरित चने और गेहूं खा लो।
मौसमी फल दलिया और दूध
ऐसी पौष्टिक चीजें ले लो।
बिस्किट, हलवा, पकोड़े चाय।
पर्याप्त पौष्टिकता इनमें नाप।

पर्यावरण

गांव–गांव में अलख जगाओ।
बच्चे बड़े सब पेड़ लगाओ।
वृक्ष हमारे सच्चे साथी
इन के उनका वंश बढ़ाओ।
ये हानिकर गैसें पीते हैं।
प्राणवायु हमको देते हैं।

हैं वायु की छलनी वृक्ष
भूमि को पकड़े रहते हैं।
उर्वरा शक्ति इनसे बढ़ती
मिट्टी को न बहने देते हैं।
रोटी कपड़ा फल ये देते।
लिखने को कागज ये देते।

तटवर्ती क्षेत्रों में नदियों के
यदि पेड़ बहुत से होंगे।
जल–ग्रहयता बढ़ेगी मिट्टी की
और लाभ बहुत से होंगे।
बाढ़ का खतरा कम कुछ होगा।
मिट्टी कटाव नहीं फिर होगा।

गर्मी-सर्दी सन्तुलित रहती
वर्षा में सहायता करते हैं।
अनगिन चीजें बनाने हेतु
लकड़ी ईंधन पत्ते देते हैं।
आवश्यकता सबकी पूरी करते हैं।
जीवों को जीवन देते हैं।